शीशों का मसीहा

हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट (बम्बई) एक साहित्यिक संस्था है जिसका उद्देश्य व्यापार नहीं है और जिसके सब खर्चे निजी अनुदान से पूरे किए जाते हैं। इस संस्था द्वारा में हिन्दी, उर्दू और फारसी के उच्चकोटि के कवियों का [illegible] और नागरी लिपि में एक साथ प्रकाशित किया जाता है। आधुनिक साहित्य भी इस संस्था का एक आवश्यक विभाग है। हिन्दी और उर्दू पढ़ने और बोलने वालों के बीच भावनात्मक एकता पैदा करना और पढ़ाई के स्तर को ऊँचा करना हिंदुस्तानी बुक ट्रस्ट के उद्देश्यों में शामिल हैं।

●

●

संपादक
डॉ० मु[illegible]
[illegible] आगरा

●

शीशों का मसीहा

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'



हिंदुस्तानी बुक ट्रस्ट, बम्बई
की ओर से
राजकमल प्रकाशन

प्रथम संस्करण, १९६९

•

प्रकाशक
हिंदुस्तानी बुक ट्रस्ट,
२०, खेतान भवन जे० टाटा रोड,
बम्बई १ की ओर से
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
८, फैज बाज़ार दिल्ली ६

•

मूल्य रु० ~~——~~

मुद्रक
नवीन प्रेस, दिल्ली-६

फ़ैज़

—अज फ़ैज

अपने बारे मे बातें करने से मुझे सख्त वहशत होती है, इसलिए कि सब 'बोर' लोगो का मरगूब शगल[1] यही है। इस अंग्रेजी लफ्ज़ के के लिए मआ'जरत[2] चाहता हूँ लेकिन अब तो हमारे यहाँ इसके मुश्तिकात[3] 'बोरियत' वगैरह भी इस्ते'माल मे आने लगे हैं, इसे अब उर्दू रोजमर्रा मे शामिल समझना चाहिये। तो मैं यह कह रहा था कि मुझे अपने बारे में कील आ काल[4] बुरी लगती है। बल्कि मैं तो शे'र मे भी हत्ती-उल इमकान[5] वाहिदे मुतकल्लिम का सीग[6] इस्तेमाल नही करता और 'मैं' के बजाय हमेशा से 'हम' लिखता आया हूँ। चुनाचे जब अदबी सुरागरसा हजरात मुझसे यह पूछने बैठते हैं कि तुम शे'र क्यो कहते हो, कैसे कहते हो और किसलिए कहते हो तो बात को टालने के लिए जो दिल मे आये कह देता हूँ। मसलन यह कि मैं जैसे भी कहता हूँ, जिस लिए भी कहता हूँ तुम शे'र मे से ढूढ लो। मेरा सर खाने की क्या जरूरत है। लेकिन उनमे से ढीठ किस्म के लोग जब भी नही मानते। चुनांचे आज की गुफ्तगू की सब जिम्मेदारी उन हजरात के सर है मुझ पर नही।

शे'र गोई का कोई वाहिद[7] उ'ज्रे गुनाह[8] तो मुझे नही मालूम। इसमे बचपन की फजा ए गिर्द-ओ-पेश[9] मे शे'र का चर्चा, दोस्त अहबाब की तरगीब[10] और दिल की लगी सभी कुछ शामिल है। यह "नक्शे फरियादी" के पहले हिस्से की बात है जिसमे १९२८-२९ से १९३४-३५ तक की तहरीर[11] शामिल हैं जो हमारी तालिब इल्मी के दिन थे। यो तो उन सब अशआ'र का करीब-करीब एक ही जहनी और जज़्बाती वारदात से तअ'ल्लुक है और इस वारदात का जाहिरी मुहर्रिक[12] तो वही एक हादसा है जो इस उ'म्र मे अकसर नौजवान दिलो पर गुजर जाया करता

है। लेकिन अब जो देखता हूँ तो यह दौर भी एक दौर नहीं था, बल्कि उसके भी दो अलग अलग हिस्से थे जिनकी दाखिली[13] और खारिजी[14] कैफियत काफी मुख्तलिफ थी।

यह था है कि सन् १९२० से १९३० तक का जमाना हमारे यहाँ मआशी[15] और समाजी तौर से कुछ अजब तरह की बेफिक्री, आसूदगी और वलवले अंग्रेज़ी का जमाना था, जिसमें अहम कौमी और सियासी तहरीकों के साथ-साथ नस्र-ओ-नज़्म में बेशतर संजीदा फिक्र-ओ-मुशाहिदे[16] के बजाय कुछ रंगरेलियाँ मनाने का सा अन्दाज़ था। शेर में अव्वलन हसरत मोहानी और उनके बाद जोश, हफ़ीज़ जालंधरी और अख्तर शीरानी की रियासत कायम थी। अफसाने में यलदरम और तनकीद में हुस्न बराए हुस्न और अदब बराए-अदब का चर्चा था। "नक्शे-फरियादी" की इब्तिदाई नज़्म—'खुदा वह वक्त न लाये कि सोगवार हो तू', 'मिरी जाँ अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको' (पृष्ठ २९), 'तहे नजूम कहीं चाँदनी के दामन में' (पृष्ठ ३२) वगैरह, वगैरह—इसी माहौल के ज़ेरे असर मुरत्तब[17] हुई और इस फ़ज़ा में इब्तिदा ए इश्क का तहय्युर[18] भी शामिल था। लेकिन हम लोग इस दौर की एक झलक भी ठीक से न देख पाये थे कि सोहबतें यार आखिर शुद।

फिर देश पर आलमी कसादबाज़ारी[19] के साये ढलने शुरू हुए। कालेज के बड़े बड़े बाँके तीसमारखाँ तलाशे मआ'श[20] में गलियों की खाक फाँकने लगे। यह वे दिन थे जब यकायक बच्चों की हँसी बुझ गयी। उजड़े हुए किसान खेत खलिहान छोड़कर शहरों में मज़दूरी करने लगे और अच्छी खासी शरीफ बहू बेटियाँ बाजार में आ बैठीं। घर के बाहर यह हाल था और घर के अन्दर मर्गे सोज़े मुहब्बत[21] का कुहराम मचा था। यकायक यूँ महसूस होने लगा कि दिल ओ दिमाग पर सभी रास्ते बन्द हो गये हैं और अब यहाँ कोई नहीं आयेगा। इस कैफियत का इख्तिताम[22] जो "नक्शे फरियादी" के पहले हिस्से की आखिरी नज़्मों की कैफियत है, एक निस्बतन गैर मा'रूफ नज़्म पर होता है जिसे मैंने यास' (पृष्ठ ३६) का नाम दिया था। वह नज़्म यूँ है

बरबते दिल के तार टूट गये
हैं ज़मींबोस राहतों के महल

मिट गये क़िस्स हा-ए फ़िक्र-ओ-अमल
बज़्मे हस्ती के जाम फूट गये

छिन गया कैफ़े कौसर ओ तसनीम

ज़हमते गिरिय-ओ बुका बे-सूद
शिक्व ए-बख़्ते नारसा बे सूद
हो चुका ख़त्म रहमतो का नुज़ूल
बन्द है मुद्दतों से बाबे-क़ुबूल
बेनियाज़े दुआ है रब्बे-करीम

बुझ गई शम्ए-आरज़ू ए जमील
याद बाक़ी है बेकसी की दलील

इतज़ारे फ़िज़ूल रहने दे
राज़े उल्फ़त निबाहने वाले
बारे गम से कराहने वाले
काविश बे हुसूल रहने दे

सन् १६३४ मे हम लोग कालेज से फ़ारिग हुए और सन् १६३५ मे मैंने एम० ए० ओ० कालेज अमृतसर मे मुलाज़मत कर ली। यहाँ स मेरी और मेरे बहुत से हम अस्र[२३] लिखने वालो की ज़हनी और जज़्बाती ज़िदगी का नया दौर शुरू होता है। इस दौराने कालेज मे अपने रुफ़का[२४] साहबज़ादा महमूदुज़्ज़फ़र मरहूम और उनकी बेगम रशीद जहा से मुलाक़ात हुई। फिर तरक़्क़ीपसद तहरीक की दाग बेल पडी, मज़दूर तहरीका का सिलसिला शुरू हुआ और यू लगा कि जैसे गुलशन मे एक नही कई दबिस्ताँ[२५] खुल गये हैं। इस दबिस्ता मे पहला सबक़ जो हमने सीखा यह था कि अपनी ज़ात को बाक़ी दुनिया से अलग करके सोचना अव्वल तो मुमकिन ही नही इसलिए कि इसम बहरहाल गिर्द ओ-पेश के सभी तजुर्बात शामिल होते हैं और अगर ऐसा मुमकिन हो भी तो इतहाई ग़ैर-सूदमद फ़े'ल है कि एक इसानी फ़द की ज़ात अपनी सब मुहब्बतो और कुदूरता,[२६] मसरता और रंजिशो के बावजूद बहुत ही छोटी-सी बहुत ही महदूद और हक़ीर[२७] शै है। उसकी वुसअत[२८] और पिन्हाई[२९] का पैमाना तो बाक़ी आलमे मौजूदात[३०] से उसके ज़हनी और जज़्बाती रिश्ते

हैं, ग्राम तौर से इसानी बिरादरी के मुश्तरका दुख-दर्द के रिश्ते। चुनांचे गमे-जाना[31] और गमे-दौरां[32] तो एक ही तजुर्बे के दो पहलू हैं। इस नये एहसास की इब्तिदा "नक्शे फरियादी" के दूसरे हिस्से की पहली नज्म से होती है। इस नज्म का उनवान[33] है "मुझ से पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न मांग" (पृष्ठ ४७) और अगर आप खानून हैं तो मिरे महबूब न माग"।

मुझसे पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न माग
मैंने समझा था कि तू है तो दरख्शां है हयात
तेरा गम है तो गमे दहर का झगडा क्या है
तेरी सूरत से है आलम मे बहारो को सबात
तेरी आखो के सिवा दुनिया मे रक्खा क्या है

तू जो मिल जाये तो तक्दीर निगू हो जाय

यू न था मैंने फक्त चाहा था यू हो जाये
और भी दुख हैं जमाने म मुहब्बत के सिवा
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा
अनगिनत सदियो के तरीक बहीमान तिलिस्म
रेशम ओ अतलस-ओ-कमख्वाब म बुनवाये हुए
जा-ब जा बिकते हुए कूच -ओ बाजार मे जिस्म
खाक मे लिथडे हुए खून म नहलाये हुए

जिस्म निकले हुए अमराज के तन्नूरो से
पीप बहती हुई गलते हुए नासूरो से
लौट जाती है इधर को भी नजर क्या कीजे
अब भी दिलकश है तिरा हुस्न मगर क्या कीजे

और भी दुख हैं जमाने मे मुहब्बत के सिवा
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा
मुझसे पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न माग

इसके बाद तेरह चौदह बरस 'क्यो न जहा का गम अपना लें' मे गुजरे और फिर फौज सहाफत,[34] ट्रेड यूनियन वगैरह वगैरह करने के

बाद हम चार बरस के लिए जेलखाने चले गये। 'नक्शे फरियादी' के बाद की दो किताबें 'दस्ते सबा' और 'जिदांनामा' इसी जेलखाने की यादगार है। बुनियादी तौर से तो ये तहरीरें उन्ही ज़हनी महसूसात और मामूलात से मुनसलिक[35] हैं जिनका सिलसिला 'मुझसे पहली सी मुहब्बत ' से शुरू होता है। लेकिन जेलखाना आशिकी की तरह खुद एक बुनियादी तजुर्बा है, जिसमे फिक्र-ओ-नजर का एकाध नया दरीच[36] खुद ब खुद खुल जाता है। चुनांचे अव्वल तो यह कि इब्तिदा ए-शबाब की तरह तमाम हिस्सियात[37] यानी Sensations फिर तेज हो जाती है और सुब्ह की पौ, शाम के धुधलके, आसमान की नीलाहट हवा के गुदाज के बारे मे वही पहला-सा तहय्युर लौट आता है। दूसरे यू होता है कि बाहर की दुनिया का वक्त और फासले दोनो बातिल[38] हो जाते हैं। नजदीक की चीजें भी बहुत दूर हो जाती हैं और दूर की नजदीक और फर्दा व दी[39] का तफरका[40] कुछ इस तौर से मिट जाता है कि कभी एक लम्हा कयामत मालूम होता है और कभी एक सदी कल की बात। तीसरी बात यह है कि फरागते हिज्रां[41] म फिक्र ओ मुतालआ[42] के साथ उरूसे सुखन[43] के जाहिरी बनाव सिंगार पर तवज्ज देने की ज्यादा मुहलत मिलती है। इस जेलखाने के भी दो दौर थे। एक हैदराबाद जेल का, जो इस तजुर्बे के इनक्शािफ[44] का, तहय्युर का जमाना था, एक माटगोमरी जेल का जो इस तजुर्बे से उकताहट और थकन का जमाना था। इन दो कैफियतो की नुमाइंदा ये दो नज्मे हैं। पहली 'दस्ते-सबा' मे से और दूसरी जिंदानामा' मे से

ज़िदां की एक शाम

शाम के पेच-ओ-ख्म सितारो से
जीन जीन उतर रही है रात
यू सबा पास से गुजरती है
जैसे कह दी किसी न प्यार की बात
सह्‌ने ज़िदा के बे-वतन अशजार
सरनिगू मह्‌व है बनाने मे
दामने-आसमां पे नक्श ओ निगार

शान ए बाम पर दमकता है
मेहरबां चांदनी का दस्ते-जमील

खाक मे घुल गई है आबे नुजूम
नूर मे घुल गया है अ'श का नील
सब्ज गोशा मे नीलगू साये
लहलहाते हैं जिस तरह दिल म
मौजे दर्दे फिराके-यार मे आये
दिल से पैहम खयाल कहता है
इतनी शीरी है जिंदगी इस पल
जुल्म का जह्र घोलने वाले
कामरा हो सकेंगे आज न कल
जल्व गाहे - विसाल की शम्एँ
वह बुझा भी चुके अगर तो क्या
चाँद को गुल कर तो हम जानें

ऐ रोशनियों के शह्‌र

सब्ज सब्ज सूख रही है फीकी जर्द दोपहर
दीवारो को चाट रहा है ताह्लाई का जहर
दूर उफक तक घटती, बढती, उठती, गिरती रहती है
कुहर की सूरत बे रौनक दर्दो की लहर
बिसात है उस कुहर के पीछे रोशनियो का शहर

ऐ रोशनियो के शह्‌र
ऐ रोशनियो के शह्‌र

कौन कहे किस सिम्त है तेरी रोशनियो की राह
हर जानिब बे नूर खडी है हिज्र की शहरपनाह
थक कर हर सू बैठ रही है शौक की माद सिपाह

ऐ रोशनियो के शह्‌र
ऐ, रोशनियो के शह्‌र

शब्रखू से मुह फेर न जाये अरमानो की रौ
खैर हो तेरी लैलाओ की, उन सबसे कह दो
आज की शब जब दिये जलाय ऊँची रखें लौ

'जिंदाँनाम' के बाद का जमाना कुछ जहनी अफरा-तफरी का जमाना है जिसमें अपना अखबारी पेशा छुटा। एक बार फिर जेलखाने गये, माशल लॉ का दौर आया और जहनी और गिद ओ पेश की फजा म फिर से कुछ इसदारे राह[44] और कुछ नई राहा की तलाश का एहसास पैदा हुआ। इस सुकून और इतजार की आईनादार एक नज्म है 'शाम' (पृष्ठ १६६) और एक नामुकम्मल गजल के चन्द अशआर है 'कब ठहरेगा दद, ए दिल, कब रात बसर होगी।'

—फज

---

१ प्रिय व्यसन २ क्षमा ३ किसी शब्द से बने हुए दूसरे शब्द ४ चर्चा, बखान ५ यथासभव ६ प्रथम पुरुष एकवचन ७ एकमात्र ८ अपराध का बहाना ९ चारो ओर का वातावरण १० रुचि ११ रचनाएँ १२ प्रेरक १३ आत्मगत १४ वस्तुगत १५ आर्थिक १६ चिंतन और अध्ययन १७ व्यवस्थित १८ हैरत, कौतूहल १९ विश्वव्यापी मदी २० रोजी की तलाश २१ प्रेम की जलन का अन्त २२ अत २३ समकालीन २४ रफीक (साथी) का बहुवचन २५ पाठशाला २६ द्वेषो २७ तुच्छ २८ विस्तार २९ गहराई ३० अस्तित्वा का ससार ३१ प्रेमिका का दुख ३२ जमाने का दुख ३३ शीर्षक ३४ पत्रकारिता ३५ सलग्न ३६ झरोखा ३७ चेतनाएँ ३८ मिथ्या ३९ भविष्य और अतीत ४० अतर ४१ विरह का अवकाश ४२ चिंतन और अध्ययन ४३ कविता की देवी ४४ प्रकट होना ४५ राह खुलना

क्रम

२ "दिले बफरोख्तम जाने खरीदम"

३ दस्ते सबा

५ यह खून की महक है कि लबे यार की खुशबू

१

नक्शे-फ़रियादी

अशआ'र

(१)

रात यूं दिल मे तिरी खोई हुई याद आई
जैसे वीराने म चुपके से बहार आ जाये
जैसे सहराओ[१] मे हौले से चले बादे-नसीम[२]
जसे बीमार को बे-वज्ह करार आ जाये

(२)

दिल रहीने - गमे - जहाँ[३] है आज
हर नफस[४] तश्न - ए - फुगाँ[५] है आज
सख्त वीराँ है महफिले - हस्ती
ऐ गमे - दोस्त तू कहाँ है आज

---

१ निजन, जगल २ सुगधित हवा ३ दुनिया के दुखो से पीडित
४ साँस ५ क्रदन की प्यासी ।

खुदा वह वक्त न लाये

खुदा वह वक्त न लाये कि सोगवार[1] हो तू
सुकूँ की नींद तुझे भी हराम हो जाये
तिरी मसरते-पैहम[2] तमाम हो जाये
तिरी हयात तुझे तल्ख़ जाम हो जाये

गमों से आईन-ए-दिल गुदाज[3] हो तेरा
हुजूमे-यास[4] में बेताब होके रह जाये
वफूरे-दर्द[5] से सीमाब[6] होके रह जाये
तिरा शबाब फकत ख्वाब होके रह जाये

गरूरे-हुस्न सरापा नियाज[7] हो तेरा
तवील रातों में तू भी करार को तरसे
तिरी निगाह किसी गमगुसार को तरसे
खिजारसीद तमन्ना बहार को तरसे

कोई जबीं न तिरे संगे-आस्ताँ[8] पे झुके
कि जिंसे-इज्ज-ओ-अकीदत[9] से तुझको शाद करे
फरेबे-वाद-ए-फर्दा[10] पे एतमाद करे
खुदा वह वक्त न लाये कि तुझको याद आये

वह दिल कि तेरे लिए बे-करार अब भी है
वह आंख जिसको तिरा इंतजार अब भी है

---

१ उदास २ निरन्तर सुख ३ नम बोझल ४ निराशाओं की भी[ड़] ५ पीड़ा की अति ६ पारा ७ श्रद्धा ८ चौखट का पत्थर ९ नम[्रता] और श्रद्धा १० भविष्य के वादे का धोखा।

दिल मरहूने - जोशे - बाद - ओ - नाज[1]
इश्क मिन्नतकशे - फुसूने - नियाज[2]
दिल का हर तार लरजिशे - पैहम[3]
जाँ का हर रिश्त वक्फे-सोज ओ-गुदाज[4]

सोजिशे - दर्दे - दिल किसे मालूम
कौन जाने किसी के इश्क का राज
मेरी खामोशियों में लरजाँ है
मेरे नालों की गुमशुदा आवाज

हो चुका इ'श्क अब हवस ही सही
क्या करें फर्ज है अदा-ए नमाज
तू है और इक तगाफुले - पैहम[5]
मैं हूँ और इतजारे - बेअदाज

खौफे - नाकामी - ए - उमीद है 'फैज'
वरन दिल तोड दे तिलिस्मे - मजाज[6]

---

१ शराब और सौंदर्य की उमग मे डूबा हुआ २ दशन के जादू का अभिलाषी ३ निरतर कपन ४ जलन और नर्मी पर निछावर ५ निरतर उपेक्षा ६ ससार का भ्रम, मायाजाल ।

इंतिहा-ए-कार[1]

पिंदार[2] के खूगर[3] को
नाकाम भी देखोगे ?
आगाज[4] से वाकिफ हो
अंजाम भी देखोगे ?

रंगीनी-ए-दुनिया से मायूस-सा हो जाना
दुखता हुआ दिल लेकर तनहाई मे खो जाना

तरसी हुई नजरो को
हसरत से झुका लेना
फरियाद के टुकडो को
आहो मे छुपा लेना

रातो की खमोशी मे छुपकर कभी रो लेना
मजबूर जवानी के मलबूस[5] को धो लेना

जजबात की वुसअ'त[6] को
सिज्दो से बसा लेना
भूली हुई यादो को
सीने से लगा लेना

---

१ अन (किसी काम का) २ अभिमान घमड ३ आदी ४ आर
५ कपडा, वस्त्र ६ विस्तार।

मैं दिलफिगार[1] नही, तू सितम शअ'ार[2] नही
बहुत दिनो से मुझे तिरा इंतजार नही
तिरा ही अक्स है इन अजनबी बहारो मे
जो तेरे लब, तिरे बाजू, तिरा कनार[3] नही

---

१ घायल दिलवाला २ अत्याचारी स्वभाववाला ३ गोद।

अजाम

है लबरेज[१] आहो से ठडी हवाएँ
उदासी मे डूबी हुई हैं घटाएँ
मुहब्बत की दुनिया पे शाम आ चुकी है
सियहपोश है जिंदगी की फजाएँ

मचलती हैं सीने मे लाख आरजूएँ
तडपती है आखो मे लाख इल्तिजाएँ[२]
तगाफुल[३] के आगोश मे सो रहे है
तुम्हारे सितम और मेरी वफाएँ

मगर फिर भी ऐ मेरे मा'सूम कातिल
तुम्हे प्यार करती है मेरी दुआएँ

अदा-ए-हुस्न की मा'सूमियत को कम कर दे
गुनाहगार नजर को हिजाब[४] आता है

---

१ परिपूर्ण २ प्रार्थनाएँ ३ उपेक्षा ४ लज्जा।

सरोदे-शबाना

गुम है इक कैफ[1] मे फजा-ए-हयात[2]
खामुशी मिज्द - ए - नियाज[3] मे है
हुस्ने - मा'सूम ख्वावे - नाज मे है

ऐ कि तू रग ओ-वू का तूफान है
ऐ कि तू जल्वगर बहार मे है
जिदगी तेरे इख्तियार मे है
फूल लाखो वरस नही रहते
दो घडी और है बहारे - शबाब
आ कि कुछ सुन - सुना लें हम
आ मुहब्बत के गीत गा ले हम

मेरी तनहाइयो पे शाम रहे?
हसरते - दीद[4] नातमाम रहे?
दिल मे बेताब है सदा - ए - हयात[5]
आँख गौहर निसार[6] करती है
आसमाँ पर उदास हैं तारे
चाँदनी इतजार करती है

आ कि थोडा - सा प्यार कर लें हम
जिदगी जरनिगार[7] कर लें हम

---

१ नशा २ जीवन का वातावरण ३ श्रद्धा से झुकना ४ दर्शन
। अभिलापा ५ जीवन स्वर ६ निछावर ७ स्वर्णिम।

गजल

इ'श्क मिन्नतकशे-क़रार[1] नही,
हुस्न मजबूरे-इतजार नही
तेरी रंजिश की इतिहा मालूम !
हसरतो का मिगे शुमार नही
अपनी नजरे बिखेर दे साकी
मय बअदाज-ए-खुमार[2] नही
जेरे-लब है अभी तबस्सुमे-दोस्त
मुनतशिर[3] जल्व-ए-बहार नही
अपनी तक्मील[4] कर रहा हूँ मैं,
वरन तुझसे तो मुझको प्यार नही
चार ए-इतज़ार[5] कौन करे,
तेरी नफरत भी उस्तवार नही
'फैज़' जिदा रहे वह हैं तो सही
क्या हुआ गर वफाशेआ'र[6] नही

---

१ चैन का इच्छुक । २ उतरा नशा पूरा करने भर को ३ विच्छिन्न
बिखरा हुआ ४ पूर्ति ५ प्रतीक्षा का समाधान ६ वफा करनेवाला ।

आखिरी ख़त

वह वक्त मिरी जाँ बहुत दूर नही है
जब दद से रुक जायेंगी सबजीस्त[1] की राहे
और हद से गुजर जायेगा अदोहे-निहानी[2]
थक जायेगी तरसी हुई नाकाम निगाहे
छिन जायेंगे मुझसे मिरे आँसू, मिरी आहे
छिन जायेगी मुझसे मिरी बेकार जवानी

शायद मिरी उल्फत को बहुत याद करोगी
अपने दिले-मा'सूम को नाशाद करोगी
आओगी मिरी गोर[3] पे तुम अश्क बहाने
नौखेज़[4] बहारो के हसी फूल चढाने

शायद मिरी तुबत[5] को भी ठुकराके चलोगी
शायद मिरी बे-सूद वफाओ पे हँसोगी
इस वज्अ' का भी तुम्हे पास[6] न होगा
लेकिन दिले-नाकाम को एहसास न होगा
अलकिस्स मआले-गमे-उल्फत[7] पे हँसो तुम
या अश्क बहाती रहो फरियाद करो तुम
माजी[8] पे नदामत[9] हो तुम्हे या कि मसर्रत[10]
खामोश पडा सोयेगा वामाँद-ए-उल्फत[11]

---

१ जिंदगी २ छुपा हुआ तूफान ३ कब्र ४ नवोदित ५ कब्र
यान ७ प्रेम-पीडा का परिणाम ८ बीते दिन, अतीत ९ शर्मिन्दगी
खुशी ११ प्रेम से थका हुआ।

गजल

हर हकीकत मजाज[1] हो जाये
काफिरो की नमाज़ हो जाये
दिल रहीने - नियाज हो जाये
बेकसी कारसाज हो जाये
मिन्नते - चार साज कौन करे
दर्द जब जाँ - नवाज हो जाये

इश्क दिल मे रहे तो रुस्वा[3] हो
लब पे आये तो राज हो जाये
लुत्फ का इंतजार करता हूँ
जौर[4] ता - हद्दे - नाज हो जाये
उम्र बे - सूद कट रही है 'फैज'
काश अफशा - ए - राज[5] हो जाये

१ भ्रम २ श्रद्धा से पूर्ण ३ बदनाम ४ अत्याचार ५ रहस्योद्घाटन।

हसीन-ए-खयाल से

दे दे

रसीले होंट, मा'सूमाना पेशानी, हसी आंखे
कि मैं इक बार फिर रगीनियो मे गर्क हो जाऊँ
मिरी हस्ती को तेरी इक नजर आगोश मे ले ले
हमेशा के लिए इस दाम[1] मे महफूज हो जाऊँ
जिया-ए-हुस्न[2] से जुल्माते-दुनिया[3] मे न फिर आऊँ

गुजश्त हसरतो के दाग मेरे दिल से धुल जाये
मैं आनेवाले गम की फिक्र से आजाद हो जाऊँ
मिरे माजी-ओ-मुस्तकबिल[4] सरासर महव हो जाये
मुझे वह इक नजर, इक जाविदानी[5]-सी नजर दे दे

(ब्राउनिंग)

जाल २ रूप की ज्योति ३ ससार का अँधेरा ४ अतीत और
। ५ अमर।

मिरी जाँ अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको

मिरी जाँ अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको
अभी तक दिल मे तेरे इश्क की कंदील रोशन है
तिरे जल्वो से बज़्मे - ज़िदगी जन्नत - ब - दामन[1] है
मिरी रूह अब भी तनहाई मे तुझको याद करती है
हर इक तारे-नफस[2] मे आरज़ू बेदार है अब भी
हर इक बे रग साअ'त मुतज़िर है तेरी आमद की
निगाहे बिछ रही हैं रास्ता ज़रकार[3] है अब भी
मगर जाने-हज़ी[4] सदमे सहेगी आखिरश कब तक ?
तिरी बे-मेह्रियो[5] पे जान देगी आखिरश कब तक ?
तिरी आवाज़ मे सोई हुई शीरीनियाँ आखिर
मिरे दिल की फसुर्द[6] खिल्वतो[7] मे जा न पायेंगी
ये अश्को की फरावानी[8] से धुदलाई हुई आँखें
तिरी रा'नाइयो[9] की तमकनत[10] को भूल जायेंगी
पुकारेंगे तुझे तो लब कोई लज्ज़त न पायेंगे
गुलू मे तेरी उल्फत के तराने सूख जायेंगे
मबादा[11] यादहा-ए-अह्दे-माज़ी[12] मह्व हो जायें
ये पारीना[13] फसाने मौजहा ए-गम[14] मे खो जाये
मिरे दिल की तहो मे तेरी सूरत घुल के बह जाये
हरीमे-इश्क[15] की शम्अ'-ए-दरख्शाँ बुझके रह जाये
मबादा अजनबी दुनिया की ज़ुल्मत घेर ले तुझको
मिरी जाँ अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको

---

१ आँचल मे स्वर्ग लिये हुए २ सासो का क्रम ३ सुनहले कामवाल
४ दुखी प्राण ५ निष्ठुरता ६ उदास ७ एकात ८ बाहुल्य ९ सुदरत
छटा १० आभा, तडक भडक ११ कही ऐसा न हो १२ बीते दिनो की या
१३ पुराने १४ दु ख की लहरें १५ प्रेम का घर।

बा'द अज़ वक़्त

दिल को एहसास से दो चार न कर देना था
साज़े-ख़्वाबीद[1] को बेदार न कर देना था
अपने मा'सूम तबस्सुम की फ़रावानी को
वुसअ'ते-दीद[2] पे गुलबार[3] न कर देना था
शौक़े-मजबूर को बस एक झलक दिखलाकर
वाक़िफ़े-लज़्ज़ते-तकरार[4] न कर देना था
चश्मे-मुश्ताक़[5] की ख़ामोश तमन्नाओं को
यक-ब-यक माइले-गुफ़्तार[6] न कर देना था
जल्व-ए-हुस्न को मस्तूर[7] ही रहने देते
हसरते-दिल को गुनहगार न कर देना था

१ सोया हुआ बाजा २ दृष्टि का विस्तार ३ फूल बरसाना ४ दुबारा के सुख से परिचित ५ लालायित आँखें ६ बोलने को तैयार ७ गुप्त।

सरोदे-शबाना[1]

नीम शब, चाद, खुद - फरामोशी
महफिले - हस्त - ओ - बूद[2] वीरां है
पैकरे - इल्तिजा[3] है खामोशी
बज्मे - अजुम[4] फसुर्दा - सामा[5] है
आबशारे - सुकूत[6] जारी है
चार सू बे - खुदी सी तारी है
जिंदगी जुज्वे - ख्वाब[7] है गोया
सारी दुनिया सराब[8] है गोया
सो रही है घने दरख्तो पर
चाँदनी की थकी हुई आवाज
कहकशा[9] नीम - वा[10] निगाहो से
कह रही है हदीसे-शौके-नियाज[11]
साजे - दिल के खमोश तारो से
छन रहा है खुमारे-कैफ आगीं[12]
आरजू, ख्वाब, तेरा रू-ए-हसीं[13]

-

१ रात्रि सगीत २ है और था (वतमान और अतीत) की दुनिया ३ साकार प्राथना ४ सितारा की महफिल ५ बुनी हुई, उदास ६ निश्चलता का झरना ७ स्वप्न का हिस्सा ८ मगतष्णा ९ आकाश गगा १० अधखुली ११ दशन-अभिलापा की कहानी १२ मादक नशा १३ सुन्दर मुखडा।

अशआ'र

वह अह्‌दे-ग़म[1] की काहिशहा-ए-बेहासिल[2] को क्या समझे
जो उनकी मुख़्तसर रूदाद भी सब्र-आज़मा[3] समझे
यहाँ वाबस्तगी, वाँ बरहमी[4], क्या जानिये क्यों है
न हम अपनी नज़र समझे, न हम उनकी अदा समझे
फ़रेबे-आरज़ू की सह्‌ल-अंगारी[5] नहीं जाती
हम अपने दिल की धड़कन को तिरी आवाज़े-पा समझे
तुम्हारी हर नज़र से मुनसलिक[6] है रिश्त-ए-हस्ती
मगर ये दूर की बातें कोई नादान क्या समझे
न पूछ अह्‌दे-उल्फ़त की, बस इक ख़्वाबे-परीशाँ[7] था
न दिल को राह पर लाये, न दिल का मुद्दआ'[8] समझे

---

१ दुख के दिन २ व्यर्थ वेदना ३ उकता देनेवाला ४ नाराज़गी
५ सुगमता की खोज ६ बँधा हुआ ७ बिखरा हुआ सपना ८ उद्देश्य, अभीष्ट।

क़तआ'त

वक्फ़े-हिरमान-ओ-यास[१] रहता है
दिल है, अक्सर उदास रहता है
तुम तो ग़म देके भूल जाते हो
मुझको एहसाँ का पास[२] रहता है

फ़ज़ा-ए-दिल पे उदासी बिखरती जाती है
फ़सुर्दगी[३] है कि जाँ तक उतरती जाती है
फ़रेबे-ज़ीस्त[४] से क़ुदरत का मुद्दआ'[५] मा'लूम
यह होश है कि जवानी गुज़रती जाती है

१ [illegible] २ ध्यान ३ उदासी ४ जीवन का धोखा
५ अभिप्राय, आशय।

इन्तज़ार

गुज़र रहे है शब-ओ-रोज तुम नही आती
रिआज़े - ज़ीस्त[1] है आज़ुद - ए - बहार[2] अभी
मिरे खयाल की दुनिया है सोगवार अभी
जो हसरते तिरे गम की कफील[3] है, प्यारी
अभी तलक मिरी तनहाइयो मे बसती है
तवील रातें अभी तक तवील हैं, प्यारी
उदास आँखे अभी इन्तजार करती हैं
बहारे - हुस्न पे पाबदी - ए - जफा कब तक ?
यह आजमाइशे - सब्र - गुरेजपा[4] कब तक ?
कसम तुम्हारी, बहुत गम उठा चुका हूँ मैं
गलत था दा'व -ए-सब्र-ओ-शिकेब,[5] आ जाओ
करारे - खातिरे - बेताब[6] थक गया हूँ मैं

---

१ जीवन का अभ्यास २ बहार का सताया हुआ ३ बद ४ बार बार टूटनेवाले धीरज की परीक्षा ५ धैय ६ बेचैन हृदय की शांति ।

तहे-नजूम

तहे-नजूम[१] कही चाँदनी के दामन मे
हुजूमे-शौक[२] से इक दिल है बे-करार अब भी
खुमारे-ख्वाब से लबरेज अहमरी[३] आँखे
सफद रुख पे परीशाँ अ'म्बरी[४] आखे
छलक रही है जवानी हर इक बुने-मू[५] से
रवाँ हो वर्गे-गुले-तर से जैसे सैले-शमीम[६]
जिया-ए मह[७] मे दमकता है रगे पैराहन
अदा-ए-इ'ज्ज[८] से आचल उडा रही है नसीम
दराज कद की लचक से गुदाज पैदा है
अदा - ए - नाज से रगे - नियाज पैदा है
उदास आँखो मे खामोश इल्तिजाएँ है
दिले-हजी[९] मे कई जा-ब लब दुआएँ है
तहे - नजूम कही चाँदनी के दामन मे
किसी का हुस्न है मसरूफे-इतजार अभी
कही खयाल के आबादकद गुलशन मे
है एक गुल कि है नावाकिफे बहार अभी

---

१ सितारो के नीचे २ उमगो की भीड ३ लाल ४ सुगधित
५ रोम रोम ६ ठण्डी हवा का झोका ७ चाद की रोशनी ८ कोमलता
९ व्यथित हृदय ।

हुस्न और मौत

जो फूल सारे गुलिस्ताँ मे सबसे अच्छा हो
फरोगे - नूर[1] हो जिससे फजा - ए - रगी मे
खिजाँ के जौर-ओ-सितम[2] को न जिसने देखा हो
वहार ने जिसे खूने - जिगर से पाला हो
वह एक फूल समाता है चश्मे - गुलची मे

हजार फूलो से आवाद वागे - हस्ती है
अजल[3] की आँख फक्त एक को तरसती है
कई दिलो की उमीदो का जो सहारा हो
फजा-ए-दह्र[4] की आलूदगी[5] से वाला हो
जहाँ मे आके अभी जिसने कुछ न देखा हो

न कहते-ऐ'श-ओ-मसरत,[6] न गम की अरजानी[7]
कनारे - रहमते - हक[8] मे उमे सुलाती है
सुकूते-शव[9] मे फरिश्तो की मर्सिय रवानी[10]
तवाफ[11] करने को सुव्हे-वहार आती है
सवा चढाने को जन्नत के फूल लाती है

---

१ प्रकाश की वृद्धि २ अत्याचार ३ मौत ४ दुनिया की हवा
लिप्त होना ६ सुख का अभाव ७ सस्ता होना ८ विधाता की कृपालु
द ९ रात का सन्नाटा १० मर्सिय पढना ११ परिश्रमा।

तीन मंजर

तसव्वुर[1]

शोखिया मुज्तर[2] निगाहे-दीद -ए- सरशार मे
इ'शरते ख्वाबीद रगे - नाज -ए - रुखसार मे
सुर्ख होटो पर तबस्सुम की जियाएँ,[3] जिस तरह
यासमन[4] के फूल डूबे हो मये - गुल्नार मे

सामना

छनती हुई नजरो से जजबात की दुनियाएँ
बेख्वाबियाँ, अफसाने, महताब, तमन्नाएँ
कुछ उलझी हुई बातें, कुछ बहके हुए नग्मे
कुछ अश्क जो आखो से बे-वजह छलक जाय

रुखसत

फसुर्द[5] रुख, लबो पर इक नियाज-आमेज[6] खामोशी
तबस्सुम मुज्महिल[7] था, मरमरी हाथो मे लरजिश थी
वह कैसी बेकसी थी तेरी पुर-तमकीन आँखो मे
वह क्या दुख था तिरी सहमी हुई खामोश आहो मे

---

[1] कल्पना २ मचलती हुई ३ ज्योति ४ चमेली ५ उदास ६ श्रद्धा भरी ७ बुझी हुई।

सरोद

मौत अपनी, न अमल अपना, न जीना अपना
सो गया शोरिशे-गेती[१] मे करीन अपना
नाखुदा[२] दूर, हवा तेज, क़रीं[३] कामे-निहग[४]
वक्त है फेक दे लहरो मे सफीन[५] अपना
अ'र्से-ए-दह्र[६] के हगामे तहे-ख्वाब सही
गम रख आतिशे-पैकार[६] से सीन अपना
साकिया रंज न कर जाग उठेगी महफिल
और कुछ देर उठा रखते है पीना अपना
बेशकीमत है ये गमहा-ए-मुहब्बत मत भूल
जुल्मते-याम[७] को मत सौप खजीन[८] अपना

१ दुनिया के शोर २ खेवनहार ३ निकट ४ घड़ियाल का जबडा
नाव ६ युद्ध की ज्वाला ७ निराशा का अंधकार ८ निधि, खज़ाना।

यास[१]

बरबते - दिल[२] के तार टूट गये
हैं जमीं - बोस[३] राहतों के महल
मिट गये किस्स हा-ए-फिक्र-ओ-अ'मल
बज्मे - हस्ती के जाम फूट गये
छिन गया कैफे कौसर-ओ तस्नीम[४]
जहमते - गिरिय - ओ-बुका[५] बे-सूद
शिकव - ए - बख्ते - नारसा[६] बे-सूद
हो चुका खत्म रहमतों का नुजूल[७]
बंद है मुद्दतों से बाबे - कुबूल[८]
बे-नियाजे - दुआ है रब्बे - करीम
बुझ गई शम्ए - आरजू-ए - जमील[९]
याद बाकी है बेकसी की दलील
इंतजारे - फजूल रहने दे
राज - उल्फत निबाहनेवाले
बारे-गम से कराहनेवाले
काविशे-बे-हुसूल[१०] रहने दे

---

१ निराशा २ हृदय तन्त्री ३ धराशायी ४ जन्नत की नहरों का मजा ५ क्रन्दन और रुदन का कष्ट ६ अभागपन का दुखडा ७ अवतरण ८ स्वीकृति का द्वार ९ सुंदर कामना का दीपक १० निष्फल खोज।

आज की रात

आज की रात साज़े दर्द न छेड
दुख से भरपूर दिन तमाम हुए
और कल की खबर किसे मा'लूम ?
दोश ओ-फर्दा [1] की मिट चुकी हैं हुदूद
हो न हो अब सहर किसे मा'लूम ?
जिंदगी हेच ! लेकिन आज की रात
एजदियत [2] है मुमकिन आज की रात
आज की रात साज़े-दर्द न छेड

अब न दुहरा फसानहा-ए-अलम [3]
अपनी किस्मत पे सोगवार न हो
फिक्रे-फर्दा [4] उतार दे दिल से
उ'म्रे - रफ्ता [5] पे अश्कबार [6] न हो
अ'हदे-गम [7] की हिकायतें मत पूछ
हो चुकीं सब शिकायतें मत पूछ
आज की रात साज़े-दर्द न छेड

१ बीता हुआ और आनेवाला कल २ खुदाई, खुदा होना ३ दुख की [कहा]नियां ४ भविष्य की चिन्ता ५ बीता जीवन ६ आंसू बहाना ७ दुख [के] दिन ।

ग़ज़ल

हिम्मते - इल्तिजा नही बाकी
जब्त का हौसल नही बाकी
इक तिरी दीद छिन गयी मुझसे
वरन दुनिया मे क्या नही बाकी
अपनी मश्के-सितम[1] से हाथ न खीच
मैं नही या वफा नही बाकी
तेरी चश्मे अलमनवाज[2] की ख़ैर
दिल मे कोई गिला नही बाकी
हो चुका ख़त्म अ'ह्दे-हिज्र-ओ-विसाल[3]
ज़िंदगी मे मज़ा नही बाकी

---

१ अत्याचार का अभ्यास २ दु ख को पूछनेवाली (सहानुभूति करनेवा
आंख ३ विरह और मिलन के दिन।

एक रहगुज़र पर

वह जिसकी दीद मे लाखो मसरते[1] पिन्हाँ
वह हुस्न जिसकी तमन्ना मे जन्नते पिन्हाँ
हज़ार फित्ने[2] तहे-पा-ए-नाज[3] ख़ाकनशी
हर इक निगाह ख़ुमारे-शबाव[4] से रगी
शबाव, जिससे तख़य्युल[5] पे विजलियाँ वरसें
विकार[6], जिसकी रकावत[7] को शोख़ियाँ तरसें
अदा-ए-लग्जिशे-पा[8] पर कयामतें कुर्बां
बयाज-रुख़[9] पे सहर की सबाहतें[10] कुर्बां
स्याह जुल्फो मे वारफ्त[11] नकहतो[12] का हुजूम
तवील रातो की ख्वावीद राहतो का हुजूम
वह आँख जिसके बनाव पे ख़ालिक[13] इतराये
ज़बाने-शे'र को तारीफ करते शर्म आये
वह होंट फ़ैज से जिनके बहारे-लाल फरोश
बहिश्त-ओ-कौसर-ओ-तस्नीम-ओ-सलसबील[14]ब-दोश[15]
गुदाज़ जिस्म, कबा जिस पे सजके नाज करे
दराज़ कद जिसे सर्वे-सही[16] नमाज़ करे
गरज़ वह हुस्न जो मुहताजे-वस्फ-ओ-नाम[17] नही
वह हुस्न जिसका तसव्वुर बशर[18] का काम नही

---

१ ख़ुशियाँ २ उपद्रव ३ सुन्दरता के पैर के नीचे ४ यौवन-मद ५ कल्पना ६ गरिमा ७ बराबरी ८ परो के काँपने का ढग ९ चेहरे का गोरा रग १० सफ़ेदी, रोशनी ११ बहती हुई १२ सुगध १३ स्रष्टा १४ जन्नत और उसकी नहरें १५ कधे पर लिये हुए १६ सब व सीधे पेड १७ परिचय या नाम का मुहताज १८ मनुष्य।

किसी जमाने में इस राहगुज़र से गुजरा था
व सद-गुरूर-ओ-तजम्मुल[19] इधर से गुजरा
और अब यह राहगुजर भी है दिलफरेब-ओ-हसी
है इसकी खाक में कैफे-शराब-ओ शे'र[20]मकी
हवा मे शोखी-ए रफ्तार[22] की अदाएँ है
फजा मे नर्मी-ए गुफ्तार[23] की सदाएँ
गरज वह हुस्न अब इस जा का जुज्वे-मजर[24] है
नियाजे-इश्क[25] को इक सिज्दगह मयस्सर

१९ सैकडा अभिमान और रूप लेकर २० मदिरा और कवि
मादकता २१ बसा हुआ २२ चाल की चचलता २३ वाणी की कं
२४ दृश्य का अश।

गजल

चश्मे-मयगू[६] जरा इधर कर दे
दस्ते-कुदरत[२] को बे-असर कर दे
तेज है आज दर्दे-दिल साकी
तल्खी-ए-मय को तेजतर कर दे
जोशे-वहशत[३] है तिश्न काम[४] अभी
चाके-दामन को ता-जिगर कर दे
मेरी किस्मत से खेलने वाले
मुझको किस्मत से बे-खबर कर दे
लुट रही है मिरी मताए'-नियाज[५]
काश वह इस तरफ नजर कर दे
'फैज़' तकमीले-आरजू[६] मा'लूम
हो सके तो यूँ ही बसर कर दे

---

१ मद भरी आंख २ प्रकृति का हाथ ३ उन्माद की तीव्रता ४ अतृप्त
विनय की पूंजी ६ कामना की पूर्ति।

एक मंज़र

बाम-ओ-दर खामशी के बोझ से चूर
आसमानो से जू-ए-दद[1] रवाँ
चाँद का दुख-भरा अफसान-ए-नूर[2]
शाहराहो की खाक मे गल्ताँ[3]
ख्वाबगाहो मे नीम-तारीकी
मुज्महिल[4] लय रुबाबे-हस्ती[5] की
हल्के-हल्के सुरो मे नौह कुनाँ

---

१ पीड़ा की धारा २ ज्योति की कहानी ३ डूबा हुआ ४ नीरस
५ जीवन-वीणा।

मेरे नदीम

ख़याल-ओ-शे'र की दुनिया में जान थी जिनसे
फ़ज़ा-ए-फ़िक्र-ओ-अमल[1] अर्गवान[2] थी जिनसे
वह जिनके नूर से शादाब थे मह्-ओ-अंजुम[3]
जुनूने-इ'श्क की हिम्मत जवान थी जिनसे
वह आरज़ूएँ कहाँ सो गयी है, मेरे नदीम[4]?
वह ना-सुबूर[5] निगाहे, वह मुंतज़िर राहे
वह पासे ज़ब्त[6] से दिल में दबी हुई आहे
वह इन्तज़ार की राते, तवील, तीर-ओ-तार[7]
वह नीम-ख़्वाब शबिस्ताँ, वह् मख़मली बाँहें
कहानियाँ थी कही खो गयी है, मेरे नदीम!
मचल रहा है रगे-ज़िंदगी में ख़ूने-बहार
उलझ रहे हैं पुराने गमो से रूह के तार
चलो कि चलके चिरागाँ करे दयारे-हबीब[8]
है इन्तज़ार मे अगली मुहब्बतो के मज़ार
मुहब्बते जो फ़ना हो गयी है, मेरे नदीम!

---

१ आचार विचार की दुनिया २ लाल, रंगीन ३ चाँद-तारे ४ साथी
५ धैर्यहीन ६ धैर्य की चिन्ता ७ अँधेरी, काली ८ दोस्त का घर।

२

"दिले बफरोख्तम जाने खरीदम"[1]

—निज़ामी

१ दिल बेचता हूँ जान खरीदता हूँ।

मुझसे पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न मांग

मुझसे पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न मांग
मैंने समझा था कि तू है तो दरख्शाँ[1] है हयात[2]
तिरा गम है तो गमे-दहर[3] का झगडा क्या है?
तेरी सूरत से है आलम में बहारों को सबात[4]
तेरी आँखों के सिवा दुनिया में रक्खा क्या है?
तू जो मिल जाये तो तकदीर नगूं[5] हो जाये
यूं न था, मैंने फकत चाहा था यूं हो जाये
और भी दुख हैं जमाने में मुहब्बत के सिवा
राहतें और भी हैं वस्ल[6] की राहत के सिवा
अनगिनत सदियों के तारीक बहीमान[7] तिलिस्म
रेशम-ओ-अतलस-ओ-कमख्वाब में बुनवाये हुए
जा-ब-जा बिकते हुए कूच-ओ-बाजार में जिस्म
खाक में लिथडे हुए, खून में नहलाये हुए
जिस्म निकले हुए अमराज[8] के तन्नूरों से
पीप बहती हुई गलते हुए नासूरों से
लौट जाती है उधर को भी नजर क्या कीजे
अब भी दिलकश है तिरा हुस्न मगर क्या कीजे?
और भी दुख हैं जमाने में मुहब्बत के सिवा
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा
मुझसे पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न मांग!

---

१ चमकदार २ जीवन ३ दुनिया का दुख ४ स्थिरता ५ उलट जाना बदल जाना ६ प्रणय, मिलन ७ पाशविक, बर्बर ८ बीमारियां।

गजल

दोनो जहान तेरी मुहब्बत मे हारके
वह जा रहा है कोई शबे-गम गुजारके
वीरॉ है मयकद, खुम-ओ-सागर उदास हे
तुम क्या गये कि रूठ गये दिन वहार के
इक फुसते-गुनाह मिली, वह भी चार दिन
देखे है हमने हौसले परवरदिगार के
दुनिया ने तेरी याद से बेगान कर दिया
तुझसे भी दिल फरेब है गम रोजगार के
भूले से मुस्करा तो दिये थे वह आज 'फज'
मत पूछ वलवले दिले नाक्द कार[1] के

१ अनुभवहीन हृदय ।

सोच

क्यो मेरा दिल शाद नही है क्यो खामोश रहा करता हूँ ?
छोडो मेरी रामकहानी मैं जैसा भी हूँ अच्छा हूँ

मेरा दिल गमगी है तो क्या गमगी यह दुनिया है सारी
यह दुख तेरा है न मेरा हम सबकी जागीर है प्यारी

तू गर मेरी भी हो जाये दुनिया के गम यूँ ही रहेगे
पाप के फदे, जुल्म के बधन अपने कहे से कट न सकेगे

गम हर हालत मे मुहलिक[1] है अपना हो या और किसी का
रोना धोना, जी को जलाना यू भी हमारा, यू भी हमारा

क्यो न जहा का गम अपनालें बा'द मे सब तदबीरें सोचे
बा'द मे सुख के सपन देखें सपनो की ता'बीरें[2] सोचें

बे-फिकरे धन-दौलत वाले ये आखिर क्यो खुश रहते है
इनका सुख आपस मे बाँट ये भी आखिर हम जैसे है

हमने माना जग कडी है सर फूटेंगे, खून बहेगा
खून मे गम भी बह जायेगे हम न रहे, गम भी न रहेगा

---

१ घातक २ साकार रूप।

गजल

वफा-ए-वा'द नही, वा'द-ए-दिगर भी नही
वह मुझसे रूठे तो थे, लेकिन इस कदर भी नही

बरस रही है हरीमे-हवस[1] मे दौलते-हुस्न
गदा-ए-इ'श्क[2] के कासे मे इक नजर भी नही

न जाने किसलिए उम्मीदवार बैठा हूँ
इक ऐसी राह पे जो तेरी रहगुजर भी नही

निगाहे-शौक सरे-बज्म बे-हिजाब[3] न हो
वह बे-खबर ही सही, इतने बे खबर भी नही

यह अ'ह्‌दे-तर्के मुहब्बत[4] है किस लिए आखिर
सुकूने कल्ब[5] इधर भी नही, उधर भी नही

---

१ वासना का घर २ प्रेम का भिखारी ३ निलज्ज ४ प्रेम को देने का प्रण ५ हृदय की शांति।

रकीब से

आ कि वाबस्ता[1] है उस हुस्न की यादें तुझ से
जिसने इस दिल को परीखान बना रखा था
जिसकी उल्फत मे भुला रखी थी दुनिया हमने
दह्र[2] को दह्र का अफसान बना रखा था

आशना हैं तिरे कदमो से वह राहे जिन पर
उसकी मदहोश जवानी ने इ'नायत की है
कारवाँ गुजरे है जिनसे उसी रा'नाई[3] के
जिसकी इन आँखो ने बे-सूद[4] इ'बादत[5] की है

तुझसे खेली हैं वह महबूब हवाएँ जिनमे
उसके मल्बूस[6] की अफसुर्दा[7] महक बाकी है
तुझ पे भी बरसा है उस बाम से महताब का नूर
जिसमे बीती हुई रातो की कसक बाकी है

तूने देखी है वह पेशानी[8], वह रुखसार[9], वह होंट
जिंदगी जिनके तसव्वुर[10] मे लुटा दी हमने
तुझ पे उट्ठी हैं वह खोई हुई साहिर[11] आँखें
तुझको मा'लूम है क्यो उ'म्र गवाँ दी हमने

---

१ जुड़ी हुई २ दुनिया ३ छटा ४ व्यर्थ ५ उपासना, पूजा ६ वस्त्र ७ उदास ८ माथा ९ गाल १० कल्पना ११ जादूगर।

हम पे मुश्तरिक[12] हैं एहसान गमे-उल्फत के
इतने एहसान कि गिनवाऊँ तो गिनवा न सकूं
हमने इस इ'श्क मे क्या खोया है क्या सीखा है
जुज[13] तिरे और को समझाऊँ तो समझा न सकूं

आ'जिज़ी सीखी, गरीबो की हिमायत सीखी
यास-ओ हिरमाँ[14] के, दुख-दर्द के मा'नी सीखे
ज़ेरदस्तो[15] के मसाइब[16] को समझना सीखा
सर्द आहो के, रुखे-जर्द[17] के मा'नी सीखे

जब कही बैठ के रोते है वह बेकस जिनके
अश्क आँखो मे बिलकते हुए सो जाते हैं
नातवानो[18] के निवालो पे झपटते है उकाब[19]
बाज़ तोले हुए मँडलाते हुए आते है

जब कभी बिकता है बाज़ार मे मज़दूर का गोश्त
शाहराहो पे गरीबो का लहू बहता है
आग सी सीने मे रह-रहके उबलती है न पूछ
अपने दिल पर मुझे काबू ही नही रहता है

---

१२ समान सम्मिलित १३ अतिरिक्त १४ निराशा १५ कमज़ो
१६ मुसीबतें १७ पीला चेहरा १८ कमजोरो १९ गिद्ध।

तनहाई

फिर कोई आया दिले-ज़ार ! नही कोई नहीं
राहरौ[1] होगा, कही और चला जायेगा
ढल चुकी रात, बिखरने लगा तारो का गुबार[2]
लडखडाने लगे ऐवानो[3] मे ख्वाबीद चिराग़
सो गई रास्त तक-तक के हर इक राहगुज़ार
अजनबी खाक ने धुंदला दिये कदमो के सुराग़
गुल करो शम्एँ, बढा दो मय-ओ-मीना-ओ-अयाग[4]
अपने बे-ख्वाब किवाडो को मुकफ्फल कर लो
अब यहाँ कोई नही, कोई नही आयेगा !

---

१ पथिक २ धूल ३ महलो ४ शराब, सुराही और प्याला।

ग़ज़ल

राज़-उल्फत छुपा के देख लिया
दिल बहुत कुछ जलाके देख लिया
और क्या देखने को बाकी है
आप से दिल लगाके देख लिया
आस उस दर से टूटती ही नही
जाके देखा, न जाके देख लिया
वह मिरे होके भी मिरे न हुए
उनको अपना बनाके देख लिया
आज उनकी नज़र मे कुछ हमने
सबकी नज़रें बचाके देख लिया
'फैज़' तकमीलें-ग़म[1] भी हो न सकी
इ'श्क को आज़माके देख लिया

---

१ दुख की पूर्ति।

ग़ज़ल

कुछ दिन मे इंतज़ारे-सवाले-दिगर[1] मे है
वह मुज़महिल[2] हया जो किसी की नज़र मे है

सीखी यही मिरे दिले-काफ़िर ने बंदगी
रब्बे-करीम है तो तिरी रहगुज़र मे है

माज़ी मे जो मज़ा मिरी शाम-ओ-सहर मे था
अब वह फ़क़त तसव्वुरे-शाम-ओ-सहर मे है

क्या जाने किसको किससे है अब दाद की तलब
वह ग़म जो मेरे दिल मे है तेरी नज़र मे है

---

१ दूसरे सवाल का प्रतीक्षा २ बुझी हुई, क्षीण।

गजल

फिर हरीफ़े-बहार[1] हो बैठे
जाने किस-किसको आज रो बैठे
थी मगर इतनी रायगाँ[2] भी न थी
आज कुछ जिंदगी से खो बैठे
तेरे दर तक पहुँच के लौट आये
इ'श्क की आबरू डुबो बैठे
सारी दुनिया से दूर हो जाये
जो जरा तेरे पास हो बैठे
न गयी तेरी बे-रुखी न गयी
हम तिरी आरजू भी खो बैठे
'फैज' होता रहे जो होना है
शे'र लिखते रहा करो बैठे

१ बहार के दुश्मन २ व्यर्थ।

चंद रोज़ और मिरी जान !

चंद रोज़ और मिरी जान ! फ़क़्त चंद ही रोज़
ज़ुल्म की छाँव में दम लेने पे मजबूर हैं हम
और कुछ देर सितम सह लें, तड़प लें, रो लें
अपने अजदाद[1] की मीरास[2] है मा'ज़ूर[3] हैं हम
जिस्म पर क़ैद है, जज़्बात पे ज़ंजीरें हैं
फ़िक्र महबूस[4] है, गुफ़्तार पे ताज़ीरें[5] हैं
अपनी हिम्मत है कि हम फिर भी जिये जाते हैं
ज़िंदगी क्या किसी मुफ़लिस की क़बा है जिसमें
हर घड़ी दर्द के पैवंद लगे जाते हैं
लेकिन अब ज़ुल्म की मी'याद के दिन थोड़े हैं
इक ज़रा सब्र, कि फ़रियाद के दिन थोड़े हैं
अ'र्स-ए-दह्‌र[6] की झुलसी हुई वीरानी में
हमको रहना है तो यूँ ही तो नहीं रहना है
अजनबी हाथों का बे-नाम गरांबार[7] सितम
आज सहना है हमेशा तो नहीं सहना है
यह तिरे हुस्न से लिपटी हुई आलाम[8] की गर्द
अपनी दो रोज़ा जवानी की शिकस्तों का शुमार
चाँदनी रातों का बेकार दहकता हुआ दर्द
दिल की बे-सूद तड़प, जिस्म की मायूस पुकार
चंद रोज़ और मिरी जान ! फ़क़्त चंद ही रोज़

---

१ पूर्वज २ देन, धरोहर ३ लाचार ४ बंदी ५ प्रतिबंध ६ ज़माने का मैदान ७ भारी, बोझिल ८ दुख।

मर्गे-सोज़े मुहब्बत

आओ कि मर्गे-सोज़े-मुहब्बत[1] 'मनायें हम
आओ कि हुस्ने-माह[2] से दिल को जलायें हम
ख़ुश हो फ़िराक़े-क़ामत-ओ-रुख़सारे-यार[3] से
सर्व-ओ-गुल-ओ-समन से नज़र को सतायें हम
वीरानी-ए-हयात[4] को वीरानतर करें
ले नासह[5] आज तेरा कहा मान जाय हम
फिर ओट लेके दामने-अब्रे-बहार[6] की
दिल को मनायें हम, कभी आँसू बहायें हम
सुलझायें बे-दिली से ये उलझे हुए सवाल
वाँ जायें या न जायें, न जायें कि जायें हम
फिर दिल को पासे-ज़ब्त[7] की तल्क़ीन[8] कर चुकें
और इम्तहाने-ज़ब्त से फिर जी चुरायें हम
आओ कि आज ख़त्म हुई दास्ताने-इ'श्क़
अब ख़त्मे-आशिक़ी के फ़साने सुनाये हम

---

१ प्रेम की जलन का अंत २ ३ प्रेमिका के क़द और गालों की कल्प
४ जीवन की नीरसता ५ उपदेशक ६ बहार के बादल का आँचल ७ धैर्य
चिन्ता ८ नसीहत ।

कुत्ते

ये गलियों के आवारा बेकार कुत्ते
कि बख्शा गया जिनको जौके-गदाई[1]
ज़माने की फटकार सरमाय[2] इनका
जहाँ भर की धुतकार इनकी कमाई

न आराम शब को, न राहत सवेरे
गलाज़त मे घर, नालियों मे बसेरे
जो बिगड़ें तो इक दूसरे से लड़ा दो
ज़रा एक रोटी का टुकड़ा दिखा दो
ये हर एक की ठोकरें खाने वाले
ये कानून से उकताके मर जाने वाले

यह मज़लूम[3] मख़लूक[4] गर सर उठाये
तो इंसान सब सरकशी[5] भूल जाये
ये चाहे तो दुनिया को अपना बना लें
ये आकाओं[6] की हड्डियाँ तक चबा लें

कोई इनको एहसासे-ज़िल्लत[7] दिला दे
कोई इनकी सोई हुई दुम हिला दे

---

१ भीख माँगने की रुचि २ पूंजी ३ दलित-पीड़ित ४ प्राणी ५ घमंड ६ मालिकों ७ अपमान का आभास।

बोल

बोल, कि लब आज़ाद हैं तेरे
बोल, ज़बाँ अब तक तेरी है
तेरा सुतवाँ जिस्म है तेरा
बोल, कि जाँ अब तक तेरी है
देख कि आहनगर[1] की दुकाँ मे
तुंद है शोले, सुर्ख है आहन
खुलने लगे कुफ्लो के दहाने
फैला हर इक ज़ंजीर का दामन
बोल, यह थोडा वक्त बहुत है
जिस्म-ओ-ज़बाँ की मौत से पहले
बोल, कि सच ज़िंदा है अब तक
बोल, जो कुछ कहना है कह ले

१ लोहार।

गजल

फिर लौटा है खुरशीदे-जहाँताव[1] सफर से
फिर नूरे-सहर[2] दस्त-ओ-गरेवाँ[3] है सहर से

फिर आग भडकने लगी है साजे-तरब[4] मे
फिर शो'ले लपकने लगे हर दीद-ए-तर[5] से

फिर निकला है दिवाना कोई फूक के घर को
कुछ कहती है हर राह हर इक राहगुजर से

वह रग है इमसाल गुलिस्ताँ की फजा का
ओझल हुई दीवारे-कफस हद्दे-नजर से

सागर तो खनकते है शराब आये न आये
बादल तो गरजते है घटा बरसे न बरसे

पापोश[6] की क्या फिक्र है, दस्तार सँभालो
पायाब[7] है जो मौज गुजर जायेगी सर से

१ दुनिया को रोशनी देनेवाला सूरज २ सुबह की रोशनी ३ उलझी
ई (गरेवा हाथ म पकडे हुए) ४ मस्ती का साज ५ भीगी आँख ६ जूता
पैर तक ।

इकबाल

आया हमारे देस मे इक खुशनवा[1] फकीर
आया और अपनी धुन मे गजलख्वाँ गुजर गया
सुनसान राहे खल्क[2] से आबाद हो गईं
वीरान मयकदो का नसीब सँवर गया
थी चद ही निगाहे जो उस तक पहुँच सकी
पर उसका गीत सबके दिलो मे उतर गया

अब दूर जा चुका है वह शाहे गदानुमा[3]
और फिर से अपने देस की राहें उदास हैं
चद इक को याद है कोई उसकी अदा-ए खास
दो इक निगाहे चद अजीजो के पास हैं
पर उसका गीत सबके दिलो मे मुकीम[4] है
और उसकी लय से सैकडो लज्जतशनास हैं

इस गीत के तमाम महासिन[5] हैं ला-जवाल
इसका वफूर,[6] इसका खरोश,[7] इसका सोज-ओ-साज
यह गीत मिस्ले शो'ल-ए-जव्वाल तुद-ओ-तेज
इसकी लपक से बादे-फना का जिगर गुदाज
जैसे चिराग वहशते सरसर से बे-खतर
या शम्ए-बज्म सुब्ह की आमद से बे-खबर

---

१ मधुर भाषी २ प्राणियो ३ रक जसा राजा ४ स्थापित
५ सुदरताए ६ प्रचुरता ७ उत्साह।

गजल

कई वार इसका दामन भर दिया हुस्ने-दो आलम[१] से
मगर दिल है कि उसकी खान वीरानी नही जाती

कई वार इसकी खातिर जर्रे जर्रे का जिगर चीरा
मगर यह चश्मे-हैराँ, जिसकी हैरानी नही जाती

नही जाती मताए'-ला'ल-ओ-गौहर[२] की गराँयाबी[३]
मताए'-गैरत-ओ-ईमाँ[४] की अरजानी[५] नही जाती

मिरी चश्मे-तन आसाँ[६] को वसीरत[७] मिल गई जब से
बहुत जानी हुई सूरत भी पहचानी नही जाती

सरे-खुसरव[८] से नाजे-कजकुलाही[९] छिन भी जाता है
कुलाहे-खुसरवी[१०] से बू-ए-सुल्तानी नही जाती

ब-जुज दीवानगी वाँ और चारा ही कहो क्या है ?
जहाँ अक्ल-ओ-खिरद[११] की एक भी मानी नही जाती

१ लोक परलोक की सुंदरता २ हीरे मोती की दौलत ३ महँगापन ४ स्वाभिमान और सच्चाई की दौलत ५ सस्तापन ६ आलसी, निकम्मा ७ ज्ञान चक्षु, देखने की शक्ति ८ बादशाह खुसरो का सर ९ राजत्व का गौरव १० खुसरो का ताज ११ समझ-बूझ।

मौज़ूए' सुख़न

गुल हुई जाती है अफ़मुद सुलगती हुई शाम
धुलके निकलेगी अभी चश्म-ए-महताब से रात
और—मुश्ताक[1] निगाहो की सुनी जायेगी
और—उन हाथो से मस[2] होगे ये तरसे हुए हात
उनका आँचल है, कि रुख़सार, कि पैराहन[3] है
कुछ तो है जिससे हुई जाती है चिलमन रगी
जाने उस जुल्फ की मौहूम[4] घनी छाँव म
टिमटिमाता है वह आवेज[5] अभी तक कि नही ?

आज फिर हुस्ने-दिलआरा[6] की वही धज होगी
वही ख्वाबीद सी आखें, वही काजल की लकीर
रगे-रुख़सार पे हल्का सा वह गाजे का गुबार
सदली हाथ पे धुंदली सी हिना की तहरीर[7]

अपने अफ़कार[8] की, अशआ'र की दुनिया है यही
जाने मज़मू[9] है यही, शाहिदे-मा'नी[10] है यही

आज तक सुख़-ओ-सियह सदियो के साये के तले
आदम-ओ-हव्वा की औलाद पे क्या गुजरी है ?
मौत और जीस्त की रोज़ान सफ़आराई[11] मे
हम पे क्या गुज़रेगी, अजदाद[12] पे क्या गुज़री है ?

१ उत्सुक, लालायित २ स्पर्श ३ वस्त्र ४ हल्की, धुधली ५ [illegible]
का कुडल ६ मनमोहक रूप ७ रेखाएँ, लिखाई ८ विचारो ९ विषय
सार-तत्त्व १० अर्थ की सुन्दरता ११ मोर्चेबन्दी १२ पूर्वज।

इन दमकते हुए शहरो की फरावाँ[13] मखलूक
क्यो फकत मरने की हसरत मे जिया करती है ?
ये हसीं खेत, फटा पडता है जोबन जिनका
किसलिए इनमे फकत भूख उगा करती है

यह हर इक सिम्त पुर-असरार[14] कडी दीवारें
जल बुझे जिनमे हजारो की जवानी के चिराग
यह हर इक गाम पे उन ख्वाबो की मकतलगाहे[15]
जिनके परतौ[16] से चिरागाँ हैं हजारो के दिमाग
ये भी है ऐसे कई और भी मजमू होगे
लेकिन उस शोख के आहिस्त से खुलते हुए होट
हाय उस जिस्म के कमबख्त दिलआवेज खुतूत
आप ही कहिये कही ऐसे भी अफ्सू[17] होगे
अपना मौजूए'-सुखन इनके सिवा और नही
तब्ए'-शायर[18] का वतन इनके सिवा और नही

---

१३ बहुसख्यक १४ रहस्यमय १५ बलिवेदी १६ परछाई
१७ जादू १८ कवि स्वभाव ।

हम लोग

दिल के ऐवाँ मे लिये गुलशुद[1] शम्ओ की कतार
नूरे-खुरशीद[2] से सहमे हुए उकताये हुए
हुस्ने-महबूब के सय्याल[3] तसव्वुर की तरह
अपनी तारीकी को भीचे हुए, लिपटाय हुए

गायते-सूद-ओ जिया[4], सूरते-आगाज़-ओ-मआल[5]
वही बे-सूद तजस्सुम[6] वही बेकार सवाल
मुज्महिल साअ'ते-इमरोज[7] की बे-रगी से
यादे-माजी[8] से गमी[9], दहशते-फर्दा[10] से निढाल
तश्ना[11] अफकार जो तस्कीन नही पाते हैं
सोख्ता[12] अश्क जो आँखो मे नही आते हैं
इक कडा दर्द कि जो गीत मे ढलता ही नही
दिल के तारीक शिगाफो[13] से निकलता ही नही
और इक उलझी हुई मौहूम सी दरमा[14] की तलाश
दस्त-ओ जिंदाँ[15] की हवस, चाके-गरीबा की तलाश

---

१ बुझी हुई २ सूरज की रोशनी ३ बहती हुई ४ लाभ-हानि का कारण ५ आदि और अंत का स्वरूप ६ जिज्ञासा ७ वर्तमान काल ८ अतीत की याद ९ गमगीन १० भविष्य का भय ११ प्यासे १२ सूखे हुए १३ दरारो १४ सात्वना १५ जगत और बंदीगृह।

शाहराह

एक अफ़सुर्द शाहराह है दराज़[1]
दूर उफ़क पर नज़र जमाये हुए
सर्द मिट्टी पे अपने सीने के
सुरमगी[2] हुस्न को बिछाये हुए
जिस तरह कोई गमज़दा औरत
अपने वीरांकदे[3] मे मह्‌वे-खयाल
वस्ले-महबूब के तसव्वुर मे
मू-ब-मू[4] चूर, अ'ज़ो-अ'ज़ो[5] निढाल

१ लेटी हुई, लबी २ सुरमई ३ निर्जन एकांत उजड़ा घर ४ रोम-रोम ५ अंग अंग।

सियासी लीडर के नाम

सालहा-साल ये बे-आसरा, जकडे हुए हात
रात के सख्त-ओ सियह सीने मे पैवस्त रहे
जिस तरह तिनका समदर से हो सरगर्म सितेज[1]
जिस तरह तीतरी कुहसार[2] पे यलगार[3] करे
और अब रात के सगीन-ओ-सियह सीने मे
इतने घाव है कि जिस सिम्त नजर जाती है
जा ब जा नूर ने इक जाल सा बुन रक्खा है
दूर से सुब्ह की धडकन की सदा आती है
तेरा सरमाय, तिरी आस यही हात तो हैं
और कुछ है भी तिरे पास? यही हात तो हैं
तुझको मजूर नही गल्व-ए-ज़ुल्मत[4] लेकिन
तुझको मजूर है ये हाथ कलम हो जाये
और मशरिक[5] की कमीगह[6] मे धडकता हुआ दिन
रात की आहनी मय्यत[7] के तले दब जाये!

---

१ सघपरत २ पहाड ३ हमला ४ अंधेरे का प्रभुत्व ५ पूरब ६ शिकार की ताक मे छिपकर बैठने की जगह ७ लाश।

ऐ दिले-बेताब, ठहर

तीरगी[1] है कि उमडती ही चली आती है
शब की रग-रग से लहू फूट रहा हो जैसे
चल रही है कुछ इस अदाज से नब्जे-हस्ती
दोनो आलम का नश टूट रहा हो जैसे

रात का गम लहू और भी बह जाने दो
यही तारीकी तो है गाज-ए-रुखसारे-सहर[2]
सुव्ह होने ही को है, ऐ दिले-बेताब, ठहर

अभी जजीर छनकती है पसे पर्द-ए-साज[3]
मुतलक-उल-हुक्म[4] है शीराज-ए-असबाब[5] अभी
सागरे-नाब[6] मे आँसू भी ढलक जाते हैं
लग्जिशे-पा[7] मे है पाबदी-ए-आदाब[8] अभी

अपने दीवानो को दीवान तो बन लेने दो
अपने मयखानो को मयखान तो बन लेने दो
जल्द यह सतवते-असबाब[9] भी उठ जायेगी
यह गराँबारी-ए-आदाब[10] भी उठ जायेगी
ख्वाह जजीर छनकती है, छनकती ही रहे

---

१ अँधेरा २ प्रात काल के गालों की लाली ३ साज के पर्दे के पीछे ४ निरकुश ५ कारणो का क्रम ६ शराब का प्याला ७ पैरों की लडखडाहट ८ शिष्टता या व्यवस्था का प्रतिबध ९ कारणा की सत्ता १० व्यवस्था का बोध।

मिरे हमदम, मिरे दोस्त !

गर मुझे इसका यकीं हो, मिरे हमदम, मिरे दोस्त !
गर मुझे इसका यकीं हो कि तेरे दिल की थकन
तेरी आँखो की उदासी, तेरे सीने की जलन
मेरी दिलजोई, मिरे प्यार से मिट जायेगी
गर मिरा हर्फ़-तसल्ली वह दवा हो जिससे
जी उठे फिर तिरा उजडा हुआ बे-नूर दिमाग़
तेरी पेशानी से धुल जायें ये तज़लील[1] के दाग़
तेरी मदकूक[2] जवानी को शफ़ा हो जाये
गर मुझे इसका यकीं हो, मिरे हमदम, मिरे दोस्त !

रोज़-ओ-शब, शाम-ओ-सहर, मैं तुझे बहलाता रहूँ
मैं तुझे गीत सुनाता रहूँ हल्के, शीरीं
आबशारो के, बहारो के, चमनज़ारो के गीत
आमदे-सुब्ह के, महताब के, सय्यारो[3] के गीत

तुझसे मैं हुस्न-ओ-मुहब्बत की हिकायात[4] कहूँ
कैसे मगरूर हसीनाओ के बर्फ़ाब[5] से जिस्म
गर्म हाथो की हरारत मे पिघल जाते हैं
कैसे इक चेहरे के ठहरे हुए मानूस[6] नुक़ूश
देखते-देखते यकलख़्त बदल जाते हैं
किस तरह आ'रिज़े-महबूब का शफ़्फ़ाफ़ बिल्लूर[7]
यकबयक बाद-ए-अहमर[8] से दहक जाता है

---

१ अपमान २ क्षयग्रस्त ३ सितारो ४ कहानियाँ ५ [illegible]
६ परिचित ७ सुरा-पात्र ८ लाल रग की शराब ।

कैसे झुकती है सरे-शाख से खुद बर्गे-गुलाब[9]
किस तरह रात का ऐवान[10] महक जाता है
यूँ ही गाता रहूँ, गाता रहूँ, तेरी खातिर
गीत बुनता रहूँ, बैठा रहूँ, तेरी खातिर

पर मिरे गीत तिरे दुख का मदावा[11] ही नही
नग्म-ए-जर्राह नही, मूनिस-ओ-गमख्वार[12] सही
गीत नश्तर तो नहीं, मरहमे-आजार[13] सही
तेरे आजार का चार नही नश्तर के सिवा
और यह सफ्फाक[14] मसीहा मिरे कब्जे मे नही
इस जहाँ के किसी ज़ी-रूह[15] के कब्ज़े मे नही
हाँ मगर तेरे सिवा, तेरे सिवा, तेरे सिवा

---

९ गुलाब की पखडी १० महल ११ इलाज १२ दोस्त और दुख बँटाने वाला १३ कष्ट को कम करनेवाला मरहम १४ निमम १५ प्राणी, जिसके रुह हो ।

३

दस्ते - सबा

मताए'-लौह्-ओ-कलम[1] छिन गयी तो क्या गम है
कि खूने-दिल मे डुबो ली हैं उँगलियाँ मैंने
ज़बाँ पे मुह्र लगी है तो क्या, कि रख दी है
हर एक हल्क-ए-जजीर मे ज़बाँ मैंने

१ क़लम और तख्ती की पूँजी।

सुब्हे-आजादी

(अगस्त '४७)

यह दाग दाग उजाला, यह शबगजीद[1] सहर
वह इतजार था जिसका, यह वह सहर तो नही
यह वह सहर तो नही जिसकी आरजू लेकर
चले थे यार कि मिल जायेगी कही न कही
फलक के दश्त मे तारो की आखिरी मजिल
कही तो होगा शबे-सुस्तमौज का साहिल
कही तो जाके रुकेगा सफीन - ए - गमे - दिल
जवाँ लहू की पुर-असरार[2] शाहराहो से
चले जो यार तो दामन पे कितने हाथ पडे
दयारे - हुस्न की बे-सब्र ख्वाबगाहो से
पुकारती रही बाँहे, बदन बुलाते रहे
बहुत अजीज थी लेकिन रुखे-सहर की लगन
बहुत करी[3] था हसीनान ए-नूर का दामन
सुबुक-सुबुक थी तमन्ना, दबी-दबी थी थकन

सुना है हो भी चुका है फिराके-जुल्मत-ओ-नूर[4]
सुना है हो भी चुका है विसाले-मजिल-ओ-गाम[5]
बदल चुका है बहुत अह्ले-दर्द का दस्तूर
निशाते-वस्ल हलाल व अजाबे-हिज्र[6] हराम
जिगर की आग, नजर की उमग, दिल की जलन
किसी पे चार -ए-हिज्राँ[7] का कुछ असर ही नही

---

१ रात की डसी हुई २ रहस्यमय ३ निकट ४ अँधेरे और रोशनी का अलगाव ५ मजिल और क़दम का मिलन ६ विरह की मुसीबत। ७ विरह का समाधान

गज़ल

कभी-कभी याद मे उभरते है नक्शे-माज़ी मिटे मिटे से
वह आज़माइश दिल-ओ नज़र की, वह कुरबतें सी, वह फ़ासले से

कभी-कभी आरज़ू के सहरा मे आके रुकते हैं काफ़िले से
वह सारी बातें लगाव की सी, वह सारे उनवा[1] विसाल के से

निगाह-ओ-दिल को करार कैसा, निशात-ओ-गम[2] मे कमी कहाँ की
वह जब मिले है तो उनसे हर बार की है उल्फ़त नये सिरे से

बहुत गराँ है यह ऐ'शे-तनहा, कही सुबुकतर[3], कही गवारा
वह दर्दे-पिन्हाँ कि सारी दुनिया रफ़ीक[4] थी, जिसके वास्ते से

तुम्ही कहो रिंद-ओ-मुहतसिब[5] मे है आज शब कौन फ़र्क ऐसा
यह आके बैठे है मयकदे मे, वह उठके आये है मयकदे से

---

१ मिलन २ उल्लास और वेदना ३ कोमलतर ४ साथी
५ पीनेवाला और शराब पीने से रोकनेवाला।

सुब्हे-आज़ादी
(अगस्त '४७)

यह दाग-दाग उजाला, यह शबगज़ीद[१] सहर
वह इतजार था जिसका, यह वह सहर तो नही
यह वह सहर तो नही जिसकी आरज़ू लेकर
चले थे यार कि मिल जायेगी कही न कही
फलक के दश्त मे तारो की आखिरी मज़िल
कही तो होगा शबे-सुस्तमौज का साहिल
कहीं तो जाके रुकेगा सफीन - ए - गमे - दिल
जवाँ लहू की पुर-असरार[२] शाहराहो से
चले जो यार तो दामन पे कितने हाथ पडे
दयारे - हुस्न की बे-सब्र ख्वाबगाहो से
पुकारती रही बाहे, बदन बुलाते रहे
बहुत अज़ीज थी लेकिन रुखे-सहर की लगन
बहुत करी[३] था हसीनान-ए-नूर का दामन
सुबुक-सुबुक थी तमन्ना, दबी-दबी थी थकन

सुना है हो भी चुका है फिराके-ज़ुल्मत-ओ-नूर[४]
सुना है हो भी चुका है विसाले-मजिल-ओ-गाम[५]
बदल चुका है बहुत अह्ले-दर्द का दस्तूर
निशाते-वस्ल हलाल व अज़ाबे-हिज्र[६] हराम
जिगर की आग, नज़र की उमग, दिल की जलन
किसी पे चार-ए-हिज्राँ[७] का कुछ असर ही नही

---

१ रात की डसी हुई २ रहस्यमय ३ निकट ४ अँधेरे और रोशनी का अलगाव ५ मंज़िल और कदम का मिलन ६ विरह की मुसीबत।
७ विरह का समाधान

कहाँ से आई निगारे-सबा[8], किधर को गई
अभी चिरागे-सरे-रह को कुछ खबर ही नही

अभी गरानी-ए-शब मे कमी नही आई
नजाते-दीद-ओ-दिल[9] की घडी नही आई
चले चलो कि वह मजिल अभी नही आई

८ प्रात काल की सुखद हवा की सुदरी ९ आँख और दिल की मुक्ति।

लौह्-ओ-कलम

हम परवरिशे-लौह् - ओ-कलम करते रहेंगे
जो दिल पे गुज़रती है रकम करते रहेंगे
असबाबे - ग़मे - इश्क बहम[1] करते रहेंगे
वीरानी - ए - दौराँ पे करम करते रहेंगे
हा, तल्खी-ए-अय्याम[2] अभी और बढ़ेगी
हाँ, अह्ले-सितम मश्के-सितम करते रहेंगे
मंजूर यह तल्खी, यह सितम हमको गवारा
दम है तो मदावा-ए-अलम[3] करते रहेंगे
मयखाना सलामत है तो हम सुर्खी-ए-मय से
तज़ईने - दर - ओ - बामे - हरम[4] करते रहेंगे
बाकी है लहू दिल मे तो हर अश्क से पैदा
रगे - लब - ओ - रुखसारे - सनम करते रहेंगे
इक तर्जे - तगाफुल है सो वह उनको मुबारक
इक अर्ज़े - तमन्ना है सो हम करते रहेंगे

---

१ जुटाना २ दिनो की कटुता ३ दु ख का इलाज ४ मस्जिद के
र और छत की सजावट ।

न पूछ जब मे तिरा इतजार कितना है
कि जिन दिनो से मुझे तेरा इतज़ार नही
तिरा ही अ'क्स है उन अजनबी वहारो मे
जो तेरे लब, तिरे वाज़्, तेरा कनार[1] नही

सबा के हात मे नर्मी है उनके हातो की
ठहर-ठहर के यह होता है आज दिल को गुमाँ
वह हाथ ढूढ रहे है बिसाते-महफिल मे
कि दिल के दाग कहा है, नशिस्ते-दद[2] कहाँ

---

१ गा॰ २ पीडा का स्थान ।

दो आवाजें

पहली आवाज

अब सई'[1] का इमकाँ और नही, परवाज[2] का मजमू हो भी चुका
तारो पे कमदे फेंक चुके, महताब पे शबखू[3] हो भी चुका
अब और किसी फर्दा[4] के लिए इन आखो मे क्या पैमा[5] कीजे
किस ख्वाब के झूठे अफसू[6] मे तस्कीने-दिले-नादाँ कीजे
जीने के फसाने रहने दो, अब इनमे उलझकर क्या लेंगे
इक मौत का धधा बाक़ी है, जब चाहेंगे निबटा लेंगे
यह तेरा कफन, वह मेरा कफन, यह मेरी लहद, वह तेरी है

दूसरी आवाज

हस्ती की मताए'-बेपायाँ,
जागीर तिरी है न मेरी
इस बज्म मे अपनी मिशअ'ले-दिल
बिस्मिल है तो क्या दरख्शाँ है तो क्या
यह बज्म चिरागा रहती है,
इक ताक अगर वीरा है तो क्या
अफसुर्दा है गर अय्याम तिरे,
बदला नही मस्लके शाम-ओ-सहर[7]
ठहरे नही मौसमे गुल के कदम,
कायम है जमाले-शम्स-ओ-कमर[8]
आबाद है वादी ए-काकुल-ओ-लब[9],
शादाब-ओ हसी गुलगश्ते-नजर[10]

---

१ कोशिश २ उड़ान ३ रात के समय हमला ४ भविष्य ५ वादा
जादू ७ शाम और सुब्ह का रास्ता (क्रम) ८ सूरज और चांद की
दरता ९ लटो और होंटो की घाटी १० नजर का बाग मे टहलना

मक्सूम[11] है लज्जते दर्दे-जिगर,
मौजूद है ने'मते - दीद - ए - तर
इस दीद-ए-तर का शुक्र करो,
इस जौके-नजर का शुक्र करो
इस शाम-ओ सहर का शुक्र करो,
इस शम्स-ओ-कमर का शुक्र करो

पहली आवाज

—गर है यही मस्लके-शम्स-ओ कमर,
इन शम्स-ओ-कमर का क्या होगा
रा'नाई-ए-शब का क्या होगा, अंदाजे-सहर का क्या होगा
जब खूं-जिगर बर्फाब बना, जब आँखें आहनपोश हुई
इस दीद -ए-तर का क्या होगा, इस जौके नजर का क्या होगा
जब शे'र के खेमे राख हुए, नग्मों की तनाबें टूट गयी
ये साज कहाँ सर फोडेंगे, इस किल्के-गुहर[12] का क्या होगा
जब कुंजे कफस मस्कन[13] ठहरा,
और जेब-ओ गरीबाँ तौक-आ-रसन[14]
आये कि न आये मौसमे गुल, इस दर्दे-जिगर का क्या होगा

दूसरी आवाज

ये हाथ सलामत है जब तक,
इस खूं मे हरारत है जब तक
इस दिल मे सदाकत[15] है जब तक,
इस नुत्क[16] मे ताकत है जब तक
इन तौक-ओ-सलासिल का हम तुम
सिखलायेंगे शोरिशे-बरबत-ओ-नै[17]
वह शोरिश जिसके आगे जुबूं[18],
हंगाम -ए-मतबले-कैसर ओ-क[19]

११ बँटी हुई १२ मोती बिखरने वाला कलम १३ रहने की जगह १४ गर्दन का फंदा १५ सच्चाई १६ वाणी १७ नै=बाँसुरी १८ तुच्छ १९ रोम के बादशाह कैसर और ईरान के कैखसरो के नक्कारखानों का शोर।

आजाद हैं अपने फिक्र-ओ-अमल,
भरपूर खजीन[20] हिम्मत
इक उम्र है अपनी हर साअ'त,
इमरोज़ है अपना हर फर्दा
यह शाम-ओ सहर, यह शम्स-ओ-कमर,
ये अख़्तर-ओ-कौकब[21] अपने हैं
यह लौह्-ओ-कलम, यह तब्ल-ओ-अ'लम[22],
यह माल-ओ-हशम[23] सब अपने हैं

॰ भडार २१ सितारे २२ डका और झडा २३ सम्पत्ति और
कर चाकर।

दामने-यूसुफ

जान बेचने को आये तो बे-दाम बेच दी
ऐ अह्ले-मिस्र, वज़ए'-तकल्लुफ़[1] तो देखिये
इंसाफ है कि हुक्मे-अ'क़ूबत[2] से पेशतर
इक बार सू-ए-दामने-यूसुफ तो देखिये

फिर हश्र के सामाँ हुए ऐवाने-हवस मे
बैठे हैं ज़ुल-अद्ल[3], गुनहगार खड़े है
हाँ, जुर्मे-वफ़ा देखिये किस-किस पे है साबित
वह सारे ख़ताकार सरे-दार[4] खड़े है

---

१ तकल्लुफ़ का अन्दाज़ २ यातना का हुक्म।
३ इंसाफ करने वाले ४ फाँसी के तख़्ते पर।

तौक-ओ-दार का मौसम

रविश-रविश है वही इंतजार का मौसम
नही है कोई भी मौसम, बहार का मौसम
गरां है दिल पे गमे-रोजगार का मौसम
है आजमाइशे - हुस्ने - निगार[1] का मौसम
खुशा[2] नज्जार - ए - रुखसारे-यार की साअ'त
खुशा करारे - दिले - बेकरार[४] का मौसम
हदीसे-बाद -ओ-साकी[3] नही तो किस मसरफ
खिरामे - अब्रे - सरे - कोहसार[4] का मौसम
नसीब सुहबते-यारा नही तो क्या कीजे
यह रक्से-साय -ए-सर्व-ओ-चिनार का मौसम
ये दिल के दाग तो दुखते थे यूँ भी पर कम-कम
कुछ अबके और है हिज्राने-यार का मौसम
यही जुनू का, यही तौक-ओ-दार[6] का मौसम
यही है जब्र, यही इख्तियार का मौसम
कफस है बस मे तुम्हारे, तुम्हारे बस मे नही
चमन मे आतिशे-गुल के निखार का मौसम
सबा की मस्तखिरामी तहे - कमद[7] नही
असीरे-दाम[8] नही है बहार का मौसम
बला से हमने न देखा तो और देखेंगे
फरोगे - गुलशन - ओ - सूरते-हजार का मौसम

---

१ प्रेमिका के सौंदय की परीक्षा २ धन्य है ३ शराब और साकी का जिक्र ४ पहाड पर बादलों का चलना ५ सर्व और चिनार के पेडों की परछाइयो का नाचना ६ गले का फदा और फाँसी ७ फदे मे ८ जाल म फँसा हुआ।

तिरा जमाल निगाहो मे लेके उट्ठा हूँ
निखर गई है फज़ा तेरे पैरहन की सी
नसीम मेरे शबिस्ताँ से होके आई है
मेरी सहर मे महक है तिरे बदन की सी

सरे-मकतल

कहाँ है मंजिले-राहे-तमन्ना हम भी देखेंगे
यह शब हम पर भी गुजरेगी, यह फर्दा हम भी देखेंगे
ठहर ऐ दिल, जमाले रू-ए-जेबा[1] हम भी देखेंगे
ज़रा सैकल[2] तो हो ले तश्नगी बाद गुसारो की
दबा रखेंगे कब तक जोशे-सहबा हम भी देखेंगे
उठा रखेंगे कब तक जाम-ओ मीना हम भी देखेंगे
सला[3] आ तो चुके महफिल मे उस कू-ए-मलामत[4] मे
किसे रोकेगा शोरे-पदे-बेजा[5] हम भी देखेंगे
किसे है जाके लौट आने का यारा हम भी देखेंगे
चले है जान-ओ-ईमाँ आजमाने आज दिलवाले
वह लायें लश्करे-अगयार-ओ-आ'दा[6] हम भी देखेंगे
वह आयें तो सरे-मकतल[7], तमाशा हम भी देखेंगे
यह शब की आखिरी साअ'त गराँ कैसी भी हो हमदम
जो इस साअ'त मे पिन्हाँ है उजाला हम भी देखेंगे
जो फर्के-सुब्ह[8] पर चमकेगा तारा हम भी देखेंगे

---

१ सुन्दर मुखड़े का रूप २ तेज, धारदार ३ आवाज़ ४ निंदा गली ५ अनुचित उपदेश का शोर ६ दुश्मन की फौज ७ क़त्ल करने की जगह पर ८ सुब्ह का माथा।

ग़ज़ल

तुम आये हो न शबे-इंतजार गुजरी है
तलाश में है सहर बार-बार गुजरी है

जुनूं में जितनी भी गुज़री ब-कार गुज़री है
अगरचे दिल पे खराबी हज़ार गुज़री है

हुई है हजरते-नासह से गुफ्तगू जिस शब
वह शब जरूर सरे-कू ए-यार[1] गुजरी है

वह बात सारे फसाने में जिसका जिक्र न था
वह बात उनको बहुत नागवार गुजरी है

न गुल खिले है, न उनसे मिले, न मय पी है
अजीब रंग में अबके बहार गुजरी है

चमन पे गारते-गुलची[2] से जाने क्या गुज़री
कफस से आज सबा बे-करार गुज़री है

---

१ याद की गली में २ फूल चुननेवाली की लाई हुई तबाही।

गजल

तुम्हारी याद के जब जख्म भरने लगते है
किसी बहाने तुमको याद करने लगते हैं

हदीसे-यार के उनवाँ निखरने लगते है
तो हर हरीम[1] मे गेसू सँवरने लगते है

हर अजनबी हमे महरम[2] दिखायी देता है
जो अब भी तेरी गली से गुजरने लगता है

सबा से करते है गुबत-नसीब[3] जिक्रे-वतन
तो चश्मे-सुब्ह मे आँसू उभरने लगते है

वह जब भी करते है इस नुत्क-ओ-लब[4] की बखियगरी
फजा मे और भी नग्मे बिखरने लगते है

दरे-कफस[5] पे अँधेरे की मुहर लगती है
तो 'फैज' दिल मे सितारे उतरने लगते है

---

१ घर २ परिचित ३ परदेसी ४ वाणी और होठ ५ कारागार का द्वार।

हमारे दम से है कू - ए - जुनू[1] मे अब भी खजिल[2]
अ'बा - ए - शेख - ओ - कबा - ए - अमीर - ओ - ताजे - शही
हमी से सुन्नते - मसूर - ओ - कैस[3] जिंदा है
हमी से बाकी है गुलदामनी - ओ - कजकुलही[4]

---

१ उन्माद की गली २ लज्जित ३ मसूर और मजनू की परम्परा
४ दामन म फूल होना (समृद्धि) और कुलाह का तिरछा होना (बाकपन)।

गजल

शफक[1] की राख मे जल-बुझ गया सितार-ए-शाम
शबे-फिराक[2] के गेसू फजा मे लहराये
कोई पुकारो कि इक उम्र होने आई है
फलक को काफिल-ए-रोज-ओ-शाम[3] ठहराये
यह जिद है याद हरीफाने-बाद पैमाँ[4] की
कि शब को चाँद न निकले, न दिन को अब्र आये
सबा ने फिर दरे-जिंदाँ पे आके दी दस्तक
सहर करीब है, दिल से कहो कि न घबराये

---

१ सूर्यास्त की लाली २ विरह की रात ३ दिन और रात का क्रम
४ शराब पीनेवालो के प्रतिद्वद्वी।

तुम्हारे हुस्न के नाम !

सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम
बिखर गया जो कभी रंगे-पैरहन[१] सरे-बाम[२]
निखर गयी है कभी सुब्ह, दोपहर, कभी शाम
कही जो कामते-जेबा[३] पे सज गई है कबा[४]
चमन मे सव-ओ-सनोबर सँवर गये है तमाम
बनी बिसाते गजल जब डुबो लिए दिल ने
तुम्हारे साय-ए-रुखसार-ओ-लब[५] मे सागर-ओ-जाम
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम

तुम्हारे हात पे है ताबिशे-हिना[६] जब तक
जहाँ मे बाकी है दिलदारी ए-उरुसे-सुखन[७]
तुम्हारा हुस्न जवाँ है तो मेहरबाँ है फलक
तुम्हारा दम है तो दमसाज[८] है हवा-ए-वतन
अगरच तग है औकात, सख्त हैं आलाम
तुम्हारी याद से शीरी है तल्खी-ए-अय्याम[९]
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम

---

१ वस्त्रो का रग २ अटारी पर ३ आकर्षक क़द ४ चोगा ५ गाल और होठ की परछाइ ६ मेहँदी की दमक ७ कविता की दुल्हन की रसिकता ८ मित्र, समर्थक ९ जीवन की कटुता ।

तराना

दरबारे-वतन मे जब इक दिन सब जानेवाले जायेंगे
कुछ अपनी सजा को पहुँचेंगे कुछ अपनी जजा[1] ले जायेंगे
ऐ खाकनशीनो, उठ बैठो, वह वक्त करीब आ पहुँचा है
जब तख्त गिराये जायेंगे, जब ताज उछाले जायेंगे
अब टूट गिरेंगी जंजीरे, अब जिंदानो[2] की खैर नही
जो दरिया झूम के उट्ठे है, तिनको से न टाले जायेंगे
कटते भी चलो, बढते भी चलो, बाजू भी बहुत हैं, सर भी बहुत
चलते भी चलो कि अब डेरे मजिल ही पे डाले जायेंगे
ऐ जुल्म के मातो, लब खोलो, चुप रहनेवालो, चुप कब तक
कुछ हश्र तो उनसे उट्ठेगा, कुछ दूर तो नाले जायेंगे

---

१ पुरस्कार २ जेलखाना।

ग़ज़ल

इ'ज्ज़े-अह्ले-सितम[1] की बात करो
इ'श्क़ के दम-क़दम की बात करो
बज़्म में अह्ले तरब[2] को शरमाओ
बज़्मे - असहाबे - ग़म[3] की बात करो
बामे - सरवत[4] के ख़ुशनसीबों से
अज़मते - चश्मे - नम[5] की बात करो
है वही बात यूं भी और यूं भी
तुम सितम या करम की बात करो
ख़ैर हैं अह्ले - दैर जैसे हैं
आप अह्ले - हरम की बात करो
हिज्र की शब तो कट ही जायेगी
रोज़े - वस्ले - सनम[6] की बात करो
जान जायेंगे जानने वाले
'फ़ैज़' फ़रहाद-ओ-जम[7] की बात करो

१ अत्याचार करनेवालों की बेबसी २ सुखी लोग ३ दुखी लोगों की दुनिया ४ समृद्धि का महल ५ भीगी आँखों की महानता ६ प्रिय मिलन का दिन ७ फ़रहाद और बादशाह जमशेद।

नज्रे सौदा[1]

फ़िक्रे-दिलदारी ए-गुलज़ार[2] करूँ या न करूँ
ज़िक्रे मुर्गाने-गिरफ्तार[3] करूँ या न करूँ
क़िस्स -ए-साज़िशे अग़यार कहूँ या न कहूँ
शिकव -ए-यारे-तरहदार करूँ या न करूँ
जाने क्या वज़्अ' है अब रस्मे-वफ़ा की, ऐ दिल
वज़ए'-दैरीना[4] पे इसरार[5] करूँ या न करूँ
जाने किस रंग मे तफ़सीर[6] करें अह्ले हवस
मदहे-ज़ुल्फ़-ओ-लब-ओ-रुख़सार[7] करूँ या न करूँ
यूँ बहार आई है इमसाल कि गुलशन मे सबा
पूछती है गुज़र इस बार करूँ या न करूँ
गोया इस सोच मे है दिल मे लहू भरके गुलाब
दामन-ओ-जेब को गुलनार करूँ या न करूँ
है फ़कत मुर्गे-ग़ज़लख्वाँ[8] कि जिसे फ़िक्र नहीं
मो'तदिल[9] गर्मी-ए-गुफ्तार करूँ या न करूँ

---

१ सौदा को अर्पित २ चमन के आकर्षण की चिन्ता ३ पिंजरे मे बन्द पंछियों की चर्चा ४ पुरानी पद्धति ५ आग्रह ६ व्याख्या ७ बालो, होंठो और गालो की प्रशंसा ८ गाता हुआ पंछी ९ जिसमे सर्दी-गर्मी बराबर हो, सतुलित ।

दो इ'श्क

(१)

ताज हैं अभी याद मे ऐ साकी-ए-गुलफाम[१]
वह अक्से-रुखे-यार से महके हुए अय्याम[२]
वह फूल सी खिलती हुई दीदार की साअत
वह दिल सा धडकता हुआ उम्मीद का हगाम

उम्मीद कि लो जागा गमे दिल का नसीबा
लो शौक की तरसी हुई शब हो गई आखर
लो डूब गये दद के बे-ख्वाब सितारे
अब चमकेगा बे-सब्र निगाहो का मुकद्दर

इस बाग से निकलेगा तिरे हुस्न का खुरशीद[३]
उस कुज से फूटेगी किरन रगे-हिना की
इस दर से बहेगा तिरी रफ्तार का सीमाब[४]
उस राह पे फूलेगी शफक[५] तेरी कबा की

फिर देखे है वह हिज्र के तपते हुए दिन भी
जब फिक्रे-दिल-ओ जाँ मे फुगा[६] भूल गयी है
हर शब वह सियाह बोझ कि दिल बैठ गया है
हर सुब्ह की लौ तीर सी सीने मे लगी है

---

१ फूल जसा साकी २ दिन ३ सूरज ४ पारा ५ सूर्यास्त की लाली ६ विलाप।

तनहाई मे क्या-क्या न तुझ याद किया है
क्या-क्या न दिले-जार ने ढूढी है पनाहे
आँखो से लगाया है कभी दस्ते-सबा को
डाली है कभी गर्दने-महताब मे बाँहे

(२)

चाहा है उसी रग मे लैला ए-वतन को
तडपा है उसी तौर से दिल उसकी लगन मे
ढूढी है यू ही शौक ने आसाइशे-मजिल[७]
रुखसार के खम मे कभी काकुल[८] की शिकन मे

इस जाने-जहाँ को भी यू ही कल्ब-ओ-नजर[९] ने
हँस-हँस के सदा दी, कभी रो-रो के पुकारा
पूरे किये सब हर्फे-तमन्ना के तकाजे
हर दद को उजियाला, हर इक गम को सँवारा

वापस नही फेरा कोई फरमान जुनू का
तनहा नही लौटी कभी आवाज जरस[१०] की
खैरीयते-जा, राहते तन,[११] सेहते-दामाँ[१२]
सब भूल गई मसलहतें अह्ले-हवस की

इस राह मे जो सब पे गुजरती है वह गुजरी
तनहा पसे-जिंदाँ कभी रुस्वा[१३] सरे-बाजार
गरजे हैं बहुत शख सरे-गोश-ए-मिंबर[१४]
कडके हैं बहुत अह्ले हुकम[१५] बर-सरे-दरबार[१६]

---

७ मजिल का सहारा ८ केश ९ हृदय और दृष्टि १० घटा
११ शरीर का सुख १२ दामन का सुरक्षित रहना। १३ बदनाम
१४ मच पर से १५ अधिकारी १६ दरबार मे

छोडा नही गरो ने कोई नावके-दुश्नाम[१७]
छूटी नही अपनो से कोई तर्जे-मलामत[१८]
इस इ'श्क न उस इ'श्क पे नादिम[१९] है मगर दिल
हर दाग है इस दिल मे ब-जुज दागे-नदामत[२०]

१७ गाली का तीर १८ निंदा का ढग १९ लज्जित २० लज्जा का कलक।

ग़ज़ल

गरानी ए-शबे-हिज्राँ[1] दुचद[2] क्या करते
इ'लाजे - दद तिरे ददमद क्या करते

वही लगी, है जो नाजुक मुकाम दिल के
यह फर्क दस्ते अ'दू के गजद[3] क्या करते

जगह जगह पे थे नासह तो कू-ब-कू दिलबर
इन्हें पसद, उन्हें नापसद क्या करते

जिन्हें खबर थी कि शर्ते नवागरी[4] क्या है
वह खुशनवा गिल-ए-कैद-ओ-बद क्या करते

गुलू-ए-इ'श्क को दार-ओ-रसन[5] पहुँच न सके
तो लौट आये तिरे सरबलद,[6] क्या करते

---

१ विरह की रात का बोझ २ दुगना ३ भाला ४ गाने की शर्तें
५ फासी का फन्दा ६ स्वाभिमानी, सर ऊँचा रखनेवाले।

गज़ल

वही है दिल के करईं[१] तमाम कहते हैं
वह इक ख़लिश कि जिसे तिरा नाम कहते हैं
तुम आ रहे हो कि बजती है मेरी जंजीरें
न जाने क्या मिरे दीवार-ओ-बाम कहते हैं
यही कनारे-फ़्लक[२] का सियहतरीन गोश
यही है मतलए'-माहे-तमाम[३] कहते हैं
पियो कि मुफ्त लगा दी है ख़ूने-दिल की कशीद
गराँ है अबके मये-लाल फाम कहते हैं
फ़कीहे-शहर[४] से मय का जवाज क्या पूछे
कि चाँदनी को भी हज़रत हराम कहते हैं
नवा-ए-मुर्ग़[५] को कहते है अब जियाने-चमन[६]
खिले न फूल इसे इन्तजाम कहते हैं
कहो तो हम भी चले 'फ़ैज़', अब नही सरे-दार
वह फ़र्क़-मतब-ए-ख़ास-ओ-आम कहते हैं

---

१ निकट २ आसमान की गोद ३ पूरे चांद की पृष्ठभूमि ४ शहर मे धमशास्त्र का ज्ञाता ५ चिडियों का गाना ६ बाग की क्षति ।

गजल

रग पैराहन का, खुशबू जुल्फ लहराने का नाम
मौसमे-गुल है तुम्हारे बाम पर आने का नाम
दोस्तो उस चश्म-ओ लब की कुछ कहो जिसके वगैर
गुलसिताँ की बात रगी है न मयखाने का नाम
फिर नजर मे फूल महके, दिल मे फिर शमएँ जली
फिर तस्व्वुर ने लिया उस बज्म मे जाने का नाम
दिल्वरी ठहरा ज़बाने-खल्क[1] खुलवाने का नाम
अब नही लेते परी-रू[2] जुल्फ बिखराने का नाम
अब किसी लैला को भी इकरारे-महबूबी नही
इन दिनो बदनाम है हर एक दीवाने का नाम
मुहतसिब की खैर, ऊँचा है उसी के फैज से
रिंद का, साकी का, मय का, खुम का, पैमाने का नाम
हम से कहते हैं चमनवाले, गरीबाने-चमन[3]
तुम कोई अच्छा-सा रख लो अपने वीराने का नाम
'फैज़' उनको है तकाज़ा-ए-वफा हम से जिन्हे
आशना के नाम से प्यारा है बेगाने का नाम

१ दुनिया की ज़बान २ परिया जैसे चेहरेवाले ३ जो चमन से बाहर चले गये।

नौह

मुझको शिकवा है मिरे भाई कि तुम जाते हुए
ले गये साथ मेरी उम्रे-गुजश्ता की किताब

उसमे तो मेरी बहुत कीमती तस्वीरे थी
उसमे बचपन था मेरा और मेरा अह्दे-शबाब

उसके बदले मे मुझे तुम दे गये जाते-जाते
अपने गम का यह दमकता हुआ खू-रग गुलाब

क्या करूँ भाई, यह एजाज[1] मैं क्यू कर पहनू
मुझसे ले लो मेरी सब चाक कमीसो का हिसाब

आखिरी बार है, लो मान लो इक यह भी सवाल
आज तक तुम से मैं लौटा नही मायूसे-जवाब[2]

आके ले जाओ तुम अपना यह दमकता हुआ फूल
मुझको लौटा दो मेरी उम्रे-गुजश्ता की किताब

१८ जुलाई, १९५२

---

१ सम्मान २ उत्तर से निराश।

ईरानी तुलबा के नाम

(जो अम्न और आजादी की जद्द-ओ-जेह्द मे काम आये)

"यह कौन सखी[1] हैं
जिनके लहू की
अशर्फिया छन-छन, छन-छन
धरती की पैहम[2] प्यासी
कशकोल[3] मे ढलती जाती है
कशकोल को भरती जाती हैं

ये कौन जवान है, अर्जे-अजम,[4]
ये लखलुट[5]
जिनके जिस्मो की
भरपूर जवानी का कुंदन
यूँ खाक मे रेज-रेज़ है
यू कूच-कूच बिखरा है
ऐ अर्जे-अजम, ऐ अर्जे-अजम,
क्यूँ नोच के हँस-हँस फेंक दिये
इन आँखो ने अपने नीलम
इन होंटो ने अपने मर्जान[6]
इन हाथो की बेकल चाँदी
किस काम आयी, किस हाथ लगी ?"
"ऐ पूछने वाले परदेसी,
ये तिफ्ल-ओ-जवाँ
उस नूर के नौरस[7] मोती है
उस आग की कच्ची कलियाँ हैं

१ दानी २ निरंतर ३ भीख का पात्र ४ ईरान ५ लाखो लुटाने वाले ६ मूगा ७ नये।

से जुल्म की अंधी रातों में फूटा
सुब्हे-बगावत का गुलशन
और सुब्ह हुई मन-मन, तन-तन
इन जिस्मो का चाँदी-सोना
इन चेहरो के नीलम-मर्जा
जगमग, जगमग, रख्शाँ-रख्शा[८]
जो देखना चाहे परदेसी
पास आये देखे जी भरकर
यह ज़ीस्त[९] की रानी का झूमर
यह अम्न की देवी का कगन।"

---

८ दमकते हुए ९ जिन्दगी।

ग़ज़ल

दिल मे अब यू तिरे भूले हुए गम आते है
जैसे बिछुडे हुए का'बे मे सनम[१] आते है

एक-इक करके हुए जाते है तारे रोशन
मेरी मञ्ज़िल की तरफ तेरे कदम आते है

रक्से-मय[२] तेज़ करो साज की लय तेज करो
सू-ए मयख़ान[३] सफीराने-हरम[४] आते है

कुछ हमी को नही एहसान उठाने का दिमाग
वह तो जब आते हैं माइल-ब-करम[५] आते है

और कुछ देर न गुज़रे शबे-फुरकत[६] से कहो
दिल भी कम दुखता है, वह याद भी कम आते है

---

१ मूर्तियाँ २ मदिरा का नृत्य ३ मयखाने की तरफ ४ मस्जिद के दूत ५ कृपा करने को तयार ६ विरह की रात ।

अगस्त १९५२

रोशन कहीं बहार के इमकाँ हुए तो हैं
गुलशन में चाक चन्द गरेबाँ हुए तो है
अब भी खिजाँ का राज है लेकिन कहीं-कहीं
गोशे चमन-चमन मे गज़लख्वाँ हुए तो है
ठहरी हुई है शब की स्याही वहीं मगर
कुछ कुछ सहर के रंग परअफ्शाँ[1] हुए तो है
उनमे लहू जला हो हमारा कि जान-ओ-माल
महफिल मे कुछ चिराग फरोज़ाँ[2] हुए तो है
हाँ कज[3] करो कुलाह कि सब-कुछ लुटाके हम
अब बेनियाजे-गर्दिशे-दौराँ[4] हुए तो है
अहले-कफस की सुब्हे चमन मे खुलेगी आख
बादे-सबा से वादा-ओ-पैमाँ हुए तो है
है दश्त अब भी दश्त मगर खूने-पासे 'फैज'
सैराब चन्द खारे-मुगीलाँ[5] हुए तो है

१ उजागर २ प्रकाशमान ३ टेढ़ी ४ समय की गति के प्रति उद
५ बबूल के काँटे।

निसार मै तिरी गलियो पे

निसार मैं तिरी गलियो पे ऐ वतन, कि जहाँ
चली है रस्म कि कोई न सर उठा के चले
जो कोई चाहनेवाला तवाफ[1] को निकले
नजर चुरा के चले, जिस्म-ओ-जाँ बचा के चले
है अह्ले-दिल के लिए अब यह नज्मे-बस्त-ओ-कुशाद[2]
कि सग-ओ खिश्त[3] मुकय्यद[4] है और सग[5] आजाद
बहुत है जुल्म के दस्ते-बहान-जू[6] के लिए
जो चद अह्ले-जुनूँ तेरे नामलेवा हे
बने हैं अह्ले-हवस, मुद्दई भी, मुसिफ भी
किसे वकील करे, किससे मुसिफी चाहे
मगर गुजारनेवालो के दिन गुजरते हैं
तिरे फिराक मे यू सुब्ह-ओ-शाम करते है
बुझा जो रोजने जिदाँ तो दिल यह समझा है
कि तेरी माँग सितारो मे भर गयी होगी
चमक उठे है सलासिल[7] तो हमने जाना है
कि अब सहर तिरे रुख पे बिखर गई होगी
गरज तसव्वुरे-शाम-ओ-सहर मे जीते हैं
गिरफ्ते-साय-ए-दीवार-ओ-दर मे जीते है
यू ही हमेशा उलझती रही है जुल्म से खल्क
न उनकी रस्म नई है, न अपनी रीत नई
यू ही हमेशा खिलाये है हमने आग मे फूल
न उनकी हार नई है, न अपनी जीत नई
इसी सबब से फलक का गिल नही करते
तिरे फिराक मे हम दिल बुरा नही करते

१ परिक्रमा २ बँधने और खुलने की व्यवस्था ३ ईंट पत्थर ४ कैद
५ कुत्ते ६ बहाना ढूढनेवाले हाथ ७ जजीरें।

गज़ल

अब वही हर्फ़े-जुनूं[१] सबकी जबां ठहरी है
जो भी चल निकली है, वह बात कहां ठहरी है
आज तक शेख के इकराम[२] मे जो शै थी हराम
अब वही दुश्मने-दीं[३] राहते-जां[४] ठहरी है
है खबर गम कि फिरता है गुरेज़ां[५] नासह
गुफ्तगू आज सरे-कू-ए-बुतां[६] ठहरी है
है वही आरिज़े-लैला,[७] वही शीरी का दहन[८]
निगहे-शौक घडी-भर को जहां ठहरी है
वस्ल की शब थी तो किस दर्ज सुबुक[९] गुज़री थी
हिज्र की शब है तो क्या सख्त गर्रा ठहरी है
इक दफअ बिखरी तो हाथ आई है कब मौजे शमीम
दिल से निकली है तो क्या लब पे फुगा ठहरी है
दस्ते-सयाद[१०] भी आजिज है कफे-गुलची[११] भी
बू-ए-गुल ठहरी न बुलबुल की जबां ठहरी है
आते-आते यूं ही दम भर को रुकी होगी बहार
जाते-जाते यू ही दम भर को खिज़ा ठहरी है
हमने जो तर्ज़े-फुगां की है कफस मे ईजाद
'फैज़' गुलशन मे वही तर्ज़े-बयां ठहरी है

---

१ उन्माद का शब्द २ अनुकपा, कृपादृष्टि ३ दीन धर्म की दुश्मन ४ प्राणो को सुख देनेवाली ५ भागा भागा ६ हसीनो की गली मे ७ लैला के गाल ८ मुह ९ हल्की १० शिकारी का हाथ ११ फूल चुननेवाले का हाथ।

शीशो का मसीहा कोई नहीं

मोती हो कि शीशा, जाम कि दुर[1]
जो टूट गया, सो टूट गया
कब अश्को[2] से जुड सकता है
जो टूट गया, सो छूट गया

तुम नाहक टुकडे चुन-चुनकर
दामन मे छुपाये बैठे हो
शीशो का मसीहा कोई नही
क्या आस लगाये बैठे हो

शायद कि इन्ही टुकडो मे कही
वह सागरे-दिल है, जिसमे कभी
सद[3] नाज से उतरा करती थी
सहबा - ए - गमे - जाना[4] की परी

फिर दुनियावालो ने तुमसे
यह सागर लेकर फोड दिया
जो मय थी वहा दी मिट्टी मे
महमान का शहपर[5] तोड दिया

ये रगी रेजे[6] हैं शायद
उन शोख बिलूरी सपनो के
तुम मस्त जवानी मे जिनसे
खिल्वत[7] को सजाया करते थे

१ मोती २ आसुओ ३ सौ ४ प्रेमिका के विरह की मदिरा ५ डैना
सबसे मुख्य पख ६ कण ७ एकात।

नादारी, दफ्तर, भूख और गम
उन सपनो से टकराते थे
बेरह्म था चौमुख पथराव
ये काँच के ढाँचे क्या करते

या शायद इन जर्रो मे कही
मोती है तुम्हारी इज्जत का
वह जिसमे तुम्हारे इज्ज़[8] पे भी
शमशादकदो[9] ने नाज किया

उस माल की धुन मे फिरते थे
ताजिर भी बहुत, रहजन[10] भी कई
है चोरनगर, याँ मुफलिस की
गर जान बची तो आन गई

ये सागर-शीशे, ला'ल-ओ-गुहर
सालिम हो तो कीमत पाते है
यू टुकडे-टुकडे हो तो फकत
चुभते है लहू रुलवाते है

तुम नाहक शीशे चुन-चुनकर
दामन मे छुपाये बैठे हो
शीशो का मसीहा कोई नही
क्या आस लगाये बैठे हो

यादो के गरेबानो के रफू
पर दिल की गुजर कब होती है
इक बखिय उधेडा, एक सिया
यू उ'म्र बसर कब होती है

इस कारगहे-हस्ती मे जहाँ
ये सागर-शीशे ढलते है
हर शै का बदल मिल सकता है
सब दामन पुर हो सकते हैं

---

८ विनम्रता ९ सव के पेड जैसे कदवाले १० बटमार।

जो हाथ वढे यावर[11] है यहा
जो आंख उठे, वह वख्तावर[12]
यां धन-दौलत का अन्त नही
हो घात मे डाकू लाख मगर

कव लूट-झपट से हस्ती की
दूकानें खाली होती हैं
या परवत - परवत हीरे है
यां सागर - सागर मोती हैं

कुछ लोग है जो इस दौलत पर
पर्दे लटकाते फिरते हैं
हर परवत को हर सागर को
नीलाम चढाते फिरते है

११ मददगार १२ भाग्यवान।

कुछ वो भी है जो लड-भिडकर
ये पद नोच गिराते है
हस्ती के उठाईगीरो की
हर चाल उलझाये जाते है
इन दोनो मे रन पडता है
नित बस्ती-बस्ती, नगर-नगर
हर बसते घर के सीने मे
हर चलती राह के माथे पर
ये कालिख भरते फिरते है
वो जोत जगाते रहते है
ये आग लगाते फिरते है
वो आग बुझाते रहते है
सब सागर शीशे ला'ल ओ-गुहर
इस बाजी मे बद जाते है
उट्ठो सब खाली हाथो को
इस रन से बुलावे आते है

गजल

आये कुछ अब्र, कुछ शराब आये
उसके बा'द जो आये अजाब[1] आये

(कतअ)

बामे-मीना[2] से माहताब[3] उतरे
दस्ते-साकी[4] मे आफ्ताब[5] आये
हर रगे-खू मे फिर चिरागाँ हो
सामने फिर वह बे-नकाब आये

उ'म्र के हर वर्क पे दिल की नजर
तेरी मेह्र-ओ वफा[6] के बाब[7] आये

(कतअ)

कर रहा था गमे-जहाँ का हिसाब
आज तुम याद बे-हिसाब आये
न गयी तेरे गम की सरदारी
दिल मे यू रोज इनक्लाब आये

जल उठे बज्मे-गर के दर-ओ बाम
जब भी हम खानमा-खराब[8] आये

(कतअ)

इस तरह अपनी खामशी गूंजी
गोया हर सिम्त से जवाब आये
'फज' थी राह सर-ब सर मजिल
हम जहा पहुँचे कामयाब आये

---

१ मुसीबत २ सुराही के छज्जे पर से ३ चाँ ४ साकी के
५ सूरज ६ कृपा और निष्ठा ७ अध्याय ८ जिसका घर उजड गय

नज्रे-गालिब[1]

किस गुमाँ[2] प तवक्को'[3] जियाद रखते है
फिर आज कू-ए-बुताँ[4] का इराद रखते हैं
बहार आयेगी जब आयेगी, यह शर्त नही
कि तश्न काम[5] रहे गरच बाद रखते है
तिरी नजर का गिला, क्या ? जो है गिला दिल को
तो हमसे है कि तमन्ना जियाद रखते है
नही शराब से रंगी ता गर्के-खूं[6] है कि हम
खयाले - वज़ए - कमीस - ओ - लबाद[7] रखते हैं
गमे-जहाँ हो, गमे-यार हो कि तीरे-सितम
जो आये, आये कि हम दिल कुशाद[8] रखते है
जवाबे-वाइ'ज-ज़ाबुक ज़बाँ[9] मे 'फ़ैज' हमे
यही बहुत है जो दो हर्फ़े-साद रखते है

---

१ गालिब को समर्पित २ भ्रम ३ आशा ४ हसीनो की गली ५ प्यासा ६ खून मे डूबे ७ कमीज और लबादे की शक्ल के अंतर का ध्यान ८ चौड़ा, बडा ९ पैनी जबानवाले वाइ'ज का जवाब।

गज़ल

तेरी सूरत जो दिल्नशी की है
आशन शक्ल हर हसी की है
हुस्न से दिल लगाके हस्ती की
हर घडी हमने आतशी[1] की है
सुब्हे-गुल[2] हो कि शामे-मयखान
मदह उस रू-ए-नाज़नी की है
शेख से बे-हिरास[3] मिलते है
हमने तौब अभी नही की है
जिक्रे-दोज़ख, बयाने-हूर-ओ-कुसूर[4]
बात गोया यही कही की है
अश्क तो कुछ भी रग ला न सके
खून से तर आज आस्ती की है
कैसे मानें हरम के सहल-पसन्द
रस्म जो आ'शिको के दी[5] की है
'फैज' औजे-खयाल[6] से हमने
आसमाँ सिध की जमी की है

१ आग जसी जलती हुई २ फूल (बाग) की सुबह ३ नि
४ सुन्दरियो और महलो की चर्चा ५ दीन=धर्म ६ कल्पना की उडान

जिंदाँ की एक शाम

शाम के पेच-ओ-ख़म[1] सितारों से
ज़ीन-ज़ीन उतर रही है रात
यूँ सबा पास से गुज़रती है
जैसे कह दी किसी ने प्यार की बात
सह्‌ने-जिंदाँ[2] के बे-वतन अशजार[3]
सरनिगूँ[4] मह्‌व[5] हैं बनाने मे
दामने आसमाँ पे नक्श-ओ-निगार

शान-ए बाम[6] पर दमकता है
मेह्रबाँ चाँदनी का दस्ते-जमील[7]
खाक मे घुल गयी है आबे-नजूम
नूर मे घुल गया है अ'र्श[8] का नील
सब्ज गोशो मे नीलगूँ साये
लहलहाते है जिस तरह दिल मे
मौजे-दर्दे फिराके-यार[9] आये

दिल से पैहम खयाल कहता है
इतनी शीरी है जिंदगी इस पल
जुल्म का ज़ह्‌र घोलनेवाले
कामराँ[10] हो सकेगे आज न कल
जल्वगाहे-विसाल[11] की शम्एँ
वह बुझा भी चुके अगर तो क्या
चाँद को गुल करें, तो हम जानें

---

१ टेढे-मेढ़े २ जेल का आँगन ३ पेड ४ नतमस्तक ५ व्यस्त ६ कोठे का कंधा ७ सुंदर हाथ ८ आसमान ९ प्रेमिका के विरह की पीडा की लहर १० सफल ११ जहाँ प्रणय की लीला होती है।

ज़िंदाँ की एक सुब्ह

रात बाकी थी अभी जब सरे-बाली[1] आकर
चाँद ने मुझसे कहा, "जाग सहर आई है!
जाग, इस शब जो मये-ख्वाब[2] तिरा हिस्सा थी
जाम के लब से तहे-जाम उतर आई है।"
अक्से-जानाँ[3] को विदा' करके उठी मेरी नजर
शब के ठहरे हुए पानी की सियह चादर पर
जा-ब-जा रक्स मे आने लगे चादी के भँवर
चाँद के हाथ से तारो के कँवल गिर-गिरकर
डूबते, तैरते, मुरझाते रहे, खिलते रहे
रात और सुब्ह बहुत देर गले मिलते रहे

सह्ने-जिंदाँ मे रफीको[4] के सुनहरे चेहरे
सतहे-जुल्मत से दमकते हुए उभरे कम-कम
नीद की ओस ने उन चेहरो से धो डाला था
देस का दर्द, फिराके-रुखे-महबूब[4] का गम
दूर नौबत[5] हुई, फिरने लगे बेजार क़दम
ज़र्द फाको के सताये हुए पहरवाले
अह्ले-जिंदा के गजबनाक खरोशाँ[6] नाले
जिनकी बाँहो मे फिरा करते है बाहे डाले
लज्जते-ख्वाब[8] से मखमूर[9] हवाएँ जागी
जेल की जह्र भरी चूर सदाएँ[10] जागी
दूर दरवाज खुला कोई, कोई बन्द हुआ

---

१ सिरहाने २ स्वप्न की मदिरा ३ प्रेमिका का प्रतिबिंब (कल्पन
४ साथियो ५ घटा बजाना ६ तेज़ ७ रोना ८ स्वप्न का आनन्द ९ न
मे चूर १० आवाजें।

दूर मचली कोई जजीर, मचलके रोई
दूर उतरा किसी ताले के जिगर मे खजर
सर पटकने लगा रह-रहके दरीच[११] कोई
गोया फिर ख्वाब से बेदार हुए दुश्मने-जाँ
सग-ओ-फौलाद से ढाले जिन्नाते-गराँ[१२]
जिनके चगुल मे शब-ओ-रोज हैं फरियादकुना[१३]
मेरे बेकार शब-ओ-रोज की नाजुक परियाँ
अपने शहपूर[१४] की रह देख रही है ये असीर
जिसके तरकश मे हे उम्मीद के जलते हुए तीर
(नातमाम)

११ झराखा, खिडकी १२ बडे बडे पिशाच १३ फरियाद करते हुए
१४ शाहजादा।

याद

दश्ते-तनहाई[1] मे ऐ जानें-जहाँ लरजाँ[2] हैं
तेरी आवाज के साये, तिरे होंटो के सराब[3]
दश्ते-तनहाई मे, दूरी के खस-ओ-खाक[4] तले
खिल रहे है तिरे पहलू के समन[5] और गुलाब

उठ रही है कही कुरबत[6] से तिरी साँस की आँच
अपनी खुशबू मे सुलगती हुई मद्धम-मद्धम
दूर—उफक पार, चमकती हुई, कतर-कतर
गिर रही है तिरी दिलदार नजर की शबनम

इस कदर प्यार से, ऐ जाने-जहाँ रक्खा है
दिल के रुखसार पे इस वक्त तिरी याद ने हाथ
यू गुमाँ होता है, गरच है अभी सुब्हे-फिराक,[7]
ढल गया हिज्र[8] का दिन, आ भी गई वस्ल की रात

---

१ एकात का जगल २ कम्पित ३ मृगतृष्णा ४ घास और धूल
५ चमेली ६ निकटता ७ विरह का सवेरा ८ विरह।

गजल

यादे-ग़िजाल चश्मा,[१] जिक्रे-समन इ'ज़ारा[२]
जब चाहा कर लिया है कुंजे-कफस बहाराँ

आँखो मे दर्दमन्दी, होंटो पे उज्रख्वाही[३]
जानान - बार आई शामे - फिराके - याराँ

नामूसे-जान-ओ-दिल[४] की बाजी लगी थी वरन
आसाँ न थी कुछ ऐसी राहे-वफाशआ'राँ[५]

मुजरिम हो ख्वाह कोई, रहता है नासहो का
रू-ए-सुखन[६] हमेशा सू - ए - जिगरफिगाराँ[७]

है अब भी वक्त जाहिद,[८] तरमीमे-जुह्द[९] कर ले
सू - ए - हरम चला है अंबोहे - बाद ख्वाराँ[१०]

शायद करीब पहुँची सुब्हे-विसाल[११] हमदम
मौजे-सबा लिये है खुशबू - ए - खुशकनाराँ[१२]

है अपनी किश्ते-वीराँ[१३] सरसब्ज इस यकीं से
आयेंगे इस तरफ भी इक रोज अब्र-ओ-बाराँ[१४]

आयेगी 'फैज' इक दिन बादे-बहार लेकर
तस्लीमे - मयफरोशा,[१५] पैगामे - मयगुसाराँ[१६]

---

१ मृगनयनियो की याद २ चमेली के फूल जैसे गालवालो की चर्चा ३ विवशता प्रकट करना ४ जान और दिल की मर्यादा ५ वफा करनवालो का रास्ता ६ बात की दिशा ७ घायल जिगरवालो की तरफ ८ तपस्वी, विरक्त ९ वैराग्य मे सुधार १० शराबियो की भीड ११ मिलन प्रभात १२ सुन्दर गोदवालो की सुगन्ध १३ उजडी क्यारी १४ बादल और बारिश १५ शराब बेचनेवालों का सलाम १६ शराब पीनेवालों का सन्देश।

गजल

कर्जे-निगाहे-यार अदा कर चुके है हम
सब कुछ निसारे-राहे-वफा कर चुके हैं हम

कुछ इम्तहाने-दस्ते जफा कर चुके है हम
कुछ उनकी दस्तरस[1] का पता कर चुके हैं हम

अब एहतियात की कोई सूरत नही रही
कातिल से रस्म-ओ-राह सिवा[2] कर चुके हैं हम

देखे है कौन-कौन, जरूरत नही रही
कू-ए-सितम मे सबको खफा कर चुके है हम

अब अपना इख्तियार है चाहे जहाँ चलें
रहबर से अपनी राह जुदा कर चुके हैं हम

उनकी नजर मे क्या करें फीका है अब भी रग
जितना लहू था सर्फे-कबा[3] कर चुके हैं हम

कुछ अपने दिल की खू[4] का भी शुक्रान चाहिये
सौ बार उनकी खू का गिला कर चुके हैं हम

१ पहुँच २ अधिक ३ वस्त्र पर व्यय ४ स्वभाव, आदत ।

मुलाकात

(१)

यह रात उस दर्द का शजर[1] है
जो मुझसे तुझसे अजीमतर है
अजीमतर है कि इसकी शाखो
मे लाखो मिशअ'ल-ब-कफ़[2] सितारो
के कारवाँ घिर के खो गये है
हज़ार महताब इसके साये
मे अपना सब नूर खो गये है

यह रात उस दर्द का शजर है
जो मुझसे तुझसे अजीमतर है
मगर इसी रात के शजर से
ये चद लम्हो के जर्द पत्ते
गिरे है और तेरे गेसुओ[3] मे
उलझके गुलनार हो गये है
इसी की शबनम से खामशी के
ये चद कतरे तिरी जबी[4] पर
बरस के हीरे पिरो गये है

(२)

बहुत सियह है यह रात लेकिन
इसी सियाही मे रू-नुमा[5] है
वह नह्‌रे-खू जो मिरी सदा है

१ पेड़ २ हाथ मे मशालें लिये हुए ३ बालो ४ माथा
५ प्रकट होना, सूरत दिखाना ।

इसी के साये मे नूरगर[6] है
वह मौजे-जर[7] जो तिरी नजर है

वह गम जो इस वक्त तेरी बाँहो
के गुलसिताँ मे सुलग रहा है

(वह गम जो इस रात का समर[8] है)
कुछ और तप जाये अपनी आहो
की आच मे तो यही शरर[9] है

हर इक सियह शाख की कमाँ से
जिगर मे टूटे हैं तीर जितने
जिगर से नोचे हैं और हर इक
का हमने तेश बना लिया है

(३)

अलम-नसीबो,[10] जिगर-फिगारो
की सुब्ह अफलाक[11] पर नही है
जहा पे हम तुम खडे है दोनो
सहर का रोशन उफक यही है
यही पे गम के शरार[12] खिलकर
शफक[13] का गुलज़ार[14] बन गये है
यही पे कातिल दुखो के तेशे
कतार-अदर-कतार किरनो
के आतशी हार बन गये हैं

६ आलोकित ७ सोने की लहर ८ फल ९ चिगारी १० जिसके भा
मे दुख है ११ आसमान १२ चिनगारियाँ १३ सूर्यास्त की ला
१४ बाग।

यह गम जो इसे रात ने दिया है
यह गम सहर का यकीं बना है
यकीं जो गम से करीमतर[१५] है
सहर जो शब से अजीमतर है

मांटगोमरी जेल
११ अक्तूबर—४ नवंबर, १९५३

१५ अधिक दयालु

४

ऐ साकिनाने-कुंजे-कफस। सुब्ह को सबा
सुनती ही जायेगी सू-ए-गुलजार, कुछ कहो

—सौदा

ग़ज़ल

शेख साहब से रस्म-ओ राह न की
शुक्र है जिंदगी तबाह न की

तुझको देखा तो सेर-चश्म[1] हुए
तुझको चाहा तो और चाह न की

तेरे दस्ते सितम का इज्ज[2] नही
दिल ही काफिर था जिसने आह न की

थे शबे-हिज्र काम और बहुत
हमने फिक्रे-दिले-तबाह न की

कौन कातिल बचा है शहर मे 'फ़ज़'
जिससे यारो ने रस्म-ओ-राह न की

---

१ आंखें तृप्त होना २ कमजोरी

गजल

सब कत्ल होके तेरे मुकाबिल से आये है
हम लोग सुख-रू[१] हैं कि मजिल से आये हैं

शम्ए-नजर, खयाल के अजुम[२], जिगर के दाग
जितने चिराग हैं तिरी महफिल से आये हैं

उठकर तो आ गये है तिरी बज्म से मगर
कुछ दिल ही जानता है किस दिल से- आये हैं

हर इक कदम अजल[३] था, हर इक गाम जिदगी
हम घूम-फिर के कूच-ए-कातिल से आये हैं

बादे-खिजाँ[४] का शुक्र करो 'फैज' जिसके हाथ
नामे[५] किसी बहार-शमाइल[६] के आये है

---

१ सफल, विजयी २ सितारे ३ मौत ४ पतझड की
५ चिट्ठियाँ ६ बहार जसे स्वभाववाला

ऐ हबीबे-अ'बरदस्त !

[एक अजनबी खातून के नाम
खुशबू का तोहफा वसूल होने पर]

किसी के दस्ते-इ'नायत ने कुजे-जिदां[1] मे
किया है आज अजब दिलनवाज बदोबस्त
महक रही है फज़ा जुल्फे-यार की सूरत
हवा है गर्मी ए-खुशबू से इस तरह सरमस्त
अभी-अभी गुजरा है कोई गुलबदन गोया
कही करीब से, गेसू-ब-दोश[2], गुच-ब-दस्त[3]
लिये है बू-ए-रफाकत[4] अगर हवा-ए-चमन
तो लाख पहरे विठायें कफस पे जुल्म परस्त
हमेश सब्ज़ रहेगी वह शाखे-मेह्‌र-ओ-वफा
कि जिसके साथ बँधी है दिलो की फतह-ओ शिकस्त

यह शे'रे-हाफिजे शीराज़, ऐ सबा, कहना,
मिले जो तुझसे कही वह हबीबे-अ'बरदस्त[5]
"खलल पिजीर बवद हर बिना कि मी बीनी
बजुज बिना-ए-महब्बत कि खाली अज़ खलल अस्त"[6]

सेंट्रल जेल
हैदराबाद
२८-२६ अप्रल, १६५३

---

१ जेल का कोना २ कधे पर बाल बिखराये ३ हाथ म कली लिये ४ दोस्ती की सुगध ५ खुशबूदार हाथोंवाला दोस्त ६ हर बुनियाद में दरार पड जाती है अलावा मुहब्बत की बुनियाद के जिसमें दरार नही पडती।

गजल

सितम की रस्मे बहुत थी लेकिन, न थी तिरी अंजुमन से पहले
सजा खता-ए-नजर से पहले, अ'ताब[1] जुर्मे सुखन से पहले

जो चल सको तो चलो कि राहे-वफा बहुत मुख्तसर हुई है
मुकाम है अब कोई न मंजिल, फराजे-दार-ओ रसन[2] से पहले

नही रही अब जुनू की जंजीर पर वह पहली इजारदारी
गिरफ्त करते हैं करनेवाले खिरद[3] पे दीवानपन से पहले

करे कोई तेग का नजारा, अब उनको यह भी नही गवारा
ब-जिद है कातिल कि जाने-बिस्मिल फिगार[4] हो जिस्म-ओ तन से
पहले

गुरूरे-सब-ओ-समन से कह दो कि फिर वही ताजदार होगे
जो खार-ओ खस वाली-ए-चमन थे उ'रूजे-सब-ओ-समन[5] से पहले

इधर तकाजे है मसलहत के, उधर तकाजा-ए-दर्दे दिल है
जबाँ सँभाले कि दिल सँभाले, असीर[6] जिक्रे-वतन से पहले

हैदराबाद जेल
१७-२२ मई, १९५४

१ दंड २ फाँसी का तख्त ३ अक्ल ४ घायल ५ सब और समन का उत्थान ६ बंदी।

ग़ज़ल

शामे-फ़िराक़[1] अब न पूछ आई और आके टल गई
दिल था कि फिर बहल गया, जाँ थी कि फिर सँभल गई

बज़्मे-ख़याल में तिरे हुस्न की शम्अ जल गई
दर्द का चाँद बुझ गया, हिज्र की रात ढल गई

जब तुझे याद कर लिया, सुब्ह महक महक उठी
जब तिरा ग़म जगा लिया, रात मचल-मचल गई

दिल से तो हर मुआ'मला करके चले थे साफ़ हम
कहने में उनके सामने बात बदल-बदल गई

आख़िरे शब[2] के हमसफ़र 'फ़ैज़' न जाने क्या हुए
रह गई किस जगह सबा[3], सुब्ह किधर निकल गई

जिनाह अस्पताल, कराची
जुलाई, १९५३

---

१ विरह की शाम २ पिछला पहर ३ सुगंधित पवन

गजल

रहे-खिजाँ[1] मे तलाशे-बहार करते रहे
शबे-सियह[2] से तलब हुस्ने-यार करते रहे

खयाले-यार कभी जिक्रे-यार करते रहे
इसी मताअ'[3] पे हम रोजगार करते रहे

नही शिकायते-हिज्राँ कि इस वसीले से
हम उनसे रिश्त -ए-दिल उस्तवार[4] करते रह

वो दिन कि कोई भी जब वज्हे-इतजार न थी
हम उनमे तेरा सिवा इतजार करते रहे

हम अपने राज पे नाजाँ थे, शर्मसार न थे
हर एक से सुखने-राजदार[5] करते रहे

जिया ए-बज्मे-जहा[6] बार-बार माँद हुई
हदीसे शो'ल रुखाँ[7] बार-बार करते रहे

उन्ही के फैज से बाजारे-अक्ल रोशन है
जो गाह गाह जुनूँ इख्तियार करते रहे

जिनाह अस्पताल, कराची
२१ अगस्त

---

१ पतझड का रास्ता २ काली रात ३ पूजी ४ मजबूत
५ भेद की बात ६ दुनिया की चमक-दमक ७ आग की लपटो जैसे (प्रकाशमान) चेहरेवालो की चर्चा

न आज लुत्फ़[1] कर इतना कि कल गुज़र न सके
वह रात कि जो तिरे गेसुओं की रात नहीं
यह आरज़ू भी बड़ी चीज़ है मगर हमदम
विसाले-यार फ़क़त आरज़ू की बात नहीं

---

१ कृपा

गजल

बात बस से निकल चली है
दिल की हालत सँभल चली है

अब जुनूं हद से बढ चला है
अब तबीअ'त बहल चली है

अश्क खूंनाब[1] हो चले हैं
गम की रंगत बदल चली है

या यूं ही बुझ रही है शम्एं
या शबे-हिज्र टल चली है

लाख पैगाम हो गये हैं
जब सबा एक पल चली है

जाओ, अब सो रहो सितारो
दर्द की रात ढल चली है

मांटगोमरी जेल
२१ नवबर, १६५३

---

१ खून के रंग के

वासोख्त

सच है हमी को आपके शिकवे बजा न थे
बेशक सितम जनाब के सब दोस्ताना थे

हाँ, जो जफा भी आपने की, काय'दे से की
हाँ, हम ही कारबदे-उसूले-वफा[1] न थे

आये तो यूँ कि जैसे हमेश थे मेह्रबाँ
भूले तो यूँ कि गोया कभी आश्ना[2] न थे

क्यो दादे-गम हमी ने तलब की बुरा किया
हमसे जहाँ मे कुश्त-ए-गम[3] और क्या न थे

गर फिक्रे-जख्म की तो खतावार हैं कि हम
क्यो मह्‌वे-मदहे-खूबी-ए-तेगे-अदा[4] न थे

हर चारगर को चारगरी से गुरेज था
वरन हमे जो दुख थे, ला दवा न थे

लब पर है तल्खी ए-मये-अय्याम,[5] वरन 'फैज'
हम तल्खी-ए-कलाम[6] पे माइल[7] जरा न थे

माटगोमरी जेल
२४ नवबर, १९५३

---

१ वफा के उसूल के पाबद २ परिचित ३ गम के मारे हुए
४ अदा की तलवार के गुणों की प्रशसा मे व्यस्त ५ समय की शराब की कडवाहट ६ बात की कटुता ७ प्रवृत्ति रखना

गजल

शाख पर खूने-गुल रवाँ है वही
शोखी-ए-रंगे-गुलसिताँ है वही

सर वही है तो आस्ताँ[1] है वही
जाँ वही है तो जाने-जाँ है वही

अब जहाँ मेहरबाँ नही कोई
कूच ए-यारे-मेहरबाँ है वही

बर्क[2] सौ बार गिरके खाक हुई
रौनके खाके-आशियाँ है वही

आज की शब विसाल की शब है
दिल से हर रोज दास्ताँ है वही

चाँद-तारे इधर नही आते
वरन जिंदाँ मे आसमाँ है वही

मांटगोमरी जेल

१ चौखट २ बिजली

गजल

कब याद मे तेरा साथ नही, कब हात मे तेरा हात नही
सद शुक्र कि अपनी रातो मे अब हिज्र की कोई रात नही

मुश्किल है अगर हालात वहाँ, दिल बेच आयें जाँ बेच आये
दिलवालो कूच-ए-जानाँ मे क्या ऐसे भी हालात नही

जिस धज से कोई मकतल मे गया, वह शान सलामत रहती है
यह जान तो आनी-जानी है, इस जान की तो कोई बात नही

मैदाने-वफा दरबार नही, याँ नाम ओ नसब की पूछ कहाँ
आ'शिक तो किसी का नाम नही, कुछ इ'श्क किसी की जात नही

गर बाज़ी इ'श्क की बाज़ी है, जो चाहो लगा दो डर कैसा
गर जीत गये तो क्या कहना, हारे भी तो बाज़ी मात नही

मांटगोमरी जेल

ग़ज़ल

हम पर तुम्हारी चाह का इल्ज़ाम ही तो है
दुश्नाम[1] तो नही है यह इकराम[2] ही तो है

करते हैं जिस पे ता'न[3] कोई जुर्म तो नही
शौके-फिज़ूल-ओ-उल्फ़ते-नाकाम ही तो है

दिल मुद्दई के हर्फे मलामत[4] से शाद है
ऐ जाने जाँ यह हर्फ़ तिरा नाम ही तो है

दिल ना-उमीद तो नही, नाकाम ही तो है
लबी है ग़म की शाम मगर शाम ही तो है

दस्ते-फलक[5] मे गर्दिशे तकदीर तो नही
दस्ते-फलक मे गर्दिशे-अय्याम ही तो है

आखिर तो एक रोज करेगी नज़र वफ़ा
वह यारे-खुशखसाल[6] सरे-बाम ही तो है

भीगी है रात 'फ़ैज़' गज़ल इब्तिदा करो
वक़्ते-सरोद[7], दर्द का हगाम ही तो है

मांटगोमरी जेल
६ मार्च, १६५४

१ गाली २ कृपा ३ व्यंग ४ निंदा का शब्द ५ अ...
का हाथ ६ अच्छे गुणोवाला यार ७ गाने का वक्त

ऐ रोशनियो के शहर !

सब्ज-सब्ज, सूख रही है फीकी, जर्द दोपहर
दीवारो को चाट रहा है तनहाई का जहर
दूर उफक तक घटती, बढती, उठती, गिरती रहती है
कुह्र की सूरत बे-रौनक दर्दो की लहर
बिसात[1] है उस कुहरे के पीछे रोशनियो का शहर
ऐ रोशनियो के शहर

कौन कहे किस सिम्त है तेरी रोशनियो की राह
हर जानिब बे-नूर खडी है हिज्र की शहरपनाह
थक कर हर सू बैठ रही है शौक की माद सिपाह

आज मिरा दिल फिक्र मे है
ऐ रोशनियो के शहर

शबखू से मुँह फेर न जाये अरमानो की रौ
खैर हो तेरी लैलाओ की, उन सबसे कह दो
आज की शब जब दिये जलायें, ऊँची रखें लौ

लाहौर जेल
मांटगोमरी जेल
२८ मार्च } १९५४
१५ अप्रल }

---

१ फला हुआ

ग़ज़ल

गुलो मे रग भरे बादे-नौबहार चले
चले भी आओ कि गुलशन का कारोबार चले

कफस उदास है यारो सबा से कुछ तो कहो
कही तो बहरे-खुदा आज जिक्रे-यार चले

कभी तो सुब्ह तिरे कुजे-लब[1] से हो आगाज़
कभी तो शब सरे-काकुल[2] से मुश्कबार चले

बडा है दर्द का रिश्ता यह दिल गरीब सही
तुम्हारे नाम पे आयेंगे गमगुसार चले

जो हम पे गुज़री सो गुज़री मगर शबे-हिज्राँ
हमारे अश्क तिरी आकबत सँवार चले

हुज़ूरे-यार हुई दफ्तरे-जुनूँ की तलब
गिरह में लेके गरेबाँ का तार-तार चले

मुकाम, 'फैज़', राह मे कोई जचा ही नही
जो कू-ए-यार से निकले तो सू-ए-दार चले

---

१ होंट का कोना २ लटो का सिरा

हम जो तारीक राहो मे मारे गये

[ईथेल और जूलियस रोज़नबर्ग के
ख़तों से मुतास्सिर होकर लिखी गयी]

तेरे होटो के फूलो की चाहत मे हम
दार[1] की खुश्क टहनी पे वारे गये
तेरे हातो की शम्ओ' की हसरत मे हम
नीम-तारीक राहो मे मारे गये

सूलियो पर हमारे लबो से परे
तेरे होटो की लाली लपकती रही
तेरी जुल्फो की मस्ती बरसती रही
तेरे हाथो की चाँदी दमकती रही

जब घुली तेरी राहो मे शामे-सितम
हम चले आये लाये जहाँ तक कदम
लब पे हर्फे गजल, दिल मे कदीले-गम
अदना गम था गवाही तिरे हुस्न की
देख कायम रहे इस गवाही पे हम
हम जो तारीक राहो पे मारे गये

नारसाई[2] अगर अपनी तकदीर थी
तेरी उल्फत तो अपनी ही तदबीर थी
किसको शिकव है गर शौक[3] के सिलसिले
हिज्र की कत्लगाहो से सब जा मिले

कत्लगाहो से चुनकर हमारे अ'लम[4]
और निकलेगे उ'श्शाक[5] के काफिले

---

१ फाँसी २ विफलता ३ उत्कंठा ४ झडे ५ प्रेमी

मुख्तसर कर चले दर्द के फासले
कर चले जिनकी खातिर जहाँगीर[६] हम
जाँ गवाँकर तिरी दिलवरी का भरम
हम जो तारीक राहो मे मारे गये

माटगोमरी जेल
१५ मई, १९५४

---

६ विश्वव्यापी

फिक्रे-सूद-ओ-ज़ियाँ[1] तो छूटेगी
मिन्नते-ईन-ओ आँ[2] तो छूटेगी
ख़ैर, दोज़ख़ मे मय मिले न मिले
शेख़ साहब से जाँ तो छूटेगी

---

१ लाभ-हानि की चिंता २ इसकी उसकी खुशामद

गजल

कुछ मुहतसिबो[1] की खिल्वत मे, कुछ वाइ'ज़[2] के घर जाती है
हम वादकशो के हिस्से की, अब जाम मे कमतर जाती है

यूँ अ'र्ज़-ओ-तलब[3] से कब्र ऐ दिल, पत्थर दिल पानी होते हैं
तुम लाख रज़ा की खू डालो, कब खूए-सितमगर जाती है

बेदादगरो[4] की बस्ती है, याँ दाद कहाँ खैरात कहाँ
सर फोडती फिरती है नादाँ फरियाद जो दर दर जाती है

हाँ, जाँ के जियाँ की हमको भी तशवीश है लेकिन क्या कीजे?
हर रह जो उधर को जाती है, मकतल[5] से गुज़रकर जाती है

अब कूच-ए दिलबर का रहरव, रहजन भी बने तो बात बने
पहरे से अ'दू[6] टलते ही नही और रात बराबर जाती है

हम अह्ले-कफस तनहा भी नही, हर रोज़ नसीमे-सुब्हे-वतन
यादो से मुअ'त्तर[7] आती है, अश्को से मुनव्वर[8] जाती है

मांटगोमरी जेल
१७ जून, १९५४

---

१ प्रतिबंध लगानेवाला २ धर्मोपदेशक ३ प्रार्थना और याचना
४ अन्यायियो ५ कत्ल करने की जगह ६ दुश्मन ७ सुगंधित
८ आलोकित

दरीच

गड़ी हैं कितनी सलीबें मिरे दरीचे मे
हर एक अपने मसीहा के खू का रग लिये
हर एक वस्ले-खुदावद[1] की उमग लिये

किसी पे करते हैं अब्रे-बहार[2] को कुर्बां
किसी पे कत्ले-महे-ताबनाक[3] करते हैं
किसी पे होती है सरमस्त शाखसार[4] दो-नीम[5]
किसी पे बादे-सबा को हलाक करते है

हर आये दिन ये खुदावदगाने-मेह्र-ओ-जमाल
लहू मे गर्क मिरे गमकदे मे आते हैं
और आये दिन मिरी नजरो के सामने उनके
शहीद जिस्म सलामत उठाये जाते हैं

ंटगोमरी जेल
सम्बर, १९५४

१ खुदा से मिलना २ बहार के बादल ३ चमकदार चांद की हत्या
४ डाली ५ दो टुकड़े

दर्द आयेगा दबे पांव

और कुछ देर मे, जब फिर मिरे तनहा दिल को
फिक्र आ लेगी कि तनहाई का क्या चार करे
दर्द आयेगा दबे पाँव, लिये सुर्ख चिराग
वह जो इक दर्द धडकता है कही दिल से परे

शो'ल-ए-दर्द जो पहलू मे लपक उट्ठेगा
दिल की दीवार पे हर नक्श दमक उट्ठेगा
हल्क-ए-जुल्फ[1] कही, गोश-ए-रुखसार[2] कही
हिज्र का दश्त कही, गुलशने-दीदार कही
लुत्फ की बात कही, प्यार का इकरार कही

दिल से होगी फिर मिरी बात कि ऐ दिल, ऐ दिल
यह जो महबूब बना है तिरी तनहाई का
यह तो मेहमा है घडी भर का चला जायेगा
इससे कब तेरी मुसीबत का मदावा[3] होगा

मुश्तइ'ल[4] होके अभी उट्ठेंगे वहशी साये
वह चला जायेगा, रह जायेंगे बाकी साये
रात भर जिनसे तिरा खून-खराबा होगा

जग ठहरी है कोई खेल नही है, ऐ दिल
दुश्मने-जाँ है सभी सारे के सारे कातिल
यह कडी रात भी, साये भी, तनहाई भी

दर्द और जग मे कोई मेल नही है, ऐ दिल

---

१ बालों के घेरे २ गालो के कोने ३ इलाज ४ उत्तेजित

लाओ, सुलगाओ कोई जोशे-गज़ब का अंगार
तैश की आतिशे-जर्रार[५] कहा है, लाओ
वह दहकता हुआ गुलजार कहाँ है, लाओ
जिसमे गर्मी भी है, हरकत भी, तवानाई[६] भी

हो न हो अपने कबीले का भी कोई लश्कर
मुंतजिर होगा अंधेरे की फसीलो[७] के उधर
उनको शो'लो के रजज़[८] अपना पता तो देंगे
खैर, हम तक वह न पहुँचे भी, सदा तो देंगे
दूर कितनी है अभी सुब्ह, बता तो देंगे

मांटगोमरी जेल
१ दिसबर, १९५४

५ तेज आग ६ ताकत ७ प्राचीरो ८ वीरगाथा

सुब्ह फूटी तो आसमाँ पे तिरे
रंगे-रुखसार की फोहार गिरी
रात छाई तो रू-ए-आ'लम[1] पर
तेरी जुल्फो की आबशार[2] गिरी

---

१ दुनिया का चेहरा २ झरना

AFRICA COME BACK*

(एक रजज[1])

आ जाओ, मैंने सुन ली तिरे ढोल की तरग
आ जाओ, मस्त हो गई मेरे लहू की ताल
"आ जाओ, एफ्रीका"

आ जाओ, मैंने धूल से माथा उठा लिया
आ जाओ, मैंने छील दी आँखो से गम की छाल
आ जाओ, मैंने दर्द से बाजू छुडा लिया
आ जाओ, मैंने नोच दिया बेकसी का जाल
"आ जाओ, एफ्रीका"

पजे मे हथकडी की कडी बन गई है गुज[2]
गर्दन का तौक तोड के ढाली है मैंने ढाल
"आ जाओ, एफ्रीका"

जलते है हर कछार मे भालो के मिरग-नैन
दुश्मन लहू से रात की कालिक हुई है लाल
"आ जाओ, एफ्रीका"

धरती धडक रही है मिरे साथ, एफ्रीका
दरिया थिरक रहा है तो बन दे रहा है ताल

---

*अफ्रीकी स्वतत्रता-प्रेमियो का नारा

१ वीर गाथा २ गदा

मैं एफ्रीका हूँ, धार लिया मैंने तेरा रूप
मैं तू हूँ, मेरी चाल है तेरी ववर की चाल
"आ जाओ, एफ्रीका"

आओ, ववर की चाल
आ जाओ, एफ्रीका

मांटगोमरी जेल
१४ जनवरी, १९५५

ग़ज़ल

गर्मी-ए-शौके-नजारा[1] का असर तो देखो
गुल खिले जाते हैं वह साय-ए-दर तो देखो

ऐसे नादाँ भी न थे जाँ से गुज़रनेवाले
नासहो, पदगरो,[2] राहगुजर तो देखो

वह तो वह है, तुम्हे हो जायेगी उल्फत मुझसे
इक नजर मिरा महबूबे-नजर तो देखो

वह जो अब चाक गरेबाँ भी नहीं करते हैं
देखनेवालो, कभी उनका जिगर तो देखो

दामने-दर्द को गुलज़ार बना रक्खा है
आओ, इक दिन दिले-पुरखूँ[3] का हुनर तो देखो

सुब्ह की तरह झमकता है शबे-गम का उफक
'फ़ैज़' ताबदगी-ए-दीद ए-तर तो देखो

मांटगोमरी जेल
४ मार्च, १९५५

---

१ दर्शन की अभिलाषा का उत्साह २ उपदेश देनेवालो ३ खून से भरा हुआ दिल

यह फस्ल उमीदो की हमदम

सब काट दो
बिस्मिल[1] पौदो को
बे-आब सिसकते मत छोडो
सब नोच लो
बेकल फूलो को
शाखो पे बिलकते मत छोडो

यह फस्ल उमीदो की हमदम
इस बार भी गारत जायेगी
सब मेहनत सुबहो शामो की
अबके भी अकारत जायेगी

खेती के कोनो-खुदरो मे
फिर अपने लहू की खाद भरो
फिर मिट्टी सीचो अश्को से
फिर अगली रुत की फिक्र करो

फिर अगली रुत की फिक्र करो
जब फिर इक बार उजडना है
इक फस्ल पकी तो भर पाया
जब तक तो यही कुछ करना है

माटगोमरी जेल
३० मार्च, १९५५

---

१ मरे हुए

बुनियाद कुछ तो हो

(क़व्वाली)

कू-ए-सितम की खामशी आबाद कुछ तो हो
कुछ तो कहो सितमकशो,[1] फरियाद कुछ तो हो
बेदादगर से शिकव-ए-बेदाद कुछ तो हो
बोलो कि शोरे-हश्र[2] की ईजाद[3] कुछ तो हो

मरने चले तो सतवते-कातिल[4] का खौफ क्या
इतना तो हो कि बाँधने पाये न दस्त-ओ-पा
मकतल मे कुछ तो रग जमे जश्ने-रक्स का

रगी लहू से पज-ए-सैयाद कुछ तो हो
खूँ पर गवाह दामने-जल्लाद कुछ तो हो
जब खूँ बहा[5] तलब करे बुनियाद कुछ तो हो

गर तन नहीं, जबाँ सही, आजाद कुछ तो हो
दुश्नाम, नाल, हा-ओ-हू, फरियाद कुछ तो हो
चीखे है दर्द, ऐ दिले-बर्बाद कुछ तो हो
बोलो, कि शोरे-हश्र की ईजाद कुछ तो हो
बोलो कि रोजे-अद्ल की बुनियाद कुछ तो हो

मांटगोमरी जेल
१३ अप्रल, १९५५

---

१ जुल्म सहनेवालो २ प्रलय का शोर ३ शुरुआत ४ कातिल का आतंक ५ खून की कीमत।

कोई आ'शिक किसी महबूब से

याद की राहगुजर जिस पे इसी सूरत से
मुद्दतें बीत गई हैं तुम्हे चलते-चलते
खत्म हो जाये, जो दो-चार कदम, और चलो
मोड पडता है जहाँ दश्ते-फरामोशी[1] का
जिससे आगे न कोई मैं हूँ न कोई तुम हो
साँस थामे है निगाहे कि न जाने किस दम
तुम पलट आओ, गुजर जाओ, या मुडकर देखो

गरचे वाकिफ है निगाहे कि यह सब धोका है
गर कही तुमसे हम-आगोश हुई फिर से नजर
फूट निकलेगी वहा और कोई राहगुजर
फिर इसी तरह जहाँ होगा मुकाबिल[2] पैहम[3]
साय-ए-जुल्फ का और जुबिशे-बाजू का सफर
दूसरी बात भी झूठी है कि दिल जानता है
याँ कोई मोड, कोई दश्त, कोई घात नही
जिसके परदे मे मिरा माहे-रवाँ[4] डूब सके
तुमसे चलती रहे यह राह, यू ही अच्छा है
तुमने मुडकर भी न देखा तो कोई बात नही

---

१ विस्मृति का जगल २ सामने ३ लगातार ४ चलता हुआ चाँद।

अगस्त १९५५

शह्र मे चाक-गरेबाँ हुए नापद अबके
कोई करता ही नही जब्त की ताकीद[1] अबके

लुत्फ कर, ऐ निगहे-यार, कि ग़मवालो ने
हसरते-दिल की उठाई नही तमहीद[2] अबके

चाँद देखा तेरी आँखो मे, न होटो पे शफक
मिलती-जुलती है शबे-गम से तिरी दीद अबके

दिल दुखा है न वह पहला-सा, न जाँ तडपी है
हम ही गाफिल थे कि आई ही नही ईद अबके

फिर से बुझ जायेंगी शम्ए, जो हवा तेज चली
लाके रक्खो सरे-महफिल कोई खुरशीद[3] अबके

कराची
१४ अगस्त, १९५५

---

१ आदेश २ भूमिका ३ सूरज

ग़ज़ल

यूँ बहार आई है इस बार कि जैसे कासिद[1]
कूच-ए-यार से बे-नैल-ओ-मराम[2] आता है

हर कोई शहर में फिरता है सलामत-दामन
रिंद मयख़ाने से शाइस्त-ख़राम आता है

हवसे-मुतरिब-ओ साक़ी में परीशाँ अकसर
अब्र आता है कभी माहे-तमाम आता है

शौक़वालों की हज़ी[3] महफ़िले-शब में अब भी
आमदे-सुब्ह की सूरत तिरा नाम आता है

अब भी एलाने-सहर करता हुआ मस्त कोई
दाग़े-दिल करके फ़रोज़ाँ सरे-शाम आता है

लाहौर
मार्च, १९५६

१ संदेश लानेवाला २ निराश ३ दुखी

६

यह ख़ून की महक है कि लबे-यार की ख़ुशबू
किस राह की जानिब से सबा आती है देखो
गुलशन में बहार आई कि ज़िंदाँ हुआ आबाद
किस सिम्त से नग्मों की सदा आती है देखो

दस्ते-तहे-संग आमद[1]

बेज़ार फ़ज़ा, दरपै-ए-आज़ारे-सबा[2] है
यूँ है कि हर इक हमदमे-देरीन[3] ख़फ़ा है

हाँ, बादकशो, आया है अब रंग पे मौसम
अब सैर के क़ाबिल रविशे-आब-ओ-हवा है

उमडी है हर इक सिम्त से इल्ज़ाम की बरसात
छाई हुई हर दांग[4] मलामत[5] की घटा है

वह चीज़ भरी है कि सुलगती है सुराही
हर कास-ए-मय[6] ज़ह्रे हलाहल से सिवा[7] है

हाँ जाम उठाओ कि ब-यादे-लबे-शीरीं
यह ज़ह्र तो यारों ने कई बार पिया है

इस जज़्ब-ए-दिल की न जज़ा है न सज़ा है
मक़सूदे-रहे-शौक़[8] वफ़ा है न जफ़ा है

एहसासे-ग़मे दिल जो ग़मे-दिल का सिला[9] है
उस हुस्न का एहसास है जो तेरी अ'ता[10] है

हर सुब्ह गुलिस्ताँ है तिरा रू-ए-बहारी[11]
हर फूल तिरी याद का नक़्शे कफ़े-पा है

हर भीगी हुई रात तिरी ज़ुल्फ़ की शबनम
ढलता हुआ सूरज तिरे होंटों की फ़ज़ा है

---

१ पत्थर के नीचे आया हुआ हाथ २ सबा को तकलीफ पहुँचाने पर आमादा ३ पुराना दोस्त ४ दिशा ५ निंदा ६ शराब का प्याला ७ बढ़कर ८ लालसा के मार्ग का लक्ष्य ९ पुरस्कार १० दी हुई चीज़, उपहार। ११ खिला हुआ चेहरा

रर गार पहुँचती है गिरी पार के दर तक
रर हर्जमना गिरे क़दमों की गरा है

ना ज़ौरे गिबारा'' है, न गेरो की गता है
पर कुन्द को हाल दिखलानी न दिया है

किसी गैरआर में पाबंद हूँ हम
ज़ंजीर व तरा'' है न कोई बदज़ना'' है

'मजबूरी-ओ-दावा-ए-गिरफ़्तारी-ए-उल्फ़त
दस्ते-तहे-संग आमदः'' पैमाने-वफ़ा'' है

[illegible]

मयखानो की रौनक है, कभी खानकहो की
अपना ली हवसवालो ने जो रस्म चली है
दिलदारी-ए-वाइ'ज़ को हमी बाकी हैं वरन
अब शह्र मे हर रिंदे-खराबात वली है

जश्न का दिन

जुनूँ की याद मनाओ कि जश्न का दिन है
सलीब-ओ-दार[1] सजाओ कि जश्न का दिन है
तरब[3] की बज्म है बदलो दिलो के पैराहन[3]
जिगर के चाक सिलाओ कि जश्न का दिन है
तुनुक-मिजाज है साकी न रगे-मय देखो
भरे जो शीश, चढाओ कि जश्न का दिन है
तमीजे़-रहबर-ओ-रहजन[4] करो न आज के दिन
हर इक से हाथ मिलाओ कि जश्न का दिन है
है इंतजारे-मलामत मे नासहो[5] का हुजूम
नजर सँभाल के जाओ कि जश्न का दिन है
बहुत अजीज हो लेकिन शिकस्त दिल यारो
तुम आज याद न आओ कि जश्न का दिन है
वह शोरिशे-गमे-दिल जिसकी लय नही कोई
गजल की धुन मे सुनाओ कि जश्न का दिन है

माच १९५७

---

१ सूली और फाँसी २ उल्लास ३ वस्त्र ४ मार्गदर्शक और बटमार का अन्तर ५ उपदेशको।

रात ढलने लगी है सीनो मे
आग सुल्गाओ आबगीनो[1] मे
दिले-उ'श्शाक की खबर लेना
फूल खिलते हैं इन महीनो मे

आज तनहाई किसी हमदमे-दैरी[2] की तरह
करने आई है मिरी साकीगरी शाम ढले
मुंतज़िर बैठे हैं हम दोनो कि महताब उभरे
और तिरा अ'क्स झलकने लगे हर साये तले

अप्रल १९५७

१ शराब की बोतल २ पुराना दोस्त।

शाम

इस तरह है कि हर इक पेड़ कोई मंदिर है
कोई उजड़ा हुआ, बे-नूर पुराना मंदिर
ढूँढ़ता है जो ख़राबी के बहाने कब से
चाक हर बाम, हर इक दर का दमे-आख़िर है
आसमाँ कोई पुरोहित है जो हर शाम तले
जिस्म पर राख मले, माथे पे सिंदूर मले
सरनिगूँ[1] बैठा है चुपचाप न जाने कब से

इस तरह है कि पसे-पर्दः कोई साहिर[2] है
जिसने आफ़ाक़[3] पे फैलाया है यूँ सहर[4] का दाम[5]
दामने-वक़्त से पैवस्त है यूँ दामने-शाम
अब कभी शाम बुझेगी न अँधेरा होगा
अब कभी रात ढलेगी न सवेरा होगा

आसमाँ आस लिये है कि यह जादू टूटे
चुप की ज़ंजीर कटे, वक़्त का दामन छूटे
दे कोई शंख दुहाई, कोई पायल बोले
कोई बुत जागे, कोई साँवली घूँघट खोले

---

१ सर झुकाये २ जादूगर ३ क्षितिज ४ जादू ५ जाल।

शाम

इस तरह है कि हर इक पेड़ कोई मंदिर है
कोई उजड़ा हुआ, बे-नूर पुराना मंदिर
ढूढता है जो खराबी के बहाने कब से
चाक हर बाम, हर इक दर का दमे-आखिर है
आसमाँ कोई पुरोहित है जो हर बाम तले
जिस्म पर राख मले, माथे पे सिंदूर मले
सरनिगूँ[1] बैठा है चुपचाप न जाने कब से

इस तरह है कि पसे-पर्दा कोई साहिर[2] है
जिसने आफाक[3] पे फैलाया है यूं सहर[4] का दाम[5]
दामने-वक्त से पैवस्त है यूं दामने-शाम
अब कभी शाम बुझेगी न अँधेरा होगा
अब कभी रात ढलेगी न सवेरा होगा

आसमाँ आस लिये है कि यह जादू टूटे
चुप की जंजीर कटे, वक्त का दामन छूटे
दे कोई शख दुहाई, कोई पायल बोले
कोई बुत जागे, कोई सावली घूघट खोले

---

१ सर झुकाये २ जादूगर ३ क्षितिज ४ जादू ५ जाल।

तुम यह कहते हो अब कोई चारा नहीं

तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही है किसी ने कदम
कोई उतरा न मैदाँ मे दुश्मन न हम
कोई सफ[1] बन न पाई न कोई अ'लम[2]
मुतशिर[3] दोस्तो को सदा[4] दे सका
अजनबी दुश्मनो का पता दे सका
तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही हमने अब तक कदम

तुम यह कहते हो अब कोई चारा नही
जिस्म खस्त है, हाथो मे यारा[5] नही

अपने बस का नही बारे-सगे-सितम[6]
बारे - सगे - सितम, बारे - कुहसारे - गम[7]
जिसको छूकर सभी इक तरफ हो गये
बात की बात मे जी-शरफ[8] हो गये

---

१ पात २ झडा ३ बिखरे हुए ४ आवाज ५ ताकत ६ अत्याचार के पत्थर का बोझ ७ दुख के पहाड का बोझ ८ श्रेयस्कर।

तुम यह कहते हो अब कोई चार नही !

तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही है किसी ने कदम
कोई उतरा न मैदा मे दुश्मन न हम
कोई सफ[1] बन न पाई न कोई अ'लम[2]
मुतशिर[3] दोस्तो को सदा[4] दे सका
अजनबी दुश्मनो का पता दे सका
तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही हमने अब तक कदम

तुम यह कहते हो अब कोई चारा नही
जिस्म खस्त है, हाथो मे यारा[5] नही

अपने बस का नही बारे-सगे-सितम[6]
बारे - सगे - सितम, बारे - कुहसारे - गम[7]
जिसको छूकर सभी इक तरफ हो गये
बात की बात मे ज़ी-शरफ[8] हो गये

---

१ पांत २ झडा ३ बिखरे हुए ४ आवाज़ ५ ताकत ६ अत्याचार के पत्थर का बोझ ७ दु ख के पहाड का बोझ ८ श्रेयस्कर ।

तुम यह कहते हो अब कोई चार नहीं!

तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही है किसी ने कदम
कोई उतरा न मैदां मे दुश्मन न हम
कोई सफ[1] बन न पाई न कोई अ'लम[2]
मुन्तशिर[3] दोस्तो को सदा[4] दे सका
अजनबी दुश्मनो का पता दे सका
तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही हमने अब तक कदम

तुम यह कहते हो अब कोई चारा नही
जिस्म खस्त है, हाथो मे यारा[5] नही

अपने बस का नही बारे-सगे-सितम[6]
बारे - सगे - सितम, बारे - कुहसारे - गम[7]
जिसको छूकर सभी इक तरफ हो गये
बात की बात मे जी-शरफ[8] हो गये

---

१ पात २ झडा ३ बिखरे हुए ४ आवाज ५ ताकत ६ अत्याचार के पत्थर का बाझ ७ दु ख के पहाड का बोझ ८ श्रेयस्कर।

न दीद है न सुख़न, अब न हर्फ़ है न पयाम
कोई भी हीला-ए-तस्कीं नहीं और आस बहुत है
उमीदे-यार, नज़र का मिज़ाज, दर्द का रंग
तुम आज कुछ भी न पूछो कि दिल उदास बहुत है

हाँ नुक्तावरो,[1] लाओ लब-ओ-दिल की गवाही
हाँ नग़मागरो, साज़ सदा क्यों नहीं देते
पैमाने-जुनूँ हाथों को शरमायेगा कब तक
दिलवालो, गरेबाँ का पता क्यों नहीं देते
बर्बादी-ए-दिल जब्र नहीं 'फ़ैज़' किसी का
वह दुश्मने-जाँ है तो भुला क्यों नहीं देते

लाहौर जेल
११ दिसम्बर १९५८

१. [illegible]

न दीद है न सुखन, अब न हर्फ है न पयाम
कोई भी हील-ए-तस्कीन नही और आस बहुत है
उम्मीदे-यार, नजर का मिज़ाज, दर्द का रंग
तुम आज कुछ भी न पूछो कि दिल उदास बहुत है

हाँ नुक्त वरो,[1] लाओ लब-ओ-दिल की गवाही
हाँ नग्म गरो, साज सदा क्यो नही देते
पैमाने-जुनूँ[2] हाथो को शरमायेगा कब तक
दिलवालो, गरेबाँ का पता क्यो नही देते
बर्बादी-ए-दिल जब्र नही 'फैज' किसी का
वह दुश्मने-जाँ है तो भुला क्यो नही देते

लाहौर जेल
३१ दिसबर, १९५८

---

१ मर्म की बात जानने वालो २ उन्माद का प्रण ।

न दीद है न सुखन, अब न हर्फ है न पयाम
कोई भी हील-ए-तस्कीन नही और आस बहुत है
उम्मीदे-यार, नज़र का मिज़ाज, दर्द का रग
तुम आज कुछ भी न पूछो कि दिल उदास बहुत है

हाँ नुक्त वरो,[1] लाओ लब-ओ-दिल की गवाही
हाँ नग्म गरो, साज सदा क्यो नही देते
पैमाने-जुनू[2] हाथो को शरमायेगा कब तक
दिलवालो, गरेबा का पता क्यो नही देते
बर्बादी-ए-दिल जब्र नही 'फैज़' किसी का
वह दुश्मने-जाँ है तो भुला क्यो नही देते

लाहौर जेल
३१ दिसबर, १९५८

---

१ मर्म की बात जानने वालो २ उन्माद का प्रण ।

वे-दम हुए वीमार, दवा क्यो ,नही देते
तुम अच्छे मसीहा हो शफा क्यो नही देते
दर्दे शवे-हिज्राँ की जज़ा[1] क्यो नही देते
खूने-दिले-वहशी का सिला[2] क्यो नही देते
मिट जायेगी मख़लूक तो इसाफ करोगे
मुसिफ हो-तो अव हश्र[3] उठा क्यो नही देते

१ पुरस्कार २ ईनाम ३ प्रलय का दिन।

न दीद है न सुखन, अब न हर्फ है न पयाम
कोई भी हील -ए-तस्कीन नही और आस बहुत है
उम्मीदे-यार, नज़र का मिज़ाज, दर्द का रग
तुम आज कुछ भी न पूछो कि दिल उदास बहुत है

हाँ नुक्त वरो,[1] लाओ लब-ओ-दिल की गवाही
हाँ नग्म गरो, साज़ सदा क्यो नही देते
पैमाने-जुनू[2] हाथो को शरमायेगा कब तक
दिलवालो, गरेबाँ का पता क्यो नही देते
बर्बादी-ए दिल जब्र नही 'फैज़' किसी का
वह दुश्मने-जाँ है तो भुला क्यो नही देते

लाहौर जेल
३१ दिसबर, १९५८

---

१ मम की बात जानने वालो २ उन्माद का प्रण ।

न दीद है न सुख़न, अब न हर्फ़ है न पयाम
कोई भी हील-ए-तस्कीन नहीं और आस बहुत है
उम्मीदे-यार, नजर का मिज़ाज, दर्द का रंग
तुम आज कुछ भी न पूछो कि दिल उदास बहुत है

हाँ नुक्ता वरो,[1] लाओ लब-ओ-दिल की गवाही
हाँ नग्म गरो, साज सदा क्यों नहीं देते
पैमाने-जुनूँ[2] हाथों को शरमायेगा कब तक
दिलवालो, गरेबाँ का पता क्यों नहीं देते
बर्बादी-ए-दिल जब्र नहीं 'फ़ैज' किसी का
वह दुश्मने-जाँ है तो भुला क्यों नहीं देते

लाहौर जेल
३१ दिसंबर, १९५८

---

१ मर्म की बात जानने वालो २ उन्माद का प्रण ।

बे-दम हुए बीमार; दवा क्यो नही देते
तुम अच्छे मसीहा हो शफा क्यो नही देते
दर्दे शबे-हिज्राँ की जज़ा[1] क्यो नही देते
खूने दिले-वहशी का सिला[2] क्यो नही देते
मिट जायेगी मखलूक तो इसाफ करोगे
मुसिफ हो तो अब हश्र[3] उठा क्यो नही देते

१ पुरस्कार २ ईनाम ३ प्रलय का दिन।

शोरिशे जजीर बिस्मिल्लाह

हुई फिर इम्तहाने-इ'श्क की तदबीर बिस्मिल्लाह
हर इक जानिब मचा कुहरामे-दार-ओ गीर बिस्मिल्लाह
गली-कूचो मे बिखरी शोरिशे-जजीर बिस्मिल्लाह

दरे-जिदाँ पे बुलवाये गये फिर से जुनूवाले
दरीद[1] दामनोवाले, परीशा गेसुओवाले
जहाँ मे दर्दे-दिल की फिर हुई तौकीर[2] बिस्मिल्लाह
हुई फिर इम्तहाने-इ'श्क की तदबीर बिस्मिल्लाह

गिनो सब दाग दिल के, हसरते शौकी निगाहो की
सरे-दरबार पुर्सिश[3] हो रही है फिर गुनाहो की
करो यारो शुमारे-नाल-ए-शबगीर बिस्मिल्लाह

सितम की दास्ताँ कुश्त दिलो का माजरा कहिये
जो जे़रे-लब न कहते थे वह सब कुछ बरमला[4] कहिये
मुसिर है मुहतसिब राजे़-शहीदाने-वफा कहिये
लगी है हर्फे नागुफ्त[5] पर अब ता'ज़ीर[6] बिस्मिल्लाह
सरे-मकतल चलो बे-जहमते-तकसीर[7] बिस्मिल्लाह
हुई फिर इम्तहाने-इ'श्क की तदबीर बिस्मिल्लाह

लाहौर जेल
जनवरी १९५९

---

१ फटे हुए २ गौरव, गरिमा ३ पूछ-गछ ४ खुलकर, मुह पर
५ अनकही बात ६ पाबदी ७ अपराध करने का कष्ट किये बिना।

आज बाज़ार मे पा-ब-जौलाँ चलो

चश्मे नम, जाने-शोरीद[1] काफी नही
तुहमते - इ'श्क़ - पोशीद[2] काफी नही
आज बाज़ार मे पा-ब-जौलाँ[3] चलो

दस्त-अफ्शा[4] चलो, मस्त-ओ-रक्साँ[5] चलो
खाक बर-सर चलो, ख़ूँ - ब - दामाँ चलो
राह तकता है सब शह्‌रे-जानाँ चलो

हाकिमे - शह्‌र भी, मजमए'-आ'म भी
तीरे, इल्ज़ाम भी, सगे - दुश्नाम[6] भी
सुब्हे - नाशाद भी, रोज़े - नाकाम भी

इनका दमसाज़[7] अपने सिवा कौन है
शह्‌रे-जानाँ मे अब बा-सफा[8] कौन है
दस्ते-क़ातिल के शायाँ[9] रहा कौन है

रख्ते दिल[10] बाँध लो दिलफिगारो चलो
फिर हमी क़त्ल हो आयें यारो चलो

लाहौर जेल
११ फरवरी १९५९

---

१ उद्विग्न प्राण २ गुप्त प्रेम का लाछन ३ पैर म जजीर डाले ४ हाथ म अश्शाँ लेकर ५ मस्त और नाचते हुए ६ गाली का पत्थर ७ हमन्द ८ पाक पवित्र, शुद्ध ९ योग्य १० दिल का सफर का सामान।

ग़ज़ल

यह जफ़ा-ए-ग़म का चारा, वह नजाते-दिल का आ'लम
तिरा हुस्न दस्ते-ईसा[1], तिरी याद रू-ए-मरियम[2]

दिल-ओ-जाँ फ़िदा-ए-राहे[3] कभी आके देख हमदम
सरे-कू ए-दिलफ़िगाराँ[4] शबे-आरज़ू का आ'लम

तिरी दीद से सिवा है तिरे शौक़ मे बहाराँ
वह ज़मीं जहाँ गिरी है तिरे गेसुओ की शबनम

ये अजब क़यामतें हैं तिरी रहगुज़र मे गुज़राँ
न हुआ कि मरमिटे हम, न हुआ कि जी उठें हम

लो सुनी गई हमारी, यूँ फिरे हैं दिन कि फिर से
वही गोशा-ए-क़फ़स[5] है, वही फ़स्ले-गुल का मातम

लाहौर जेल
फ़रवरी, १९५९

---

१ ईसा का हाथ २ मरियम का चेहरा ३ राह मे निछावर ४ टूटे हुए दिल वालो की गली मे ५ पिंजरे का कोना।

कैदे-तनहाई

दूर आफाक[1] पे लहराई कोई नूर की लह्र
ख्वाब ही ख्वाब हैं, बेदार हुआ दर्द का शह्र
ख्वाब ही ख्वाब हैं, नज़र बे-ताब होने लगी
अ'दमाबादे - जुदाई[2] मे सहर होने लगी
कास-ए-दिल[3] मे भरी अपनी सुबूही[4] मैंने
घोलकर तल्ख़ी-ए-दीरोज़[5] मे इमरोज़ का ज़ह्र

दूर आफाक पे लहराई कोई नूर की लह्र
आख से दूर किसी सुब्ह की तमहीद[6] लिये
कोई नग्म, कोई ख़ुशबू, कोई काफिर सूरत
अ'दमाबादे - जुदाई मे मुसाफिर सूरत
बे-ख़बर गुज़री परीशानी-ए-उम्मीद लिये
घोलकर तल्ख़ी-ए-दीरोज़ मे इमरोज़ का ज़ह्र
हसरते - रोज़े - मुलाकात रकम की मैंने
देस-परदेस के याराने-कदहख़्वार[7] के नाम
हुस्ने-आफाक, जमाले-लब-ओ'रुख़सार के नाम

जेल लाहौर क़िला
मार्च १९५९

१ क्षितिज २ विरह का यमलोक ३ हृदय का भिक्षा-पात्र ४ सुबह पीने की शराब ५ बीते दिनो की कड़वाहट ६ भूमिका ७ शराब पीनेवाले दोस्त।

हम खस्त तनो से मुहतासिबो क्या माल मनाल[1] का पूछते हो
जो उम्र मे हमने भर पाया सब सामने लाये देते हैं
दामन मे है मुश्ते-खाके जिगर,[2] सागर मे है खूने-हसरते मय[3]
लो हमने दामन झाड दिया, लो जाम उलटाये देते हैं

किला लाहौर
मार्च १९५९

---

१ सपत्ति २ जिगर की मुट्ठी भर खाक ३ शराब की लालसा का खून

हम्द

मलिक - ए - शह्‌रे - जिंदगी तेरा
शुक्र किस तौर से अदा कीजे
दौलते-दिल का कुछ शुमार नही
तगदस्ती का क्या गिल कीजे

जो तिरे हुस्न के फकीर हुए
उनको तशवीशे - रोजगार[1] कहाँ
दद बेचेगे गीत गायेगे
इमसे खुशवक्त कारोबार कहाँ

जाम छलका तो जम गई महफिल
मिन्नते - लुत्फे - गमगुसार[2] किसे ?
अश्क टपका तो खिल गया गुलशन
रंजे - कमजर्फी-ए-बहार[3] किसे ?

खुशनशी है कि चश्म-ओ-दिल की मुराद
दैर मे है न खानकाह मे है
हम कहाँ किस्मत आजमाने जाये
हर सनम अपनी बारगाह मे है

कौन ऐसा गनी[4] है जिससे कोई
नक्दे-शम्स ओ कमर[5] की बात करे
जिसको शौके - नबर्द[6] हो हमसे
जाये तस्खीरे - कायनात[7] करे

न १६५६

---

१ काम की चिंता २ सहानुभूति करने वाले के आनंद की प्रार्थना
बहार के ओछेपन का दु ख ४ सूरमा ५ चांद सूरज पेश करना ६ लडाई
। शौक ७ सृष्टि विजय ।

गज़ल

तिरे गम को जाँ की तलाश थी, तिरे जाँ-निसार चले गये
तिरी रह मे करते थे सर तलब, सरे-रहगुज़ार चले गये

तिरी कज-अदाई[1] से हारके शबे-इतजार चली गयी
मिरे जब्ते-हाल[2] से रुठ कर मिरे गमगुसार चले गये

न सवाले-वस्ल, न अ'र्जे-गम, न हिकायतें न शिकायतें
तिरे अ'ह्द[3] मे दिले-जार के सभी इख़्तियार चले गये

यह हमी थे जिनके लिबास पर सरे-रु सियाही लिखी गयी
यही दाग थे जो सजाके हम सरे-वज़्मे-यार चले गये

न रहा जुनूने-रुखे-वफा, यह रसन यह दार करोगे क्या
जिन्हे जुर्मे-इ'श्क पे नाज़ था वह गुनहगार चले गये

जुलाई १६५६

---

१ बाकी अदाएँ दिखाना २ अपनी दशा पर सतोप ३ युग।

आ गयी फस्ले सुकूँ चाक गरेबाँवालो
सिल गये होंट कोई जख्म सिले या न सिले
दोस्तो बज्म सजाओ कि बहार आई है
खिल गये जख्म, कोई फूल खिले या न खिले

अप्रेल १९५९

ढलती है मौजे मय की तरह रात इन दिनों
खिलती है सुब्ह गुल की तरह रंग ओ बू से पुर
वीरां हैं जाम, पास[1] करो कुछ बहार का
दिल आरजू से पुर करो, आँखें लहू से पुर

---

१ खयाल, ध्यान ।

गज़ल

कब ठहरेगा दर्द ऐ दिल, कब रात बसर होगी
सुनते थे वह आयेंगे, सुनते थे सहर[1] होगी

कब जान लहू होगी, कब अश्क गुहर[2] होगा
किस दिन तिरी शनवाई ऐ दीद-ए-तर होगी

कब महकेगी फस्ले गुल, कब बहकेगा मयखाना
कब सुब्हे-सुखन होगी, कब शामे-नजर होगी

वाइ'ज[3] है न जाहिद[4] है, नासह है न कातिल है
अब शह्र मे यारो की किस तरह बसर होगी

कब तक अभी रह देखे ऐ कामते जानान[5]
कब हश्र मुअ'य्यन[6] है तुझको तो खबर होगी

दिसबर १९५६

१ प्रभात २ मोती ३ धर्मोपदेशक ४ नियम-सयम का पालन करने वाला ५ प्रेमिका का डीलडौल (शरीर) ६ निश्चित।

(१)

मुलाकात मिरी

मारी दीवार सियह हो गयी ता हल्क ए-बाम[1]
रास्ते बुझ गये, रुख़सत हुए रहगीर तमाम
अपनी तनहाई से गोया हुई फिर रात मिरी
हो न हो आज फिर आई है मुलाकात मिरी
इक हथेली पे हिना, एक हथेली पे लहू
इक नजर जह्र लिये, एक नजर मे दारू

देर से मजिले-दिल मे कोई आया न गया
फुरकते-दर्द मे बे-आब हुआ तख्त-ए दाग
किससे कहिये कि भरे रग से जख्मो के अयाग[2]
और फिर खुद ही चली आई मुलाकात मिरी
आशना[3] मौत जो दुश्मन भी है गमख्वार भी है
वह जो हम लोगो की कातिल भी है दिलदार भी है

---

१ ऊपर व घेर तक २ सुरा पात्र ३ परिचित।

(२)

खत्म हुई बारिशे-संग

नागहाँ[1] आज मिरे तारे-नज़र से कटकर
टुकड़े-टुकड़े हुए आफ़ाक़[2] पे खुरशीद-ओ-क़मर[3]
अब किसी सिम्त अँधेरा न उजाला होगा
बुझ गई दिल की तरह राहे-वफ़ा मेरे बा'द
दोस्तो, काफ़िल-ए-दर्द का अब क्या होगा

अब कोई और करे परवरिशे-गुलशने-ग़म
दोस्तो, ख़त्म हुई दीद-ए-तर की शबनम
थम गया शोरे-जुनूँ, ख़त्म हुई बारिशे-संग[4]
ख़ाके-रह आज लिये है लबे-दिलदार का रंग
कू-ए-जानाँ में खुला मेरे लहू का परचम[5]
देखिये, देते है किस-किसको सदा मेरे बा'द
"कौन होता है हरीफ़े-मये मर्दअफ़गने-इ'श्क़[6]
है मुकरर[7] लबे-साक़ी पे सिला मेरे बा'द"

नवंबर १९६०

---

१ अचानक २ क्षितिज ३ सूरज चाँद ४ पथराव ५ झंडा
६ मर्दों को पछाड़ देने वाली इश्क़ की शराब से टक्कर लेने वाला ७ दुबारा।

इन दिनो रस्म-ओ-रहे-शह्‌रे-निगारॉं क्या है
कासिदा,[1] कीमते-गुलगश्ते-बहारॉं क्या है
कू-ए-जानाँ है कि मकतल है कि मयखान है
आजकल सूरते-बर्बादी-ए-यारॉं क्या है

१ संदेशवाहक

आज यूं मौज दर-मौज गम थम गया,
इस तरह गमज़दों को करार आ गया
जैसे खुशबू ए-जुल्फे-बहार आ गयी,
जैसे पैगामे-दीदारे-यार आ गया

जिसकी दीद-ओ तलब वह्म समझे थे हम,
रु-ब-रू फिर सरे-रहगुजार आ गया
सुब्हे-फर्दा[1] को फिर दिल तरसने लगा,
उम्रे-रफ्त[2] तिरा ए'तबार आ गया

रंग बदलने लगी रंगे-दिल देखना,
रंगे-गुलशन से अब हाल खुलता नहीं
ज़ख्म छलका कोई या कोई गुल खिला,
अश्क उमडे कि अब्रे-बहार आ गया

खूने-उ'श्शाक[3] से जाम भरने लगे,
दिल सुलगने लगे, दाग जलने लगे
महफिले-दर्द फिर रंग पर आ गई,
फिर शबे आरजू पर निखार आ गया

सरफरोशी के अंदाज बदले गये,
दा'वते-कत्ल पर मकतले शह्र में
डालकर कोई गर्दन मे तौक आ गया,
लादकर कोई कांधे पे दार[4] आ गया

'फैज' क्या जानिये यार किस आस पर,
मुंतजिर है कि लायेगा कोई खबर
मयकशो पर हुआ मुहतसिब मेह्रबाँ,
दिलफिगारों पे कातिल को प्यार आ गया

---

१ आनेवाला सवेरा २ बीता जीवन ३ प्रेमियो का खून ४ फासी, सूली।

कहाँ जाओगे

और कुछ दर मे लुट जायेगा हर वाम पे चाँद
अ'क्स खो जायेगे आईने तरस जायेंगे
अ'र्श के दीद-नमनाक से बारी-बारी
सब सितारे सरे-खाशाक[1] बरस जायेंगे
आस के मारे थके-हारे शबिस्तानो[2] मे
अपनी तनहाई समेटेगा, बिछायेगा कोई
बे-वफाई की घडी, तर्के-मुदारात[3] का वक्त
इस घडी अपने सिवा याद न आयेगा कोई
तर्के दुनिया का समा, खत्मे-मुलाकात का वक्त
इस घडी ऐ दिले-आवार कहाँ जाओगे
इस घडी कोई किसी का भी नही, रहने दो
कोई इस वक्त मिलेगा ही नही रहने दो
और मिलेगा भी तो इस तौर कि पछताओगे
इस घडी ऐ दिले-आवार कहाँ जाओगे
और कुछ देर ठहर जाओ कि फिर नश्तरे-सुब्ह
जख्म की तरह हर इक आँख को बेदार करे
और हर कुश्त ए-वामाँदगी-ए-आखिरे-शब[4]
भूलकर साअ'ते-दरमादगी-ए-आखिरे-शब[5]
जान-पहचान मुलाकात पे इसरार[6] करे

दिसबर १६६१

---

१ घास फूस पर २ शयन-कक्ष ३ आदर सम्मान को त्यागना ४ पिछले पहर की शिथिलता का मारा हुआ ५ पिछले पहर की बेबसी का समय ६ आग्रह।

गजल

यक-ब यक शोरिशे-फुगाँ[1] की तरह
फस्ले गुल आई इम्तहाँ की तरह

सह्‌ने गुलशन मे बहरे-मुश्ताका[2]
हर रविश खिंच गई कमाँ की तरह

फिर लहू से हर एक कास-ए दाग[3]
पुर हुआ जामे-अगवाँ[4] की तरह

याद आया जुनूने गुमगश्त[5]
बे-तलब[6] कर्जे-दोस्ता की तरह

जाने किस पर हो मेह्‌रबाँ कातिल
बे सबब मर्गे नागहाँ[7] की तरह

हर सदा पर लगे है कान यहाँ
दिल सँभाले रहो जुबाँ की तरह

मई १९६२

---

१ रोने की आवाज २ इच्छुको के लिए ३ दाग (घाव) का भिक्षा पात्र ४ लाल जाम ५ खोया हुआ उन्माद ६ जो मागा न जाये ७ अचानक मौत ।

शह्‌रे-यारॉं

आसमॉं की गोद मे दम तोडता है तिफ्ले-अब्र[1]
जम रहा है अब्र के होंटो पे खू-आलूद कफ

बुझते-बुझते बुझ गई है अ'र्श[2] के हुजरो[3] मे आग
धीरे-धीरे बिछ रही है मातमी तारो की सफ

ऐ सबा, शायद तेरे हमराह यह खौफनाक शाम
सर झुकाये जा रही है शह्‌रे-यारॉं की तरफ

शह्‌रे-यारॉं जिसमे इस दम ढूढती फिरती है मौत
शेरदिल बॉंको मे अपने तीर-ओ नश्तर के हदफ[4]

इक तरफ बजती ह जोशे-जीस्त[5] की शहनाइयॉं
इक तरफ चिंघाडते है अह्‌रमन[6] के तब्ल-ओ दफ

जाके कहना, ऐ सबा, बा'द अज सलामे दोस्ती
आज शब जिस दम गुजर हो शह्‌रे-यारॉं की तरफ

दश्ते-शब मे इस घडी चुपचाप है शायद रवॉं
साकी-ए-सुब्हे-तरब[7], नग्म-ब लब[8], सागर-ब-कफ[9]

वह पहुँच जाये तो होगी फिर से बरपा अजुमन
और तरतीबे-मुकाम-ओ-मनसब-ओ-जाह-ओ शरफ[10]

---

१ बादल का बालक २ आकाश ३ कोठरियो ४ लक्ष्य, निशाने ५ जीवन उत्साह ६ बदी का खुदा ७ उल्लास के प्रभात का साकी ८ होंटो पर गीत लिये ९ हाथ मे सुरा पात्र लिये १० स्थान, पदवी, रुतबे और श्रेय का क्रम ।

न गँवाओ नावके-नीमकश[1], दिले-रेज-रेज गँवा दिया
जो बचे है सग समेट लो, तने दाग-दाग लुटा दिया

मिरे चार गरो को नवेद[2] हो, सफे-दुश्मनाँ को ख़बर करो
जो वह कज रखते थे जान पर वह हिसाब आज चुका दिया

करो कज जबी पे सरे-कफन, मिरे कातिलो को गुमाँ न हो
कि गुरूरे-इ'श्क का बाकपन पसे-मग[3] हमने भुला दिया

उधर एक हफ कि कुश्तनी[4], यहाँ लाख उ'ज्र[5] था गुफ्तनी[6]
जो कहा तो सुनके उडा दिया जो लिखा तो पढके मिटा दिया

जो रुके तो कोहे-गराँ[7] थे हम, जो चल तो जाँ से गुजर गये
रहे-यार हमने कदम-कदम तुझे यादगार बना दिया

---

१ आधा छिपा हुआ तीर २ मुबारकबादी ३ मरने के बाद ४ मार देने वाला ५ विवशता ६ कहने योग्य ७ बहुत बड़ा पहाड़।

खुशा जमानते-गम

दयारे-यार तिरी जोशिशे-जुनूँ पे सलाम
मिरे वतन तिरे दामाने-तार-तार की खर
रहे-यकी[1] तिरी अफशाने-खाक-ओ खू पे सलाम
मिरे चमन तिरे जख्मो के लाल जार की खैर
हर एक खान-ए-वीराँ[2] की तीरगी पे सलाम
हर एक खाक-ब-सर,[3] खानमाँ-खराब[4] की खैर
हर एक कुश्त-ए-नाहक[5] की खामशी पे सलाम
हर एक दीद-ए-पुरनम की आब-ओ ताब की खैर
रवाँ रहे यह रवायत, खुशा[6] जमानते-गम
निशाते-खत्मे-गमे-कायनात[7] से पहले
हर एक के साथ रहे दौलते-अमानते-गम
कोई नजात न पाये नजात से पहले
सुकू मिले न कभी तेरे पाफिगारो[8] को
जमाले-खूने सरे-खार को नजर न लगे
अमाँ मिले न कही तेरे जानिसारो को
जलाले-फर्के-सरे-दार[9] को नजर न लगे

लदन, १६६२

---

१ आस्था का माग २ उजडा घर ३ जिसके सर म धूल हो ४ जिसका घर उजड चुका हो ५ अन्याय का मारा हुआ ६ धन्य है ७ ससार के दुख के अत का उल्लास ८ घायल पैरो वाले ९ फाँसी के माथ का तेज।

जब तेरी समदर आँखो मे

(गीत)

यह धूप किनारा, शाम ढले
मिलते हैं दोनो वक्त जहाँ

जो रात न दिन, जो आज न कल
पल भर को अमर, पल भर मे धुआँ
इस धूप किनारे, पल दो पल
होटो की लपक
बाहो की छनक
यह मेल हमारा, झूठ न सच
क्यो रार करो, क्यो दोष धरो
किस कारन झूठी बात करो
जब तेरी समदर आखो मे
इस शाम का सूरज डूबेगा
सुख सोयेंगे घर-दर वाले
और राही अपनी राह लेगा

लदन से, १९६३

रग है दिल का मिरे

तुम न आये थे तो हर चीज वही थी कि जो है,
आसमा हद्दे-नजर, राहगुजर राहगुजर, शीश -ए-मय शीश -ए-मय
और अब शीश -ए-मय, राहगुजर, र गे-फलक
रग है दिल का मिरे "खूने-जिगर होने तक"
चपई रग कभी राहते-दीदार[1] का रग
सुमई रग कि है साअ'ते-बेजार का रग
जद पत्तो का, खस-ओ-खार का रग
सुख फूलो का, दहक्ते हुए गुलजार का रग,
जह्र का रग, लहू का रग, शबे-तार[2] का रग,
आसमा, राहगुजर, शीश -ए-मय
कोई भीगा हुआ दामन, कोई दुखती हुई रग
कोई हर लहजा बदलता हुआ आईना है

अब जो आये हो तो ठहरो कि कोई र ग, कोई रुत, कोई शै
एक जगह पर ठहरे
फिर से इक बार हर इक चीज वही हो कि जो है
आसमाँ हद्दे-नजर, राहगुजर राहगुजर, शीश -ए-मय शीश -ए-मय

मास्को
अगस्त १९६३

---

१ दर्शन का सुख २ काली रात ।

पास रहो

तुम मिरे पास रहो,
मेरे कातिल, मिरे दिलदार, मिरे पास रहो,
जिस घडी रात चले,
आसमानो का लहू पी के सियह रात चले,
मरहमे मुश्क[1] लिये नश्तरे-अल्मास[2] लिये,
बैन करती हुई, हँसती हुई, गाती निकले
दर्द के कासनी पाजेब बजाती निकले
जिस घडी सीनो मे डूबे हुए दिल
आस्तीनो मे निहाँ[3] हाथो की रह तकने लगें,
आस लिये,
और बच्चो के बिलखने की तरह कुलकुले मय[4]
बहरे-नासूदगी[5] मचले तो मनाये न मने
जब कोई बात बनाये न बने
जब न कोई बात चले,
जिस घडी रात चले,
जिस घडी मातमी, सुनसान, सियह रात चले
पास रहो
मेरे कातिल, मिरे दिलदार, मिरे पास रहो

मास्को
१९६३

---

१ सुगंध का मरहम २ हीरे का नश्तर (फोडा चीरने का चाकू) ३ छु
हुआ ४ शराब ढलने का कलकल स्वर ५ निराशा के कारण।

गजल

तिरी उम्मीद, तिरा इतजार जब से है
न शब को दिन से शिकायत, न दिन को शब से है

किसी का दद हो करते है तेरे नाम रकम
गिल है जो भी किमी से तिरे सबब से है

हुआ है जब से दिले-नासुबूर बे काबू
कलाम तुझसे नजर को बडे अदब से है

अगर शरर[1] है तो भडके, जो फूल है तो खिले
तरह-तरह की तलब, तेरे रगे-लब से है

कहाँ गये शबे-फुरकत[2] के जागने वाले
सितार-ए-सहरी[3] हमकलाम कब से है

बबई
१९५७

१ चिंगारी २ विरह की रात ३ सुबह का सितारा।

गजल

हर सिम्त परीशाँ[1] तिरी आमद के करीने
धोखे दिये क्या-क्या हमे बादे-सहरी[2] ने

हर मजिले-गुरबत[3] पे गुमाँ होता है घर का
बहलाया है हर गाम बहुत दर-ब-दरी ने

थे बज्म मे सब दूदे-सरे-बज्म[4] से शादाँ
बेकार जलाया हमे रोशननजरी ने

मयखाने मे आ'जिज आजुर्द दिली[5] से
मस्जिद का न रखा आशुफ्त सरी[6] ने

यह जाम-ए सदचाक[7] बदल लेने मे क्या था
मुहलत ही न दी 'फैज' कभी बखियगरी ने

लदन
१९६२

---

१ बिखरे हुए २ सुबह की हवा ३ परदेस की मजिल ४ महफिल प[र]
छाया हुआ धुआँ ५ दिल का दुखी होना ६ सिरफिरापन ७ सौ जगह [से]
फटा हुआ कपडा ।

ग़ज़ल

शरहे-फिराक[१], मदहे-लबे-मुश्कबू[२] करें
गुरबतकदे[३] मे किसने तिरी गुफ्तगू करें

यार-आशना[४] नही कोई टकराये किससे जाम
किस दिलरुबा के नाम पे खाली सुबू[५] करें

सीने पे हाथ है, न नजर को तलाशे-बाम
दिल साथ दे तो आज गमे आरजू करें

कब तक सुनेगी रात, कहाँ तक सुनायें हम
शिक्वे गिले सब आज तिरे रू-ब-रू करें

हमदम, हदीसे कू ए-मलामत[६] सुनाइयो
दिल को लहू करें कि गरेबाँ रफू करें

आशुफ्त सर[७] हैं, मुहतसिबो,[८] मुह न आइयो
सर बेच दें तो फिक्रे-दिल-ओ-जाँ अ'दू[९] करें

"तरदामनी[१०] पे शेख, हमारी न जाइयो
दामन निचोड दें तो फरिश्ते वजू करें"

---

१ विरह की व्याख्या २ सुगंधित होठो की प्रशंसा ३ परदेस ४ यार से परिचित ५ सुरा पात्र ६ निंदा की गली की चर्चा ७ सिरफिरे ८ प्रतिबंध लगाने वालो ९ दुश्मन १० दामन का भीगा होना (गुनहगार होने का चिह्न)।

मंजर

रहगुज़र, साये, शजर[1], मंज़िल-ओ-दर, हल्क़-ए-बाम
बाम पर सीन-ए-महताब[2] खुला, आहिस्त
जिस तरह खोले कोई बंदे-क़बा, आहिस्त
हल्क़-ए-बाम तले, सायों का ठहरा हुआ नील
नील की झील,
झील में चुपके से तैरा, किसी पत्ते का हुबाब
एक पल तैरा, चला, फूट गया, आहिस्त
बहुत आहिस्त, बहुत हल्का, खुनुक[3] रंगे शराब
मेरे शीशे में ढला, आहिस्त
शीश-ओ-जाम, सुराही, तेरे हाथों के गुलाब
जिस तरह दूर किसी ख्वाब का नक्श
आप ही आप बना, और मिटा, आहिस्त

दिल ने दुहराया कोई हर्फ़े वफ़ा, आहिस्त
तुमने कहा, "आहिस्त!"
चाँद ने झुक के कहा
"और ज़रा आहिस्त!"

मास्को
१९६४

१ पेड़ २ चाँद का सीना ३ शीतल।

६

नई नज्मे और गज़ले

ग़ज़ल

अब बज़्मे - सुख़न सुह्बते - सोख़्तगाँ[1] है
अब हल्क़-ए-मय[2] तायफ़-ए-बेतलबाँ[3] है

हम सहल तलब कौनसे फ़रहाद थे, लेकिन
अब शह्र मे तेरे कोई हम सा भी कहाँ है

घर रहिये तो वीरानी-ए-दिल खाने को आवे
रह चलिये तो हर गाम पे गोगा-ए-सगाँ[4] है

है साहबे-इंसाफ़, ख़ुद इंसाफ़ का तालिब
मुहर उसकी है, मीज़ान[5] ब-दस्ते-दिगराँ[6] है

अरबाबे-जुनूं[7] यक-ब-दिगर[8] दस्त-ओ-गरेबाँ[9]
और जैशे-हवस[10] दूर से नज़्ज़ारकुनाँ है

---

१ जले हुओ का साथ २ मदिरा का क्षेत्र ३ उन लोगा की मडली जिन्हे कुछ नही चाहिए ४ कुत्तो का शोर ५ तराजू ६ दूसरो के हाथ मे ७ उन्माद वाले ८ एक दूसरे से ९ गरेबाँ मे हाथ डाले हुए, लडते हुए १० कामनाओ की फौज।

कतआ

दीवारे-शब और अक्से-रुखे-यार सामने
फिर दिल के आईने से लहू फूटने लगा
फिर वज़ए एहतियात[1] से धुंधला गई नज़र
फिर ज़ब्ते आरज़ू[2] से बदन टूटने लगा

१ सावधानी २ [illegible] का दमन।

ग़ज़ल

किये आरज़ू से पैमां[1], जो मआल[2] तक न पहुँचे
शब-ओ-रोज़े-आशनाई, मह-ओ-साल तक न पहुँचे

वह नज़र बहम न पहुँची कि मुहीते हुस्न[3] करते
तिरी दीद के वसीले ख़द्-ओ-ख़ाल तक न पहुँचे

वही चश्म-ए-बक़ा[4] था, जिसे सब सराब[5] समझे
वही ख़्वाब मो'तबर[6] थे, जो ख़याल तक न पहुँचे

तिरा लुत्फ़[1] वज्हे-तस्कीं[7], न करारे-शरहे-ग़म[8] से
कि है दिल में वह गिले भी, जो मलाल तक न पहुँचे

कोई यार जाँ से गुज़रा, कोई होश से न गुज़रा
ये नदीमे-यक-दो-सागर[9], मिरे हाल तक न पहुँचे

'फ़ैज़' दिल जलायें, करें फिर से अर्ज़े-जानां[10]
...तक आये, पे सवाल तक न पहुँचे

...म बाँधना ४ जीवन धारा
पीड़ा की व्याख्या ६ एक-

क़तआ

दीवारे-शब और अक्से-रुख़े-यार सामने
फिर दिल के आईने से लहू फूटने लगा
फिर वज़ए-एहतियात[1] से धुंधला गई नज़र
फिर ज़ब्ते-आरज़ू[2] से बदन टूटने लगा

[illegible]

गज़ल

किये आरज़ू से पैमां[१], जो मआल[२] तक न पहुँचे
शब-ओ-रोज़े-आशनाई, मह्-ओ-साल तक न पहुँचे

वह नज़र बहम न पहुँची कि मुहीते-हुस्न[३] करते
तिरी दीद के वसीले ख़द्-ओ ख़ाल तक न पहुँचे

वही चश्म-ए-बक़ा[४] था, जिसे सब सराब[५] समझे
वही ख़्वाब मो'तबर[६] थे, जो ख़याल तक न पहुँचे

तिरा लुत्फ़[६] वज्हे-तस्की[७], न क़रारे शरहे ग़म[८] से
कि हैं दिल मे वह गिले भी, जो मलाल तक न पहुँचे

कोई यार जाँ से गुज़रा, कोई होश से न गुज़रा
ये नदीमे-यक-दो-सागर[९], मिरे हाल तक न पहुँचे

चलो 'फ़ैज़' दिल जलायें, करे फिर से अर्ज़े-जानाँ[१०]
वह सुख़न जो लब तक आये, पे सवाल तक न पहुँचे

---

१ प्रण २ परिणाम ३ रूप के घेरे म बाधना ४ जीवन धारा ५ मृगतृष्णा ६ कृपा ७ सात्वना का कारण ८ पीडा की व्याख्या ९ एक-दो जाम पीने वाले १० प्रेमिका स कहना।

दीद -ए-बीना

फिर वर्क[1] फरोजाँ[2] है, सरे-वादी-ए-सीना[3]
फिर रग पे है शो'ल -ए-रुखसारे-हकीकत[4]
पैगामे - अजल,[5] दावते - दीदारे - हकीकत[6]
ऐ दीद -ए-बीना[7]
अब वक्त है दीदार का, दम है कि नही है
ऐ जज्ब -ए-दिल, दिल का भरम है कि नही है
अब कातिले-जाँ चार -गरे-कुल्फते-गम[8] है
गुलजारे-इरम,[9] परतवे-सहरा-ए-अ'दम[10] है
पिदारे - जुनूँ,[11] हौसल - ए - राहे-अ'दम[12]
है कि नही है

(२)

फिर वर्क फरोजाँ है सरे-वादी ए-सीना
ऐ दीद -ए-बीना
फिर दिल को मुसफ्फा[13] करो, इस लौह पे शायद
मावैने-मन-ओ-तू,[14] नया पैमाँ कोई उतरे
अब रस्मे-सितम, हिक्मते-खासाने-जमी[15] है
ताईदे-सितम,[16] मसलहते-मुफ्ती-ए-दी[17] है
अब सदियो के इकरारे-इताअ'त[18] को बदलने
लाजिम है कि इकार का फरमाँ कोई उतरे

---

१ बिजली २ चमकती हुई ३ सीना की घाटी मे, जहाँ हजरत मूसा को तूर का जल्वा हुआ था ४ सत्य के गाल की लपट ५ मौत का सदेश ६ सत्य के दशन का निमत्रण ७ देखने वाली आँख ८ दुख की पीडा का इलाज करने वाला ९ स्वग के उद्यान की नकल पर बनाया हुआ शद्दाद का बाग १० स्वग के उद्यान की परछाइ ११ उन्माद का अभिमान १२ स्वग लोक तक पहुचन का हौसला १३ साफ १४ मेरे-तेरे बीच १५ पृथ्वी के खास लोगा की तरकीब १६ अन्याय का समथन १७ धम-गुरु की व्यवहार कुशलता १८ उपासना का वचन ।

सुनो कि शायद यह नूरे सैकल
है इस सहीफे[20] का हर्फे-अव्वल
जो हरकस - ओ - नाकसे - ज़मी पर
दिले - गदायाने - अजमई[21] पर
उतर रहा है फलक से अबके
सुनो कि इस हर्फ़े-लम-यज़ल[22] के
हमी तुम्ही बदगाने - बेकस
अलीम[23] भी हैं, ख़बीर[24] भी हैं
सुनो कि हम बेज़ुबान-ओ-बेकस
बशीर[25] भी हैं, नज़ीर[26] भी हैं

हर इक अलिल-अम्र[27] को सदा दो
कि अपनी फ़र्दे-अ'मल[28] सँभाले
उठेगा जब जम्मे - सरफरोशां[29]
पड़ेंगे दार - ओ - रसन के लाले
कोई न होगा कि जो बचा ले
जज़ा, सज़ा, सब यही पे होगी
यही अ'ज़ाब - ओ - सवाब होगा
यही से उट्ठेगा शोरे - महशर
यही पे रोज़े - हिसाब होगा

---

१९ तेज रोशनी २० धम-ग्रन्थ २१ तमाम फकीरो का दिल २२ सृष्टि का आदि स्वर २३ सब कुछ जानने वाला २४ खबर रखने वाला २५ शुभ सदेश लाने वाला २६ डराने वाला ईश्वर का एक नाम २७ हाकिम २८ कर्मों की सूची २९ सर की बाजी लगाने वालो का समूह।

सोचने दो

इक ज़रा सोचने दो
इस खियावाँ मे जो इस लहज़[1] वियावाँ[2] भी नही
कौन सी शाख मे फूल आये थे सब से पहले
कौन बेरग हुई दर्द-ओ-ता'ब[3] से पहले
और अब से पहले
किस घडी कौन से मौसम मे यहाँ
खून मे कह्त पडा
गुल की शह्-रग पे कडा
वक्त पडा
सोचने दो

इक ज़रा सोचने दो
यह भरा शह्र, जो वादी-ए-वीराँ भी नही
इसमे किस वक्त, कहाँ
आग लगी थी
इसके सफबस्त[4] दरीचो मे से किसमे अव्वल
ज़ह् हुई[5] सुख शुआ'ओ[6] की कमाँ
सोचने दो

हमसे उस देस का तुम नाम-ओ-निशाँ पूछते हो
जिसकी तारीख न जुगराफिया अब याद आये
और याद आये तो महबूबे-गुज़श्त की तरह

रू-ब-रू आने से जी घबराये
हाँ, मगर जैसे कोई
ऐसे महबूब का दिल रखने को

---

१ क्षण २ जगल, निजन ३ पीडा और कप्ट ४ पक्तिबद्ध ५ झुकी
६ किरना।

आ निकलता है कभी रात बिताने के लिए
हम अब इस उम्र को आ पहुँचे है जब हम भी यूँ ही
दिल से मिल आते है बस रस्म निभाने के लिए
दिल की क्या पूछते हो
सोचने दो

रुख़सत

दर्द इतना था कि उस रात दिले-वहशी ने
हर रगे-जाँ से उलझना चाहा
हर बुने-मू[1] से टपकना चाहा
और कहीं दूर, तिरे सहने-चमन[2] में गोया
पत्ता पत्ता मिरे अफ़सुर्दा[3] लहू में धुलकर
हुस्ने-महताब से आज़ुर्दा[4] नज़र आने लगा
मेरी वीरान-ए-तन[5] में गोया
सारे दुखते हुए रेशों की तनाबें खुलकर
सिलसिलावार पता देने लगीं
रुख़सते-काफ़िल-ए-शौक[6] की तैयारी का
और जब याद की बुझती हुई शम्ओं में नज़र आया कहीं
एक पल आख़िरी लम्हा तेरी दिलदारी का
दर्द इतना था कि उससे भी गुज़रना चाहा
हमने चाहा भी मगर दिल न ठहरना चाहा

---

१ रोम रोम २ उद्यान ३ उदास ४ उदासीन ५ शरीर का निज
६ शौक के काफ़िले की विदाई।

इनकलाबे-रूस

मुर्गे-बिस्मिल[1] के मानिंद शब तिलमिलाई
उफक-ता-उफक[2]
सुब्हे-महशर[3] की पहली किरन जगमगाई
तो तारीक आँखो से बोसीद[4] पर्दे हटाये गये
दिल जलाये गये
तबक-दर-तबक[5]
आसमानो के दर
यू खुल हफ्त अफलाक[6], आईन-सा हो गये
शर्क-ता-गर्ब[7] सब कैदखानो के दर
आज वा हो गये
कस्रे-जम्हूर[8] की तरहे-नौ[9] के लिए आज नक्शे-कुहन[10]
सब मिटाये गये
सीन-ए-वक्त से सारे खूनी कफन
आज के दिन सलामत उठाये गये
आज पा-ए-गुलामाँ मे जंजीरे-पा
ऐसे छनकी कि बाँगे-दिरा[11] बन गई
दस्ते-मज़लूम मे हथकडी की कडी
ऐसे चमकी कि तेगे-क़ज़ा[12] बन गई

मास्को ५ नवबर, १९६७
(रूसी क्रांति की ५०वीं वर्षगाँठ)

---

१ घायल पक्षी २ क्षितिज से क्षितिज तक ३ प्रलय की सुबह ४ फटे-पुराने ५ हर स्तर पर ६ सात आकाश ७ पूरब से पश्चिम तक ८ लोकतंत्र का महल ९ नयी व्यवस्था १० पुराने निशान ११ घंटे की आवाज १२ प्रलय की तलवार

गजल

कब तक दिल की खैर मनाये, कब तक राह दिखलाओगे
कब तक चैन की मुहलत दोगे, कब तक याद न आओगे

बीता दीद-उमीद का मौसम, खाक उडती है आँखो मे
कब भेजोगे दर्द का बादल, कब बरखा बरसाओगे

अ'ह्दे-वफा या तर्के-मुहब्बत, जो चाहो सो आप करो
अपने बस की बात ही क्या है, हमसे क्या मनवाओगे

किसने वस्ल[1] का सूरज देखा, किस पर हिज्र[2] की रात ढली
गेसुओवाले कौन थे क्या थे, इनको क्या जतलाओगे

'फैज' दिलो के भाग मे है घर भरना भी, लुट जाना भी
तुम इस हुस्न के लुत्फ-ओ-करम पर कितने दिन इतराओगे

१ मिलन, प्रणय २ विरह।

ग़ज़ल

चाँद निक्ले किसी जानिब तेरी ज़ेबाई[1] का
रग बदले किसी सूरत शबे-तनहाई का

दौलते-लब[2] से फिर ऐ खुसर बे-शीरीदहनाँ[3]
आज अरज़ाँ[4] हो कोई हर्फ़ शनासाई[5] का

गर्मी-ए-इश्क से हर अजुमने-गुलबदनाँ[6]
तज्किरा छेडे तिरी पैरहन-आराई[7] का

सह्ने-गुलशन मे कभी ऐ शहे-शमशादकदा[8]
फिर नज़र आये सलीक तिरी रा'नाई[9] का

एक बार और मसीहा ए-दिले दिलज़दगाँ[10]
कोई वा'द, कोई इकरार मसीहाई का

दीद-ओ-दिल को सँभालो कि सरे-शामे-फिराक
साज़-ओ-सामान बहम पहुँचा है रुस्वाई[11] का

---

१ सुदरता २ होंटो की दौलत ३ मीठे मुह (बोली) वालो के खुसरो (सरताज) ४ सस्ता ५ परिचय ६ फूल जैसे शरीरवालो की महफ़िल ७ वस्त्रो की सजावट ८ शमशाद के पेड जैस कदवालो का सरताज ९ लालित्य, सुदरता १० पीडित हृदयो के दिल का इलाज करने वाला ११ बदनामी।

आज के नाम

और आज के गम के नाम

क्लर्कों की अफसुर्दा जानो के नाम
किरमखुर्दा[1] दिलो और ज़बानो के नाम
पोस्टमैनो के नाम
तांगेवालो के नाम
रेलबानो के नाम
कारखानो के भूखे जियालो के नाम
बादशाहे-जहाँ, वाली-ए-मासिवा[2], नायबे-अल्लहे-
फिलअरज[3] दहकाँ[4] के नाम
जिसके ढोरो को जालिम हँका ले गये है
जिसकी बेटी को डाकू उठा ले गये हैं
हाथ भर खेत से एक अंगुश्त[5] पटवार ने काट ली है
दूसरी मालिये के बहाने से सरकार ने काट ली है
जिसकी पग[6] ज़ोरवालो के पाँवो तले
धज्जियाँ हो गयी है

उन दुखी माँओ के नाम
रात मे जिनके बच्चे बिलकते हैं और
नीद की मार खाते हुए हाथो से सँभलते नही
मिन्नतो ज़ारियो[7] से बहलते नही

उन हसीनाओ के नाम
जिनकी आँखो के गुल
चिलमनो और दरीचो की बेला पे बेकार खिल खिल के

---

१ कीडे का खाया हुआ २ सर्वोच्च स्वामी ३ इस धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि ४ किसान ५ उँगली ६ पगडी ७ रोना।

मुरझा गये है

उन ब्याहताओ के नाम
जिनके बदन बे-मुहब्बत रियाकार[8] सेजो पे सज-सजके
उकता गये है

बेवाओ के नाम
कटरियो और गलियो मुहल्लो के नाम
जिनकी नापाक ख़ाशाक[9] से चाँद रातो
को आ-आके करता है अकसर वज़ू[10]
जिनकी सायो मे करती है आह-ओ-बुका[11]
आँचलो की हिना
चूडियो की खनक
काकुलो की महक
आरज़ूमद सीनो की अपने पसीने मे जलने की बू
तालिब इल्मो के नाम
वह जो असहाबे-तब्ल-ओ अलम[12]
के दरो पर किताब और कलम
का तकाज़ा लिये, हाथ फैलाये
पहुँचे मगर लौटकर घर न आये
वो मा'सूम जो भोलपन मे
वहाँ अपने नन्हे चरागो मे लौ की लगन
ले के पहुँचे, जहा
बट रहे थे घटाटोप, बे-अत रातो के साये

---

८ मक्कारी भरी ९ मिट्टी, कूड़ा-करकट १० नमाज़ से पहले हाथ पैर धोना ११ रोना धोना १२ दुंदुभी और पताका के मालिक।

उन असीरो[13] के नाम
जिनके सीनो मे फर्दा[14] के शब-ताब[15] गौहर
जेलखानो की शोरीद रातो की सरसर[16] मे
जल जलके अंजुम-नुमा[17] हो गये है

आनेवाले दिनो के सफीरो[18] के नाम
वह जो खुशबू ए-गुल की तरह
अपने पगाम पर खुद फिदा हो गये हैं

---

१३ बदियों १४ भविष्य १५ रात की चमक वाले १६ गम ह्व
१७ सितारो जैसे १८ सदेशवाहकों दूतो।

यतीम लहू

कहीं नहीं है, कहीं भी नहीं लहू का सुराग
न दस्त-ओ-नाख़ुने-क़ातिल[1] न अस्ती पे निशाँ
न सुर्ख़ी-ए-लबे-ख़ंजर,[2] न रगे-नोके-सनाँ[3]
न ख़ाक पर कोई धब्बा न बाम पर कोई दाग़
कहीं नहीं है, कहीं भी नहीं लहू का सुराग
न सर्फ़े-ख़िदमते-शाहाँ[4] कि ख़ूँबहा[5] देते
न दीं[6] की नज्र कि बया'न-ए-जज़ा[7] देते
न रज़्मगाह[8] मे बरसा कि मो'तबर होता
किसी अ'लम[9] पे रक़म होके मुश्तहर[10] होता
पुकारता रहा बे-आसरा यतीम लहू
किसी के पास समाअ'त[11] का वक़्त था न दिमाग़
न मुद्दई, न शहादत, हिसाब पाक हुआ
यह ख़ूने-ख़ाकनशीनाँ[12] था रिज़्क़े-ख़ाक[13] हुआ
कहीं नहीं है, कहीं भी नहीं लहू का सुराग़

अप्रल १९६५

---

१ हत्यारे का हाथ और नाख़ून २ ख़ंजर की नोक की लाली ३ तलवार की नोक का रंग ४ राजाओं की सेवा में व्यय होने वाला ५ ख़ून की क़ीमत ६ धर्म ७ पुण्यफल के लिए पेशगी भुगतान ८ रणक्षेत्र ९ पताका १० वर्चित ११ सुनवाई १२ मिट्टी में बैठनेवालों का ख़ून १३ मिट्टी की ख़ुराक ।

ऐ वतन, ऐ वतन

तेरे पैगाम पर ऐ वतन, ऐ वतन,
आ गये हम फिदा हो तिरे नाम पर
तेरे पैगाम पर ऐ वतन, ऐ वतन,
नज्र क्या दें कि हम मालवाले नही
आनवाले है इकबालवाले नही
हा, यह जाँ है कि सुख जिसने देखा नही
या यह तन कि जिस पे कपडे का टुकडा नही
अपनी दौलत यही, अपना धन है यही
अपना जो कुछ भी है, ऐ वतन, है यही
वार देगे यह सब कुछ तिरे नाम पर
तेरी ललकार पर, तेरे पैगाम पर
तेरे पैगाम पर, ऐ वतन, ऐ वतन,
हम लुटा देंगे जानें तिरे नाम पर
तेरे गद्दार गैरत से मुंह मोडकर
आज फिर ऐरों-गैरो से सर जोडकर
तेरी इज्जत का भाव लगाने चले
तेरी अस्मत का सौदा चुकाने चले
दम मे दम है तो यह करने देगे न हम
चाल उनकी कोई चलने न देंगे हम
तुझको बिकने न देंगे किसी दाम पर
हम लुटा देंगे जानें तिरे नाम पर
सर कटा देंगे हम तेरे पैगाम पर
तेरे पैगाम पर ऐ वतन, ऐ वतन!

कास -ए-सर लेके चलो

दीद -ए-तर[1] पे वहा कौन नजर करता है
शीश ए-चश्म[2] मे खू-नावे-जिगर[3] लेके चलो
अब अगर जाओ पये अर्ज-ओ-तलब[4] उनके हुजूर[5]
दस्त ओ कशकोल[6] नही कास -ए-सर[7] लेके चलो

१ आँसू भरी आँख २ आँख का प्याला ३ जिगर का खून ४ विनती करने और माँगने के लिए ५ सामने ६ हाथ और भीख का प्याला ७ सर का भीख का प्याला।

सरे-आगाज़

शायद कभी अफ़शा[1] हो निगाहो पे तुम्हारी
हर साद वरक जो सुख़ने कुश्त[2] से ख़ू[3] है
शायद कभी उस गीत का परचम हो सर अफ़राज़[4]
जो आमदे-सरसर[5] की तमन्ना मे निगू[6] है
शायद कभी उस दिल की कोई रग तुम्हे चुभ जाये
जो संगे-सरे-राह[7] की मानिंद ज़ुबू[8] है

१ खुलना २ आहत वाणी ३ रंगीन ४ फहराना ५ गम हवा आना ६ झुका हुआ ७ रास्ते का पत्थर ८ दलित।

दुआ[1]

आइये, हाथ उठायें हम भी
हम जिन्हे रस्मे-दुआ याद नही
हम जिन्हे सोजे-मुहब्बत[1] के सिवा
कोई बुत कोई खुदा याद नही
आइये, अर्ज़ गुज़ारें कि निगारे-हस्ती[2]
जह्रे-इमरोज[3] मे शीरीनी-ए-फर्दा[4] भर दे
वह जिन्हे ताबे-गराबारी-ए-अय्याम[5] नही
उनकी पलको पे शब-ओ-रोज को हल्का कर दे
जिनकी आँखो को रुखे-सुब्ह[6] का यारा[7] भी नही
उनकी रातो मे कोई शम्अ मुनव्वर[8] कर दे
जिनके कदमो को किसी राह का सहारा भी नही
उनकी नज़रो पे कोई राह उजागर कर दे
जिनका दी[9] पैरवी-ए-कज्ब-ओ रिया[10] है उनको
हिम्मते कुफ्र[11] मिले, जुरअते-तहकीक[12] मिले
जिनके सर मुंतजिरे-तेगे-जफा[13] है उनको
दस्ते-कातिल को झटक देने की तौफीक[14] मिले
इ'श्क का तीर निहाँ,[15] जान तपा[16] है जिससे
आज इकरार करें और तपिश मिट जाये
हर्फे हक[17] दिल मे खटकता है जो काँटे की तरह
आज इजहार करें और खलिश मिट जाये

---

१ प्रेम की ज्वाला २ जीवन का सौंदर्य ३ वर्तमान का विष ४ भविष्य की मिठास ५ जीवन का बोझ उठाने की शक्ति ६ प्रभात का मुखड़ा ७ सहन शक्ति ८ प्रकाशमान ६ धर्म १० झूठ और मक्कारी का प्रदर्शन ११ धर्मद्रोह का साहस १२ जिज्ञासा का साहस १३ अत्याचार की तलवार की प्रतीक्षा मे १४ सामर्थ्य १५ गुप्त, छुपा १६ तड़पती हुई १७ सत्य वचन

कतअ'

इन दिनों रस्म-ओ रहे-शह्‌रे-निगारां[1] क्या है
कासिदा, कीमते - गुलगश्ते - बहारां[2] क्या है
कू-ए-जानां[3] है, कि मकतल[4] है, कि मयखाना है
आजकल सूरते - बर्बादी - ए - यारां क्या है

• •

१ रूपनगर की रस्म २ बहार की सैर की कीमत ३ प्रेमिका की गली ४ कत्ल होने की जगह।